प्रार्थना
एवं
वैराग्य वाणी

संगत समतावाद

प्रार्थना
एवं
वैराग्य वाणी

(ग्रंथ 'श्री समता प्रकाश' से संकलित)

प्रचार प्रसार एवं प्रकाशन विभाग

संगत समतावाद (पंजी०)

सत्पुरुष श्री मंगतराम जी महाराज

सर्वाधिकार सुरक्षित

© संगत समतावाद (पंजी०)

प्रथम संस्करण - अक्तूबर, 1993 - 1100
द्वितीय संस्करण - मई, 2001 - 1100
ततृीय संस्करण - जुलाई, 2007 - 1100

प्राप्ति स्थान :

(1) समता योग आश्रम
छछरौली रोड
जगाधारी-135003

(2) समता योग आश्रम
अंसल पालम विहार फार्म नं० 45
गाँव-सलाहपुर
हूडा गुड़गाँव सेक्टर-21 के सामने
नई दिल्ली-110061

मुद्रक :
राजेश प्रिंटिंग प्रैस
7321-22, आराम नगर,
पहाड़ गंज, कुतुब रोड,
नई दिल्ली-110055

प्रस्तावना

यह 'प्रार्थना एवं वैराग्य वाणी' ग्रंथ श्री समता प्रकाश से संकलित की गई है जिसमें श्री सद्‌गुरुदेव मंगत राम जी महाराज के मुख-वाक्यामृत संगृहीत हैं।

प्रभु महिमा तथा संसार की नश्वरता का निरंतर चिंतन मनुष्य के सांसारिक मोह बंधन को काटने में अत्याधिक सहायक होता है। यह वाणी इस चिंतन के लिए बहुत उपयोगी है। ग्रंथ श्री समता प्रकाश में यद्यपि यह वाणी उपलब्ध है परंतु पूरे ग्रंथ में ईश्वर महिमा तथा वैराग्य वाणी फैली होने के कारण जिज्ञासुओं को वाणी छांटने में काफी असुविधा होती है तथा अधिकतर जिज्ञासु प्रभु महिमा तथा वैराग्य वाणी के गायन में विशेष रुचि लेते हैं और इसको कंठस्थ अथवा याद भी करना चाहते हैं, इसी हेतु इस वाणी को विशेष रुप से निम्नलिखित विषय-सूची अनुसार संकलित करके इस पुस्तक के रुप में प्रकाशित किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए हिन्दी ग्रन्थ 'श्री समता प्रकाश' (पंचम संस्करण) की तुलनात्मक शब्द संख्या प्रत्येक दोहे के ऊपर ब्रैंकेट (कोष्ठक) में दी गई है।

इस अगम वाणी में जगह-जगह पर पंजाबी, फारसी तथा अन्य भाषाओं के ऐसे शब्द प्रयोग में आए हैं जिनको आजकल की हिन्दी भाषा का ज्ञान रखने वाले प्रेमी नहीं समझ पाते इसलिए उनकी सुविधा हेतु अंत में शब्दार्थ भी प्रकाशित किए गए हैं। सम्पूर्ण ग्रंथ श्री समता प्रकाश में जितने भी ऐसे कठिन शब्द प्रयोग किए गए हैं उनके सबके शब्दार्थ इस पुस्तक में उपलब्ध हैं ताकि ऐसे जिज्ञासु जो पूर्ण ग्रंथ के अध्ययन में रुचि रखते हैं वह भी इन शब्दार्थ का उपयोग सम्पूर्ण वाणी को समझने के लिए कर सकें।

जो भी व्यक्ति इस वाणी का गायन, अध्ययन तथा मनन एकाग्रचित होकर करेगा उनके हृदय में प्रभु प्रेम उत्पन्न करने में यह वाणी विशेष रूप से सहायक सिद्ध होगी।

संगत समतावाद

विषय सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
1	महामंत्र की महिमा	1
2	मंगलाचरण	3
3	ईश्वर महिमा एवं प्रार्थना	4
4	चेतावनी वाणी	49
5	वैराग्य वाणी	68
6	आरती एवं समता मंगल	114
7	इस संकलन के बारे में चेतावनी	116
8	शब्दार्थ	I से XII

सब संगत यह बूझयो,
करनी जग परवान ।
जैसी–जैसी जो करे,
'मंगत' फल पहचान ।।

महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यं
निरंकार अजन्मा अद्वैत पुरखा
सर्वव्यापक कल्याणमूरत परमेश्वराय नमस्तं

महमा - महामन्त्र

त्रियोदस अक्षर मंत्र ये, सरब सिद्धी दातार।
जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाये अपार।।

जनम जनम जाये भरमना, प्रभ चरन पाये विशवास।
मोह माया संकट मिटे, सब कारज होवें रास।।

महमा सत सरूप की, सब अक्षर पहचान।
चार वेद और सिमरती, सब का सार निधान।।

परम शकत परकाश अत धारे, कोट पिण्ड ब्रह्मण्ड।
सरब न्यारा आप रहे, तत्त नाद रूप अखण्ड।।

रिखी मुनी और देवते, गायें गुरु अवतार।
महमा अबगत रूप की, पल पल करें विचार।।

ज्ञानी कथा विचारते, जुग जुग पूरन सार।
ओड़क निरना पाया, सरब रूप 'ओंकार'।।

कथा विचारें वेदान्ती, देवें अनक भाँत परमान।
'ब्रह्म सत्यम्' तत्त रूप का, निरनय करें बखान।।

शबद रूप को पूजते, जो तीन काल निरदोख।
त्रैगुन से नित भिन्न है, 'निरंकार' शबद तत्त मोख।।
उतपत परलय जो होये, सो असत माया विकार।
'अजन्मा' कर प्रभ पूजते, जुग जुग गुनी अपार।।
केवल सत्ता तत्त रूप को, पूजें सिद्ध बुद्ध अनेक।
दृष्यमान सब भरम है, प्रभ केवल रूप 'अद्वैत'।।
परम शकत संसार में, ज्ञान मात्रक सार।
सरब आधारी तत्त सो, करें 'पुरखा' विचार।।
लाख चौरासी जन्त में, जो सम रस रह्या व्याप।
'सरब व्यापक' तत्त जान के, हरजन करते जाप।।
राग द्वेष जाँ को नहीं, शुद्ध सरूप त्रैकाल।
'कल्यान-मूरत' तत्त ध्यान से, तन मन होये निहाल।।
सरब शकत आधार जो, अतुल शकत निरधार।
'परमेश्वर' कर पूजिये, ताप तपन होये छार।।
नमों नमों प्रभ रूप को, जाँ की महमा अपरमपार।
अनंत शकत तत्त शबद को, 'नमस्तं' बारमबार।।
तत्त मन्तर महमा अपार है, ज्ञान सागर अथाह।
जिस बिध जो सिमरन करे, भव दुस्तर तरे असगाह।।
सत सरूप परमात्मा, सब अक्षर महमा जाँ।
जो सिमरे चित प्रीत से, कलह ना व्यापे ताँ।।
सत मन्तर सिमरन करे, उट्ठत बैठत नर जोये।
जाये भरम की दूषना, चित शान्त परापत होये।।
विजय पाये संकट मिटे, सत गुन ले सुखसार।
आद व्याध जाये कल्पना, पाये सूझ धरम अपार।।
जो ध्याये नित प्रेम से, परसे नहीं पखवाद।
समता तत्त रसना मिले, मोह ममता मिटे मूल परमाद।।
कलह कलेश सब दूर होये, पाये ज्ञान तत्त योग।(522)
'मंगत' तत्त अक्षर नित गाईये, प्रभ दर्शन होयें संजोग।।1

मंगलाचरण

नारायन पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।
नमों नमों नित चरन को, जो सरब आधार हज़ूर।।
हिरदे सिमरो नाम को, नित चरनी करो दण्डौत।
सत शरधा से पूजिये, रख सतगुर की ओट।।
दुबधा मिटे मंगल होये, जो चरन कँवल चित धार।
रिध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय-जयकार।।
साचा ठाकर सरब समराथा, अपरम शकत अपार।(466)
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरनी बलिहार।।2
सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।
गवन मिटी संसार की, सतगुर मिले दयाल।।
बार बार करुँ बन्दना, सतगुर चरनी माईं।(467)
'मंगत' सतगुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं।।3

ईश्वर महमा एवं प्रार्थना

नमो निरंजन आद जुगादी, जो सरब शकत भरपूर।
निमस्कारं निमस्कारं, नित सत तत्त शबद हज़ूर।।

निमख निमख मैं दण्डवत करूँ। पारब्रह्म की सरनी पड़ूं।।
पूरण पुरख परमेश्वर ध्याऊँ। सरब सरिष्ट में सो दरसाऊँ।।
अखण्ड सरूप अबगत आपारी। निर्मल नाम करूँ विचारी।।
सरब परकाशी जोत सरूप। तीन काल में रहे अनूप।।
अकाल सरूप तत्त निर्वान। सहज भाये चित्त धरूँ ध्यान।।
मंगलकारी तत्त शबद अलेख। सरब जगत तेरा प्रभ भेख।।
नित बन्दूं नित करूँ विचार। परमानन्द शकत निरधार।।
अपरम अपार लीला बिस्तारी। पूरन पुरख जाऊँ बलहारी।।
अन्तरगत में सरब समाई। नाम तेरा अखण्ड सुखदाई।।
परम धाम तूँ आप स्वामी। अच्छर अबगत तूँ अन्तरयामी।।
पाँच भूत का तूँ ही आधार। आदि पुरख तूँ सरजनहार।।
अचरज शकत अतुल परमान। तूँ ही सत केवल भगवान।।
डण्डवत करूँ पाऊँ अरदास। नित नित राखूँ चरण निवास।।
बिस्माद सरूप तेरा भगवन्त। तूँ ही विचरें रूप अनन्त।।
अन्तरगत में करूँ ध्यान। सतगुर सीख का पाऊँ निधान।।
अत ही अचरज जगत पसारा। रंचक भेद नहीं मिले दातारा।।
करूँ परनाम पल पल की सार। सत ठाकर तोहे नित निमस्कार।।
तेरी ओट पूरन जगदीश। सरनागत हो करूँ आदेस।।
निर्मल चित्त से करूँ ध्यान। आद जुगादी तू सत भगवान।।

भवसागर में आये के, नारायण चित्त राख।(1)
'मंगत' मिले सत शान्ती, सतगुर की सुन साख।।4

तूँ दीनदयाल सरब का स्वामी। पतितपावन तूँ परम सुखधामी।।
अनन्त सरूप शकत अनन्त। सरब पसरया तूँ ही भगवन्त।।
अनन्त महमा तेरा विवेक। अनन्त सरूप तेरा प्रभ एक।।
तृण-तृण अन्दर तूँ समाया। अखण्ड सरूप तेरा प्रभ राया।।
अकथ कथा विज्ञान सरूप। परम पुरख तूँ अत अनूप।।
जब देखूँ प्रभ अन्तर माहीं। तूँ एक समाया पार गुसाईं।।
अपना कौतक आप बिस्तारी। अचरज लेख तेरा पारमुरारी।।
नित ही नित करूँ अरदास। सत ठाकर में करूँ निवास।।
तूँ रखयक सरब जग देवा। पल-पल माँगूँ निर्मल सेवा।।
दात करो अपनी प्रभ राये। तेरी कथा मन माहीं समाये।।
नित ही बाँछूँ चरनी धूड़। दीनदयाल समरथ हज़ूर।।
अन्तर बाहर तेरा जस गाऊँ। दिवस रैन तेरी कीरत ध्याऊँ।।
तूँ समरथ ठाकर बेपरवाहे। बारम्बार महमा चित्त गाए।।
नाम ध्यान पाऊँ तत्त मूल। तूँ व्याप रह्या सूक्षम अस्थूल।।
प्रभ दाते तेरी हूँ सरना। तूँ ठाकर हैं कारन करना।।
अत वडियाई तेरी प्रभ एक। कथ कथ थाके सिद्ध मुनी अनेक।।
राखनहार तूँ आप दयाल। सरब जियाँ पर होयें किरपाल।।
अपने भाने तूँ करे नित दात। निर्मल ध्यान तेरे चरन समात।।
परम परीत रहे चित्त माईं। तूँ ठाकर परम सुखथाईं।।

नित हूँ मैं सरनागती, पद परम पुरख प्रभ राये।(2)
'मंगत' की सुन बेनती, नित प्रभ जी होत सहाये।।5

एक तूँ ही सरब सुखदाता। पूरन पुरख सकल गत जाता।।
नित ही चरनी पाऊँ आधार। सत ठाकर तोहे नित निमस्कार।।
औगुन भरया मन दु:खदाई। अधिक सियानफ़ में भरमाई।।
जीवत की नहीं सार पहचानी। गरब धार भरमें अज्ञानी।।
मूढ़मती धारी दु:खदाई। नहीं चित्त आवे तेरी वडयाई।।
सत परमेश्वर रखया कीजो। अपने भाने सब खेद हरीजो।।
तूँ साजन सरब दातारी। नित ही चरन जाऊँ बलहारी।।
पारब्रह्म अखण्ड आपार। शुद्ध सरूप तू ही निरंकार।।
सरब आधारी गोबिन्द देवा। आद पुरख नित माँगूँ सेवा।।
सब चतुराई मन की जाए। दीनानाथ तेरी प्रीत समाए।।
पूरन रूप तूँ अत बलवन्ता। घट घट व्यापक तूँ भगवन्ता।।
तेरी रसना सब में परकाशी। दीनदयाल तूँ ही अबनाशी।।
अधिक विकार जिया नित धारी। मोह माया में नित फँसारी।।
सत सोझी नहीं आवे देवा। मूढ़मती नित भरम लखीवा।।
अब कुछ किरपा कीजो स्वामी। निर्मल ध्यान पाऊँ बिसरामी।।
अपनी महमा कीजो बख़शीश। प्रेम कमाऊँ चरन जगदीश।।
परचण्ड माया का वेग सब नासो। पततपावन घट में परगासो।।
खिमा ग़रीबी आवे चित्त धीरा। निर्मल प्रीत पाऊँ सुखसीरा।।
मोह-माया पर विजय लखाऊँ। घट घट तेरा रूप दरसाऊँ।।

आध-व्याधी सब मिटे, मनुआँ होये सुचेत।(3)
'मंगत' नित सरनागती, प्रभ जी हरो विखेप।।6

तूँ दाता तेरे दर आया। सकल आधार तूँ रूप धराया।।
साची भगत पाऊँ निष्कामी। दीनदयाल दीजो बिसरामी।।
अजर अमर तत्त रूप लखाओ। जनम मरन दु:ख ताप मिटाओ।।
अकाल सरूप अकरम पद दीजो। भरम बिकार सकल हर लीजो।।
अनादी सरूप पाऊँ प्रभ तेरा। आवागवन का नासे फेरा।।
नित सरनाई करूँ परनाम। निर्मल प्रीत पाऊँ सतधाम।।
चंचल चित्त तजे चतराई। सत सील मन माहीं समाई।।
दु:ख सुख परसूँ तुम आधार। समता रस पाऊँ सुखसार।।
अखण्ड शान्त परसूँ पद स्वामी। करो उद्धार प्रभ अन्तरयामी।।
शोक मोह काटो बिख जाल। सरनागत को करो निहाल।।
साची सेव कीजे चित्त वास। अनन परीत पाऊँ अबनास।।
करूँ दंडवत पदपंकज देवा। निर्मल चित्त से माँगूँ सेवा।।
आज्ञा तेरी में विचरूँ स्वामी। करम फाँस हरो बिख जामी।।
परम दयाल तू ही समराथा। आदी देव परम सुखदाता।।
नित ही अपनी उस्तत दीजो। मूढ़मती को चरनी लीजो।।
सत अरदास चित्त माहीं समाए। परम पुरख तूँ ही प्रभ राए।।
नमों नमों तेरे नित चरनां। आदी पुरख तूँ कारन करनां।।
सत उपमा तेरी चित्त गाए। साची प्रीत इक नाम ध्याए।।
अखण्ड शान्त प्रभ तेरा धाम। सतगुर सीख पाऊँ बिसराम।।

सन्तन की सत सीख से, मन तन आवे धीर।(4)
'मंगत' सेवा साध की, हरे भरम तकसीर।।7

करो आदेस नित पुरख बिधाता। बिषन वरंच जाँ को शिव ध्याता।।
नाना भाँत की रचना कीनी। हस्ती तृन आद की ख़बर नित लीनी।।
तुम परसाद चराचर सुख पाए। सबका राज़क हो रिज़क कहलाये।।
सबके अन्तर देवे परकास। चारखानी में सम करे बिलास।।
सिमरो ठाकर परम उपकारी। सरब के भीतर सरब आधारी।।
राजा राना होवे मीर। ज्ञानी ध्यानी गुनी फ़कीर।।
धनी दलिद्री हिकमत वादी। पण्डत क़ाज़ी और बाद-मुबादी।।
चोर चतर ठग और बकारी। शेख़ पीर और गुरु आचारी।।
दरिंद चरिंद अन्न घास के आहारी। सबका रखयक एक मुरारी।।
मिल सतगुर ये सार लखाई। हस्ती कीटी तृन रह्या समाई।।
तिसकी प्रभता सबमें दिखलाए। आलख पुरख गत लखी ना जाए।।
नदियाँ नीर सागर जल अथाहे। पवन पावक में रह्या समाए।।
परबत कन्द्रा उजाड़ बीबान। सबमें देखी तेरी इक शान।।
माँगूँ तुझसे नाम की भीख। दीनदयाल बख़्शो ये दीख।।
चौसठ घड़ी आवे तेरी याद। कठन मन नहीं परसे परमाद।।
अनन भगत दीजो मोहे देवा। प्रेम प्रीत करुँ चरन की सेवा।।
और आस जग की ना कोए। तेरा सिमरन मन लड़ी परोए।।
तुमरी याद मन करे सरजीत। तपन विनासे होए पुनीत।।
चरंजीव करे प्रभ तुमरा नाम। साची औखद में अन्तर बिसराम।।
ज्यों ज्यों नाम प्रभ अन्तर समाए। मन में धीरज आए अधिकाए।।
विखया अगन मिल सतगुर वंजाई। आलख पुरख की सोभा मन पाई।।
एके नाम की माँगूँ बख़्शीश। अनमत को राखो बीच चरन जगदीश।।

अधिक वडाई नाम की, मन तन दे आनन्द।(92)
'मंगत' विसरे ना पलक एक, साचा शबद अखण्ड।।8

दीनदयाल परमेश्वर ही तू मेरा। अनमत राखो नित चरनी केरा।।
तुम बिन दूजा ना कोई समराथा। अबगत पुरष तू नाथन-नाथा।।
माँगूँ भगत नाम बख़शीश। चरनी राखो सत जगदीश।।
औगनहार हाँ जनत तुम्हार। हो किरपाल तुम सरब आधार।।
नित निहथावाँ ना थाओं कोए। तुम विछोड़ा भरम चित जोए।।
कर किरपा तू साच मुरारी। अपने जन के संकट टारी।।
हरो विकार सत सेवा दीजो। भाओ भगत रस अन्तर सीजो।।
सिद्ध रिखीशर गुनी अपार। भए भिखारी प्रभ तेरे द्वार।।
होए किरपाल प्रभ आप मिलाए। अन्ध जीव को सार दिखलाए।।
जतन करे ना होवे काजा। माँगूँ दरस ग़रीब-निवाज़ा।।
अपनी माया का भेद उठाओ। झिलमिल ज्योती को दिखलाओ।।
आसा तृष्ना प्रभ हरो बिकार। सत सील दे नाम आधार।।
धूड़ बनाँ तेरे जन चरना। माँगूँ दान ग़रीबी सरना।।
हो रखयक तुम सदा उद्धारी। सरनागत की ख़बर गुज़ारी।।
अनेक जनम का हरो बकार। देखूँ दरस सत सरजनहार।।
अनन भगत जो शिव कमाए। अटल ज्ञान जो सनकादक गाए।।
प्रेम प्रीत नारद जो राखी। अदभुत दर्शन ध्रुव जो भाखी।।
सेवा टहल गुरमुख जो पाए। परम त्याग जो त्यागी में आए।।
सुन्न समाध जो चीने रसना। अधिक प्रेम जो भगताँ मन वसना।।
माँगूँ अमरत जो सबकी रास। दरस तुम्हारे की अधिक प्यास।।
चंचल मनुआँ को दीजो धीर। परगट होके रमो शरीर।।
मैं तोहे देखूँ तू मोहे देख। मन में रहे ना अन्तर रेख।।
अघट प्रेम तन मन समाए। जलथल पुरियाँ में एको दिखलाए।।

साखी पुरष परगट होए, परतक्ख करूँ दीदार।(103)
'मंगत' तेरे दरस सों, तन मन दीना वार।।9

करो आदेस प्रभ अन्तरयामी। नमस्कार करो पारगरामी।।
सरब निरन्तर सो परकासे। बारम्बार कर तिस अरदासे।।
विगन हरे गुन को वरतावे। कीटी हस्ती को रस पहुँचावे।।
भवचर नभचर को प्रतिपाला। सबका ठाकर सो दीनदयाला।।
बार बार करयो आदेस। सकल स्वामी आपे जगदीश।।
अधिक वडाई ना पारावार। साचा ठाकर सिमर मुरार।।
चन्दर सूरज जोती परकास। तारामण्डल आकास बिलास।।
दिवस रैन रुत पख मास। अचरज लीला धारी अबनास।।
थल के नीचे जल रचीना। जल के भीतर अगन रमीना।।
अगन माहीं वायु परगासे। वायु अन्दर आकास बिलासे।।
पाँच भूत की धारी रचना। आदेस करो नित पुरख अलपना।।
गिनी ना जाई प्रभता जगदीस। थलमण्डल में धारे बहु जन्त कीट।।
जाँ जाँ देखाँ ताँ पूर समाई। सरब का ठाकर सरब रमनाई।।
सकल भूत को चक्कर चढ़ावे। सकल जन्त को बहु रंग दिखलावे।।
निमख निमख में विचरे बिस्माद। नित अचम्भा पुरख आनाद।।
सबमें लाली तिसकी चमकाए। सबमें तेज तिसका दिखलाए।।
सबके अन्तर बाहर रखवारा। कर आदेस तिस चरन बलिहारा।।
जड़ माया को परकाशक कीना। सरब अतीत आप रमीना।।
जिस देखा सो अचरज आपार। परम समरथ सरब दातार।।
जुग जुग अपना रंग दिखलावे। तीन गुनों में जगत भरमावे।।
अन्तरगत रमया इक रंग। करो आदेस पुरख सरभंग।।
सबको अन्तर राख परोए। एको सूत ज्यों माल समोए।।
सब रसों को करे रसवाह। सरब का ठाकर बेपरवाह।।

प्रभ अपना सिमरन करो, नित कीजो आदेस।(174)
'मंगत' जग में सार है, सुन सतगुर संदेस।।10

शेष सहँस मुख महमा गाए। चतरमुख ब्रह्मा सेव कमाए।।
शेष शय्या पर विषन बराज। अबगत पुरख की लखे समाज।।
शिव सनकादक गौरी गनेश। सकल ध्यावें पुरख निरभेस।।
पीर पैग़म्बर कुतब ग़ौस रसूल। सब ही सिमरें नित बुद्ध अनुकूल।।
अन्त ना पारावार सो आए। लख रसूल बैठ करें रज़ाए।।
लाखों गोरख लाखों शिव विरंच। पाए ना भेद रंचक रंच।।
अपनी लीला धारी बिसमाद। सरब निरन्तर आप आगाध।।
करो आदेस पुरख निरधारी। सेव बन्दगी चरन बलिहारी।।
तिसका नाम सब संकट नासी। पततपावन सो आप अबनासी।।
दुर्लभ भाग जो सिमरन पाए। सत परतीत ना गरभ में आए।।
अदभुत कौतक धारे निरंकार। नाना रंग परगट देखूँ संसार।।
जुग जुग आदी आप अनूप। करो आदेस नित आलख सरूप।।
अपनी शकत में आपे बलवाना। अपने आप में पसरे भगवाना।।
दूजा हुआ ना दृष्टी आए। आद जुगादी आप समाए।।
ऊँच नीच में आप समाना। राजा राना रंक नादाना।।
आपे ज्ञानी आपे मूढ़ा। आपे दाता सरब की धूड़ा।।
आपे पंडत आपे श्रोता। आपे सिद्ध आपे साधक होता।।
आपे चारखानी बिस्तारे। आपे चार बानी उच्चारे।।
आपे थल मण्डल को धारी। आपे जुगता आप आचारी।।
सरब जीवों में आपे आप। सरब जगत तिसका परताप।।
आपे दाना गहर गम्भीर। आपे धारे अनन्त सरीर।।
एको हो बहु रूप दिखाए। नाना पन्थ तिसका जस गाए।।
अपनी माया आप परगासे। विचित्तर लीला धारी अबनासे।।

ज्ञानी गुनी नित गाँवदे, पर पायो ना किसे अन्त।(175)
'मंगत' दूजा ना कोए, सरब एक भगवन्त।।11

करूँ बन्दना पार मुरारी। नित किरपाल किरपाधारी।।
तूँ परमेश्वर नित आनन्दा। हरो विकार मन दुरगन्धा।।
तेरी दात अधिक अपार। पवन पानी बसन्तर धार।।
सरब जीयाँ रिज़क़ रज़ाए। कुदरत तेरी अगम अगाहे।।
नित नित करूँ अरदास। परम पुरख तू ही अबनास।।
दीन ग़रीबी माँगू भीख। करुनाकर तूँ ठाकर अलेख।।
नित सलाहूँ तेरा नाम। नित ध्याऊँ तुध अमरत धाम।।
एको सिफ़त तेरी चित्त भाए। दूजा भाओ सभी विसराए।।
पिण्ड ब्रह्मण्ड सब तेरा खेल। तूँ क़ादिर सब कुदरत मेल।।
भाँत भाँत की रचना रचाई। एक भाओ सब माहीं समाई।।
खेल विनासे रह्यो आप सरूप। माया छाया तेरी शक्त अनूप।।
अपने भाने कीजो बख़शीश। दीनदयाल सरब का ईश।।
नित सरनाई तेरे दरबार। नाम पदारथ मागूँ सार।।
पलक ना विसरे तेरा परसंग। दीनदयाल रंगो ये रंग।।
सिद्ध बुद्ध ज्ञानी देव मुनीशा। करें अरदास तेरी जगदीशा।।
विषन वरंच आद महेशा। करें बन्दना नारद शेषा।।
तेरी महमा का नहीं पायो पार। अनमत जीया क्या करे विचार।।
पूरन दात से हो दयाल। दीजो सेव चरन रछपाल।।
सकल विकार हरयो चित नाथा। बारमबार करूँ अरदासा।।
तुद बिन जग में कोई ना थाओं। नित नेहथावाँ आऊँ जाऊँ।।
मेहर करो चित्त नाम बसाओ। अपनी महमा का भेद लखाओ।।
तेरे दरस की रहे प्यास। मन तन माई करो निवास।।
तूँ मात पिता तूँ ही संग साथी। तूँ ही आद अन्त में साखी।।
क्या वडियाई कह विध बखाना। अन्धमत राखे विचार अनजाना।।

दीनदयाल दया करो, चित्त चरन पावे विश्वास।(237)
'मंगत' कीजे वन्दना, तूँ परम पुरख अबनास।।12

सिमर गोबिन्द आठों याम। भाओ भगत में लियो बिसराम।।
करता हरता सरब का स्वामी। सदा आराध परम सुखधामी।।
बारम्बार कर पद परनाम। सिमर दयाल पावें बिसराम।।
पततपावन करनाकर स्वामी। घट घट व्यापक अन्तरयामी।।
होवो दयाल सब दोख निवारो। भाओ भगत चित्त बसे विचारो।।
तुम रखयक चराचर गामी। बन्धन काटो तुम पार स्वामी।।
तुम बिन और नहीं भरवासा। पुरख अनादी घट करो परगासा।।
अनन भगत घट दीजो देवा। पलक ना विसरे तुमरी सच सेवा।।
जब जब भगतन पर आपदा आई। करनाकर स्वामी भए सहाई।।
बिपतकाल में दीजो धीरा। सत सील आए रमे सरीरा।।
चार पदारथ नौ निध पाए। तुमरी भगत मन माईं कमाए।।
तुमरा नाम सब ताप निवारे। दीनदयाल के चरन पधारे।।
निमख निमख फल माँगूँ स्वामी। अनन भगत में पाऊँ बिसरामी।।
जग जंजाल अधिक दुःखखानी। हाहाकार सब करें प्रानी।।
मध मान की अगनी अपार। जल जल पड़े सकल संसार।।
काल का भय करे चित्त छेद। हर भगत परापत जाए सब खेद।।
साचा नाम मन आवे परतीत। गुरमुख ज्ञान से पायो जीत।।
प्रान आधार पुरखोतम नारायन। सत भगत से भयो जीव परायन।।
जीवन जीया उद्दम ये धारे। मिल सतसंगत प्रभ नाम विचारे।।

करो अरदास समरथ की, जो सरब करे परगास।(293)
भवजल से राखो प्रभु, 'मंगत' पूरन आस।।13

ग़फ़लत छोड़ उठ लेख विचार। बिन प्रभ भगत सब दु:ख सार।।
साध-जनाँ ने निरना कीयो। परम आनन्द केवल प्रभ थीयो।।
माया विकार नित भरमाई। खप खप मरे नहीं शान्त पाई।।
सत ठाकर की सुध नहीं जानी। धार गरब भरमें अज्ञानी।।
अचरज रचना जगत पसारी। देख के मोहे बड़े गुनकारी।।
बिना विचार नहीं परसे सुख सारा। इच्छया भरम नहीं मिटे अंधकारा।।
उठ रे गुनियाँ तूँ लेख विचार। अबगत रूप सिमरो करतार।।
बंध खुलासी प्रभ सिमरन से पाए। शास्त्र वेद गुनी भेद बताए।।
नित आनंद सरब सुखखानी। पारब्रह्म सिमर निरवानी।।
नित परिपूरन सरब ज्ञाता। भज गोबिन्द सरब बिधाता।।
अबनाशी शकत सरब समराथा। भज परमेश्वर नाथन का नाथा।।
जुग जुग आदि सम रूप समाई। शबद सरूप चेतन सुखदाई।।
अगम निगम की जाननहारा। विज्ञान सरूप सिमर करतारा।।
नित अजन्मा अकाल सरूप। सिमर दयाल शकत अनूप।।
सकल जगत को आप बिस्तारी। सरब न्यारा रहे मुरारी।।
उस्तत कही ना कथनी आवे। जो जो सिमरे परम सुख पावे।।
सत परकाश सरब परकाशी। अनहद नाद पुरख अबनाशी।।
मन बानी से रहे न्यारा। शून्न रूप आनन्द निरंकारा।।
सबका परगट तिससे होये। परम पिता भज प्रीत समोये।।

महमा सत सरूप की, रंचक कथी ना जाये।(458)
'मंगत' जिस प्रभ पाया, तिस चरनी धूड़ रमाये।।14

तू करता करतार है, सब जग सरजनहार।
पल पल कीजूँ बन्दना, तूँ साखी पुरख अपार।।
बार बार करूँ बन्दना, तूँ दीनानाथ दयाल।
निहमानियाँ का मान तू, सरब काल रछपाल।।
अपनी कला को धार के, रचियो जगत पसार।
अनक भाँत उस्तत करूँ, तू दीनबन्धु दातार।।
सरब जगत का रखयक, नित ही करे प्रतिपाल।
निमख निमख सिमरन करो, गोबिन्द सरब किरपाल।।
चार वेद जस गाँवदे, गुनी मुनी जन अनेक।
सब जग तुमरा खेल है, नित राखूँ तुमरी टेक।।
अनमत मूढ़ा आया, प्रभ तोरे दर भीखार।
दीजो भगती दान प्रभ, नित मन करूँ पुकार।।
आठ पहर तुम प्रेम में, मनुआँ रहे लवलीन।
दीनदयाल दया करो, हरयो बुद्ध मलीन।।
शेष सहँस मुख गाँवदा, पल पल नाम अपार।
महमा तेरी क्या कथूँ, तूँ आपे सरब आधार।।
पाप कूप भसमत करो, दीजो सत विचार।
नित सिमरूँ तेरे नाम को, नित चरनी सुख धार।।
कलयुग घोर आ वरतया, सत धरम भयो नाश।
कूड़ कपट की सम्पता, सब घट कियो परगास।।
राखनहार आपार तूँ, नित ही तेरी आस।(468)
'मंगत' नित सरनागती, हरयो भरम की प्यास।।15

तूँ सरब स्वामी आनन्द बिसरामी, सरब करें परगास।
निमस्कारं निमस्कारं, नित चरन कँवल अरदास।।
तूँ परमेश्वर तू जगदीश्वर, तू देवन का देव।
नित करूँ डंडौत प्रभ, चित्त चरन कँवल की सेव।।
बार बार करुँ बेनती, परम पिता के द्वार।
राख लें प्रभ आपने, आयाँ सरन तुम्हार।।
ना बुद्धी सत करम की, ना सत धरम विचार।
केवल प्रीती चरन की, दीजो पूरन सार।।
मन की हरो वखेपता, दीजो प्रेम परसाद।
पल पल हिरदे में रसे, केवल तुमरी याद।।
दीन ग़रीबी रसना की, माँगूँ निस दिन भीख।
तू दाता दातार हो, कीजो ये बख़शीश।।
भरम रूप संसार से, प्रभ जी करो उद्धार।
पततपावन तेरो नाम है, हरजन करें पुकार।।
धूड़ रमाऊँ सीस पर, सरब जियाँ कराँ सेव।
हिरदे जपूँ सतनाम को, सीख सुनूँ गुरुदेव।।
सत शरधा हिरदे बसे, पूरन हो विश्वास।
केवल तेरी प्रीत में, राखाँ गिन गिन स्वास।।
बँध बँध सीस का कट जाये, पर प्रीती रहे चित माईं।
अनन भगत माँगाँ प्रभु, पल पल चरन ध्याईं।।

रसना तेरे नाम की, रस जाये मोर शरीर।(469)
'मंगत' पलक ना विसराँ, पद नारायन सुखसीर।।16

उस्तत तेरे नाम की, दिवस रैन चित्त भाये।
दीजो परम उद्धारता, गोबिन्द केशवराये।।
सकल पदारथ की दूषना, मन से होवे दूर।
चरन कँवल की प्रीत में, मन तन रहे मख़मूर।।
काल जाल सकला मिटे, परसाँ शबद अनूप।
प्रेम खुमारी नित चढ़े, जाये भरम का कूप।।
राग द्वेष मनसा जाये, मनुआँ हो इस्थीर।
घट घट देखूँ तुध रूप को, मिटे करम तक़सीर।।
मान मध सब नाश हो, खिमा करे परवेश।
दया धरम और धीरता, परसाँ सुख सन्देश।।
वैर बदी मन से मिटे, प्रेम पाऊँ परगास।
सिमरूँ निस दिन नाम को, धार पूरन विश्वास।।
अन्तर का जाये पाट सब, परतक्ख करूँ दीदार।
नित ही तेरे रूप में, जीव रहे मस्तार।।
छल कपट को त्याग के, सब से राखाँ हेत।
समाँ विचारूँ अन्त का, तजूँ पाप की नीत।।
मोह माया के भरम से, जीवन होवे शान्त।
निर्मल दीजो ज्ञान प्रभ, मिट जायें सकल भरान्त।।
द्वैत भरम सब नास होये, सम तत्त कराँ पछान।
निस दिन रसना नाम में, सुध बुद्ध हो ग़लतान।।

सम्पत माँगूँ सत धरम की, दात करो दातार।(470)
अनमत 'मंगत' नित करे, प्रभ तुमरे दर पुकार।।17

तूँ परमेश्वर नित सुखदाता, दीजो चरन की सेव।
निमख निमख कर सिमरन कराँ, सत परतीती गुरुदेव।।
सूखे तरुवर को फल लावें, पाथर जन्त टिकायें।
सूखे सरोवर नीर बहावें, पिंगू गिरी चढ़ायें।।
बिन्द से तू पिण्ड को साजें, पाथर नीर तरायें।
गूँगा करे अकथ की कथना, तेरा अन्त पार नहीं पायें।।
बिना मूल के परगट कीनी, भव दुस्तर की बेला।
गिन गिन थके ना गिनती आवे, प्रभ अचरज तेरा खेला।।
सबके भीतर आप समाया, रहत सदा अछेदा।
सिद्ध तपीशर नित जस गावें, पायो किसे नहीं भेदा।।
आलख रूप निरंजन तेरा, जोगी जती नित ध्याये।
अपरम अपार तेरी प्रभ लीला, कथने में नहीं आये।।
पल में मूरख होये सयाना, रंक को राज बिठाये।
पल में भूप होवे भिखारी, दर दर भीख मँगाये।।
सूखे फ़रश करें हरयावल, हरियाँ देवें सुखाये।
अनहोईयाँ नूँ तू करें, होईयाँ करें फ़नाये।।
तूँ जगदीश्वर सरब रमीना, अपरम अपार अथाये।
ज्यों ज्यों भावी त्यों चलावे, ठाकर बेपरवाहे।।
नित करो अरदास स्वामी, पल पल प्रीत कमाओ।
जैसी तिसकी आज्ञा, ऐसी मन रीझाओ।।

पारगरामी भज सुखदेवा, जो सकले ताप विनासे।(476)
'मंगत' अधिक परीत से, करो चरन कँवल अरदासे।।18

एक परमेश्वर मन सदा ध्याओ। सुफल कीरत जग में पाओ।।
प्रभ के दर का तूँ होवें भिखारी। सम्पत ज्ञान पावें सुखकारी।।
सत परमेश्वर की ओट पछानें। अगम निगम की रसना जानें।।
उतपत परलय के भेद को पायें। सत ठाकर जब प्रीत से ध्यायें।।
अपने आप में पायें गम्भीरी। आनन्द सरूप की मिली जागीरी।।
बिपत माहीं सुख सार पछानें। अखण्ड वडियाई साहब बखानें।।
औगन मिटे तब ही नर मीता। एक परमेश्वर आवे चीता।।
तूँ करतार तूँ सरब आधारी। अन्तर बाहर तूँ रखवारी।।
राख लियो प्रभ चरन के माईं। और द्वार की सूझत नाईं।।
कर किरपा मन पाप को हरयो। दीनदयाल तुद सरनी मैं पड़यो।।
सुरत चले ना इक पल स्वामी। निश्चल होवे तुद चरन आनामी।।
करूँ परनाम तुध पार जगदीशा। सकल वखेप हरें सरब का ईशा।।
तुमरे प्रेम में मगन समाये। उट्ठत बैठत तुम कीरत गाये।।
एक भरोसा तेरे चरन का पाई। राख लें ये अन्धमत दु:खदाई।।
पाप करम से नित नित राखो। दीनदयाल सरब का साखो।।
आद जुगादी तेरी महमा आपारी। सरन पड़े की रख लाज मुरारी।।
और ना माँगूँ तुध दरबारे। एक चरन प्रीत दीजो सुखकारे।।
करुनाकर तूँ सरब भण्डारी। नाम की दात करो दातारी।।
सरब जियाँ की कराँ नित सेवा। दीजो प्रेम देवन के देवा।।
सरब काल तुम चरन परीती। अनन भगत दीजो सुख रीती।।
आवन जावन मिटे गरभ का फेरा। नित समाऊँ तुध चरनी केरा।।
जीवतकाल में तुध सिमरन पाऊँ। अन्तकाल तुध रूप समाऊँ।।
काम क्रोध हरो विकारा। सील संतोख मोहे दीजो करतारा।।
सतनाम की रसना नित चित्त गाऊँ। दीजो ग़रीबी दान सुख थाऊँ।।

सरब जगत की धूड़ रमाऊँ, चित्त बसे नाम की प्रीत।(541)
'मंगत' कीजे बेनती, सुफल करो प्रभ चीत।।19

जुग जुग आद जो रिह्या समाई। तिसका सिमरन अधिक प्रभताई।।
तीन काल जो है रखवारी। संकट मोचन सुख वरतारी।।
सकल ज्ञान जो घट परगासी। कारन करता धर मन भरवासी।।
जिसका चानन घटपट में देखे। जिसकी शकत अनन्त अलेखे।।
भज करुनाकर किरपाधारी। दृढ़ विश्वास मन लीजो धारी।।
सब बिपता को हरनेहारा। सकल बंधन से देवे छुटकारा।।
जनम के पहले जो साथ रहाई। अन्त समय जो होए सहाई।।
परम मित्तर भज सो सुखरासी। साची प्रीत चित चरन बिलासी।।
सब रसना का रस दिखलाई। सबसे न्यारा आप रहाई।।
आवागवन में जो नहीं आवे। जिसकी माया सब रंग दिखलावे।।
काल करम जाँ व्यापे नाईं। भज दीनदयाल परम सुख थाईं।।
साची टेक राखो तिस चरना। सतपुरषों का सुन ये निरना।।
सकल विखेपत पल नास हो जाई। दीनदयाल जब होये सहाई।।
बिपता से नित जीव को राखे। पततपावन कर गुनी अलापे।।
तपन माहीं पल ठाँड वरताये। भज अमरत रूप शबद सुखदाये।।
बिन विश्वास ना साहब पायें। अंध भरवास में आवें जायें।।
साची नीती पल पल विचार। पावें टेक केवल करतार।।
मोह माया ये रैन अन्धेरी। पल पल बिपता पायें घनेरी।।
रख विश्वास केवल प्रभ एक। मिट जाये सकला भरम विखेप।।
सत साधू का बोल पछान। शास्त्र सिमरत का सुन निधान।।
माया झूट सत करतार। तिसके चरन में निश्चय नित धार।।
अपना करता हरता पहचान। सरजनहार ठाकर निर्वान।।
तिस बिन दूजे नहीं नेहों राख। करो डण्डौत सत सेवा भाख।।
बारम्बार मन माहीं पुकार। तूँ करता साजन करतार।।

सत साजन संसार में, एक परमेश्वर जान।(598)
'मंगत' निश्चय राख के, पल पल सेव पछान।।20

करनेहार तूँ ठाकर मेरा। पल पल राखें चरनी केरा।।
तूँ दु:ख हरता मंगलकारी। तोरी महमा अपर अपारी।।
खलबुद्धी मैं अनमत मूढ़ा। कह बिध सिमराँ तुध नाम हज़ूरा।।
अधिक विकार भरे दु:खदाई। तुध बिन मेरा नहीं कोई सहाई।।
बुद्धीहीन मन अती मलीना। तुम बिन रखयक नहीं कोई दरसीना।।
अत ही नीच औगन को धारी। तुध बिन मेरा नहीं कोई रखवारी।।
दुष्ट विकार चित्त धरे घनेर। आवागवन फिरावें फेर।।
कह बिध छूटाँ प्रभ दीनदयाला। ना कोई जतन ना ज्ञान विशाला।।
ना कोई मारग सोझी आवे। तुध बिन थाओं नहीं कोई दिखलावे।।
बारम्बार ये किया विचारा। बन्ध छुड़ावे तुध नाम अपारा।।
बुद्धीहीन नहीं उस्तत पाऊँ। कह बिध प्रीत तोरे चरन कमाऊँ।।
शेष सहँसमुख जो नित गाई। पल पल विरंच मन ध्यान लगाई।।
शिव सनकादिक विषन विचारी। लोमस जुग जुग प्रीत निहारी।।
तेरी महमा का पाया नहीं पार। अनमत मूढ़ा क्या करे विचार।।
साची प्रीती प्रभ चरनी दीजो। साची कीरत प्रभ मन में सीजो।।
अपना तेज आपे परगासो। पल पल चरनी करूँ अरदासो।।
ना तप बल ना विद्या कोए। ना विचार चित्त घना लखोए।।
केवल किरपा तोरी विचाराँ। पल पल तेरा नाम निहाराँ।।
अपनी मेहर आपे वरताओ। मूड़े कीट को सूझ लखाओ।।
धुरू प्रहलाद गुनी बहु तारे। नामदेव रविदास उद्धारे।।
पीपा सैना की प्रीत बढ़ाई। कबीर दादू नानक तराई।।
कोटाँ कोट प्रभ किये उद्धार। गिनती लेख नहीं पाऊँ शुमार।।
सिद्ध रिखीशर जुग जुग गायें। पततपावन करके नित ध्यायें।।
सच्चिदानन्द तूँ नित किरपाला। मूरख जन्त का तूँ रखवाला।।

सरब जगत को छाड के, तुध दर धूड़ रमाऊँ।(626)
'मंगत' दीनदयाल प्रभ, मत कित दर्शन पाऊँ।।21

आद जुगादी तूँ भरपूर। मेरा राखनहार हज़ूर।।
नित रखयक हो नित किरपाला। आनन्द सरूप तूँ सरब दयाला।।
पल पल तोरी सेव पछाना। सब कुछ बूझूँ तेरा फ़रमाना।।
दीजो शकत भगत चित आये। सिमरन तेरा मन रहे समाये।।
तोरा रूप पल पल लखावाँ। इक चित होके दर्शन पावाँ।।
अत वडयाई तेरी प्रभ मेरे। नित आनन्द नित बसें परेरे।।
ज्ञान विज्ञान तेरा परतापा। खिमा दया प्रभ तेरा जापा।।
औगन हरो सतगुन परगासो। मुकन्दसरूप तूँ अजर अबनासो।।
लिख लिख लेख गुनी मुनि हारे। तेरी कुदरत अपरम अपारे।।
जब भावी तब खेल रचाई। अपनी देखें सब प्रभताई।।
तेरा खेल जगत पसारा। बारम्बार करूँ निमस्कारा।।
परले पार तूँ नित बिसरामी। घट घट जाने तूँ अंतरयामी।।
सब कुछ करके रहें न्यारा। अदभुत साहब तेरा पसारा।।
महमा ना वरनी रंचक जाई। तूँ ठाकर सरब शकताई।।
बल बुद्धी अंतर परगासो। लेखा लिखाँ तेरा निरवासो।।
तूँ ही सत आद जुगादी। तोरा नहीं पावाँ भेद बिस्मादी।।
अचल अडोल पुरखोत्तम देवा। अनन प्रीती दीजो चरनी सेवा।।
सत कर सिमराँ तेरा नाम अनामी। निज घर पावाँ प्रभ नित बिसरामी।।
एक भरोसा तेरे चरन रहाई। साची कीरत मन रहे समाई।।
पाप कूप से राखो नित स्वामी। करो बखशीश सत सेव निष्कामी।।
तोरे दर की नित आस रहाये। तोरी दात मन सुख मनाये।।
घट का पाट सब दूर करीजो। सन्मुख होके प्रभ दर्शन दीजो।।
जीव प्यासा तेरे दर्शन ताईं। ताप बुझाओ तुम आपार गोसाईं।।
आलख आपार प्रभ तेरा परताप। निमख निमख ध्यावाँ तेरा जाप।।

दीनबन्धु करतार तूँ, अपनी प्रीत लखाओ।(627)
'मंगत' प्रीती चरन की, पल पल हिये समाओ।।22

तूँ ठाकुर सब कारन करना। नित रखयक हूँ तेरी सरना।।
तूँ ही सबका पालनहारा। उतपत परलय खेल तुम्हारा।।
तू ही सबका नित आधार। सरब जन्त हैं रूप तुम्हार।।
तू ही सबका निर्मल धाम। आद अन्त से परे बिसराम।।
तू ही तू परमेश्वर मेरा। राख लें प्रभ चरनी केरा।।
तेरी ओट तेरा आधार। दीनदयाल तू सरजनहार।।
तू ही पूरन कला को धारी। निर-आधार पुरख मुरारी।।
तू ही अपने आप बलवन्त। पूरन शकत अपार भगवन्त।।
तू ही आनन्दकन्द सरूप। जुगा जुगन्तर रमें अनूप।।
तू ही आद जुगाद इक रंग। बिस्माद कौतक तेरा परसंग।।
तू ही अबगत अगोचर अनादी। सतसरूप आलख समवादी।।
तू ही एक अनेक को धारी। अदभुत रचना कीनी बिस्तारी।।
तू ही परले पार बिसरामी। अखण्ड सरूप शबद अनामी।।
तू ही अजर अमर निरवाना। अकथ सरूप तू ही भगवाना।।
तू ही बिशम्भर सकल जग धरता। आद जुगादी पूरन तू करता।।
तू ही सरब का धाम स्वामी। सकले खेल में तू बिसरामी।।
तू ही परकाश सरब परकाशी। नित आनन्द शबद सुखरासी।।
तू ही अन्तर बाहर समाया। आलख अभेद सरूप निरमाया।।
तू ही सबकी बनत बनावें। न्यारा होके खेल खिलावें।।
तू ही पूरन उस्तत योग। जो जो सिमरे भये अरोग।।
तू ही समरथ पूरन प्रभ देवा। कित बिध पावाँ तेरी सत सेवा।।
तू ही ठाकर नित किरपाधारी। सरब जीवों के संकट टारी।।
तू ही सबकी करें न्याये। करनी का फल देवें सज़ाये।।
तू ही सबकी करें सम्भाल। दीनानाथ तू दीनदयाल।।

तू ही सत आद जुगादी, तू ही सरब आधार।(680)
'मंगत' कीजे बंदना, तुध चरनी बारम्बार।।23

तू ही सरब का संकट नासी। पततपावन पुरख अबनासी।।
तू ही तू तेरी अरदास। चरन कँवल में करूँ निवास।।
तू ही बुद्धी बल दातारी। दीन दु:खी का तू उद्धारी।।
तू ही ऊँचे से ऊँचा देव। पल पल ध्यावाँ तेरी सेव।।
तू ही अज अनील अनाम। हस्ती तृन में तू बिसराम।।
तू ही सरब ज्ञान का दाना। अपरम अपार पुरख सुजाना।।
तू ही बिस्माद रचना को धारी। महमा तेरी नहीं जाये विचारी।।
गुपत परगट तेरा परताप। कोटाँ कोट करें गुनी जाप।।
तू ही सत तत्त अखण्ड। अरबाँ खरब धारें ब्रह्मण्ड।।
तू ही मूल सरब बिस्तारी। सरब निरन्तर तू ही पसारी।।
सकली रचना प्रभ तेरा पासार। रंचक महमा नहीं होये शुमार।।
तू ही अपनी गत जानत जानाई। सच्चिदानन्द पुरख आपार अगाही।।
तू परमेश्वर आनन्द दातारी। जो जो सिमरे होए निस्तारी।।
तू ही वेद ग्रन्थ का मूल। कारन रूप सूक्षम अस्थूल।।
तू ही तू तेरा सब खेल। अपरम अपार पुरख अनील।।
तू ही व्याप सरब के रंग। इत उत तेरा साहब परसंग।।
तू ही तू देखा सब थाईं। सतगुर मेल से भेद लखाईं।।
तू ही तू तुझको डण्डौत। पूरन पुरख तेरी नित ओट।।
तू ही तू मन तन समाओ। दुबधा दुर्मत का होवे अभाओ।।
तू ही शुद्ध सरूप निरदोख। जो जन सिमरे पावे तत्त मोख।।
तू ही परमानन्द सरब का देव। दीनदयाल दीजो सत सेव।।
तू ही आद अन्त रखवारा। नित परापत सरजनहारा।।
तू ही अनंत कला को धारी। कोट विरंच भये महेश पुजारी।।
तू ही बख़्शनहार दयाल। अनमत कूकर पर होयें किरपाल।।

सरब शकत समरथ तूँ, सत ठाकर निर्वान।(681)
'मंगत' माँगे रसना, सत प्रीती चरन ध्यान।।24

कोई ना थाओं बिन प्रभ तेरे। तेरी प्रीती सुखसार घनेरे।।
करो किरपा प्रभ अन्तरयामी। साची प्रीत पावाँ बिसरामी।।
पतत उद्धारी प्रभ तेरा सतनाम। नित नित गावाँ धर विरत निष्काम।।
निमख निमख तेरे चरन समाऊँ। अन्तर बाहर कीरत नित गाऊँ।।
औगन हरता सब बन्धन नासी। पारब्रह्म तत्त रूप अबनासी।।
अत वडयाई तेरी प्रभ मेरे। जो जन सिमरे तिस भाग घनेरे।।
जनम जनम की तपन करें दूर। पूरन पुरष सतनाम हज़ूर।।
जल थल पवन पावक आकासा। तेरी शकत सब माहीं निवासा।।
उदे अस्त अत चारे कुंट। सरब-व्यापक तूँ साहब अनंत।।
लोकालोक मंडल आकार। सरब परकाश तूँ सरजनहार।।
चार खानी सब माहीं रमीना। चेतन पुरष अछेद अछीना।।
जन्ताँ अन्दर जन्त समाई। सरब निरंतर हो लेख लखाई।।
रसना रस सरब को धारी। उपरस रूप शबद आपारी।।
घट घट की तू जाननहार। सरब जियाँ को देवें विचार।।
तेरी उस्तत का तू ही मानी। साचा साहब तूँ अतुल परमानी।।
रोम रोम में तेरा परगास। अखण्ड सरूप तूँ ही निर्वास।।
साची सेवा दीजो प्रभ देव। सिमर सिमर पद पावाँ निरभेव।।
अनमत अन्ध अत अज्ञान। कह बिध ध्यावाँ शुद्ध रूप सुजान।।
औगन भरया मन नित भरमाई। दीनदयाल तेरी सरनाई।।
जुगत मुकत कोई ना जानी। केवल प्रीत तुध चरन पहचानी।।
आस भरोसा कोई नहीं मेरा। नित आधार राखूँ प्रभ तेरा।।
ज्ञान ध्यान कछु नहीं जाता। तेरी टेक नित पुरख बिधाता।।
रंचक गुन नहीं मन के माईं। केवल ओट तेरी पार गोसाईं।।
अत नीच नहीं सूझत कोई। दीनदयाल दर दीजो ढोई।।

तुम दातार सरब दातारी, मैं हूँ अन्ध भीखार।(682)
'मंगत' माँगे प्रेम रस, चित्त चरन कँवल आधार।।25

मैं अत बिकारी नित हूँ देवा। किस भाँत पावाँ तेरे चरन की सेवा।।
नित निहथाँवाँ नित परदेसी। आवागवन नहीं मिटे संदेसी।।
अतीअत चंचल मन संग धारी। नहीं चित्त आवे तेरी प्रीत आपारी।।
अन्ध विश्वास बुद्ध अज्ञानी। तेरी महमा नहीं करूँ पहचानी।।
विद्याहीन विचार से हीन। अन्धमत नित फिरे मलीन।।
ना कोई ओट सखा ना कोए। अंध गुबार चित्त घने समोये।।
बिनसनहारी माया संग डूबा। तुध परताप नहीं हिरदे सूझा।।
छाया प्रीत में नित गरसाया। साखी पुरष नहीं सिमरन चित्त आया।।
आवे जावे पल पल अंधयारा। दुष्ट विकार अंतरगत धारा।।
सूझ बूझ नहीं कोई चित्त आये। जनम अकारथ दियो गँवाये।।
दीन दुनी दोनों दी हार। समाँ गँवाया विच कूड़ विकार।।
झूटा निहों संग जगत लगाई। अंत की बारी सब छोड़ के जाई।।
अंतर बाहर नित भरम लपटाया। पाप विकार में नित भरमाया।।
ना सत कथा ना प्रेम विचारी। अपनी आप नित करी ख़वारी।।
भोग विकार में नित परबीना। नित आनन्द नहीं प्रभ को चीना।।
सोवन जागन भोग विकार। दुर्लभ जनम में भ्रम खाटी सार।।
जो कुछ कीया सो ही दु:खदाई। बिपतकाल में होये कौन सहाई।।
साचा धरम नहीं कियो विचार। पशु समान दियो जनम गुज़ार।।
जीवन आसा नित नित मानी। अंत समाँ नहीं कियो पहचानी।।
झूट देही संग अधिक प्यार। देखत देख होवे ये छार।।
माया भरम ने अत भरमाया। सत विचार नहीं हिरदे आया।।
कूड़ी सम्पत अंत त्यागी। चले निमाना ये जीव मंध भागी।।
जनमे मरे नित आवे जाये। अपनी करनी की मिले सज़ाये।।
बिन प्रभ तेरे नहीं बिपता नासे। दीनदयाल करूँ अरदासे।।

सब जग भरम सरूप है, जीव नहीं छूटन पाये।(683)
'मंगत' नित प्रभ सरनागती, पल पल चरन ध्याये।।26

बिन तेरे नहीं सूझे ठौर। आवे जावे चौरासी घोर।।
बिन तेरे नहीं और पछाता। जो हरे मन का संतापा।।
बिन तेरे नहीं कोई शकत विचारी। जो इस भ्रम से देवे निस्तारी।।
बिन तेरे नहीं कोई समराथा। होयें दयाल जो पल पल नाथा।।
बिन तेरे नहीं कोई धाम सुखदाई। जाँ में काल नहीं फेर फराई।।
बिन तेरे सब ताप तपाये। आनन्दसरूप केवल प्रभ राये।।
बिन तेरे सब भरम के माहीं। सरब न्यारा तूँ निर्मल साईं।।
बिन तेरे सब काल का खेल। केवल तू ही आनन्द सुख मेल।।
बिन तेरे सब ही दु:ख पावें। काल चक्कर में आवें जावें।।
बिन तेरे नित ही मन मूढ़ा। पाप कुपथ में नित भरपूरा।।
बिन तेरे प्रभ कोई नहीं और। जो भव दुस्तर से लगावे ठौर।।
बिन तुध चरन नहीं शांत चित आए। पलक पलक किये कोट उपाए।।
बिन तेरे नहीं कोई सत मीत। जो पार लंगावे ये दुस्तर भीत।।
बिन तेरे सब मिथ्याबाद। आसा तृषना भरम परमाद।।
बिन तेरे संकट अत धारी। पल पल रोये ये जीव अंध्यारी।।
बिन तेरे प्रभ कौन छुड़ाए। अधिक कलेश जो चित्त में पाये।।
बिन तेरे प्रभ नहीं कोई आस। जनम मरन की जो काटे फाँस।।
बिन तेरे नहीं और दिखाई। जो इस जीव का भरम मिटाई।।
बिन तेरे नहीं और कोई मान। तेरी सरन हूँ सत भगवान।।
बिन तेरे नहीं कोई सुने पुकार। दीनानाथ तू ही दातार।।
सकल कलेश कीजो प्रभ दूर। साची भगत दीजो हज़ूर।।
बारम्बार करूँ परनाम। निर्मल प्रीती दीजो बिसराम।।
चरन कँवल को करूँ डंडौत। दीनदयाल तेरी है ओट।।
अपनी महमा की कीरत दीजो। सकल माया का विकार हरीजो।।

माँगूँ नित नित कीरती, प्रभ चरन कँवल आपार।(684)
'मंगत' की हरयो तृखा, पल पल करूँ पुकार।।27

मागूँ नाम रतन सुखदाई। दीनदयाल नित हो सहाई।।
मूढ़मती की सुनो अरदास। सत सरूप में दियो निवास।।
तूँ करुनाकर मेरा स्वामी। नित सरनागत पुरख अनामी।।
कैसे करूँ तेरी वडयाई। जल थल भीतर सम वरताई।।
तेरी कुदरत आपार मुरारी। सरब जियाँ को सरजनहारी।।
अपना खेल आप पसारे। तूँ ठाकर नित जाऊँ बलिहारे।।
हस्ती कीट में पूर समाई। सर्वज्ञ शकत आपार अगाही।।
नित परनाम करूँ तुध चरना। दीनदयाल तेरी नित सरना।।
अनमत कूकर की रखया कीजो। साचा सिमरन प्रभ अपना दीजो।।
पलक पलक तेरी महमा गाऊँ। अधिक प्रीत से नाम ध्याऊँ।।
तुमरी शकत की शोभा चित्त आये। तन मन अंदर तेरी प्रीत समाये।।
ऐसी किरपा करो प्रभ मेरे। आवागवन का बिनसत फेरे।।
ऐसी महमा दीजो प्रभ देवा। निमख ना विसरे तेरे चरन की सेवा।।
ऐसी दया करो नित दयाल। मन तृपते इक नाम सम्भाल।।
ऐसी किरपा कर पार मुरारी। मन मूढ़ा सत सेव विचारी।।
ऐसी गिनती प्रभ मोहे गिनाओ। कथ कथूँ तेरा नाम अगाहो।।
पूरन पुरख नित सरन तुम्हारी। अती भयंकर चित्त औगनहारी।।
अपनी दात से नित करो निहाल। रोम रोम में रमो गोपाल।।
सूझ बूझ नहीं आवे चीत। तूँ करतार परम जग मीत।।

अन्धमत को राखें प्रभु, देके चरन आधार।(722)
'मंगत' माँगे रसना, तेरे चरन कँवल आपार।।28

पूरन भाग प्रभ सरन पहचानी। आवागवन गई काल निशानी।।
केवल प्रीत प्रभ चरन विचारी। परम आनंद मिला निरधारी।।
ज्ञान ध्यान की सार ध्याई। एक परमेश्वर के चरन समाई।।
योग तप सत साधन जानी। सरब आधार प्रभ एक पहचानी।।
धरम करम सब पूरन भयो। सत परतीत प्रभ सरनी गयो।।
उठ मन मूरख नित चितार। सत ठाकर की सरन पधार।।
सरब जतन पूरन फल देवें। नित सरनागत प्रभ चरन को सेवें।।
जिसने सकली खेल रचाई। तिस ठाकर की हो सरनाई।।
जिसने देह पिण्ड दियो प्राना। भज परमेश्वर परम सुखथाना।।
मात गरभ में जो रखवारी। सिमर दयाल परम सुखकारी।।
बालपने कुच दूध पीवावे। नित रखयक को क्यों विसरावे।।
हाड नाड़ी का मन्दर उसारी। तूँ करतार नित जाऊँ बलहारी।।
अचरज रचना तूँ साहब रचनाई। देह देवल की किसे सार नहीं पाई।।
प्रान का पंखा कैसे झुलाया। पानी बिन्ध में कैसे रूप दिखाया।।
हाड से कैसे दन्त उपजाये। जीब्भा रसना कैसे लख पाए।।
इस मन्दर की रचना बिस्माद। कारन करता तूँ आलख अनाद।।
मूरख मन तेरी सरन विसारी। भरम माहीं जूनी बहु धारी।।
निर्मल बुद्धी प्रभ करता विचार। जिसने साजा ये देह आकार।।
पूरन सतगुर की सीख पहचान। सिमर परमेश्वर सुखसार निधान।।

जिसने सब रचना रची, सिमर सो ही तत्त रूप।(725)
'मंगत' नित रखया करे, प्रभ दीनदयाल अनूप।।29

निश्चल धाम केवल प्रभ आप। जो सिमरे पावे परताप।।
कर किरपा प्रभ अंतरयामी। मिटे विकार मिले बिसरामी।।
अपना ज्ञान सरूप लखाओ। इस मन का सब खेद मिटाओ।।
अपने धाम का दीजो विचार। पूरन पुरख तूँ सरजनहार।।
अपनी माया का भेद उठाओ। परतक्ख होके सत रूप दिखाओ।।
सचखण्ड में पाऊँ नित वास। गिन गिन राखूँ चरन में स्वास।।
अंतरमुख प्रभ दरस दिखाओ। करम जंजाल का होवे अभाओ।।
तेरी कीरत तन मन समाये। इत उत तेरी सोझी आये।।
सर्वज्ञ शकत का पाऊँ निधान। समता ज्ञान मिले आनन्द खान।।
करो ये दात प्रभ दीनदयाल। सिमरन तेरा चित्त करे निहाल।।
आस भरोसा केवल प्रभ तोरा। नित ही राखें प्रभ पार हज़ूरा।।
जीवत जीऊँ तेरे रूप के संग। अन्तर रेख मिटे दुर्मत रंग।।
पूरन किरपाल हो पार स्वामी। अपनी महमा दीजो सुखधामी।।
नित ध्याऊँ प्रभ तेरा नाम। दृढ़ निश्चय से पाऊँ बिसराम।।
तूँ परमेश्वर शकती भंडार। अपने जन का करो उद्धार।।
ना बुद्धी ना ज्ञान विवेक। दीन भाव से राखी टेक।।
कोट पतत प्रभ कीये उद्धार। सरनागत पर होवें दातार।।
बंध खुलासी कीजो प्रभ देव। अबगत रूप की पाऊँ सेव।।
तेरे सिमरन का रहे आधार। करो बख़शीश प्रभ सरजनहार।।

अनेक जनम का भरमता, प्रभ आयो तेरे द्वार।(727)
'मंगत' की बिपता हरो, तूँ पूरन किरपाधार।।30

आलख आपार तेरा अस्थाना। विरले गुरमुख करी पहचाना।।
जिस पर होवें तूँ किरपाल। सो जन पाए सत रूप दयाल।।
गुनी मुनी जुग जुग ध्याएँ। तेरी महमा का भेद नहीं पायें।।
सरब में पसरियो सरब से न्यार। अचरज लीला धारें करतार।।
मन मूरख को दीजो विश्वास। तेरे सिमरन की रहे चित्त प्यास।।
संसा भरम जाय अन्धकार। साची भगत का मिले विचार।।
प्रेम प्रीत नित चरन रहाये। पलक ना विसरे सतनाम सुखदाये।।
सब जग बिख की धार पहचानी। परमानन्द तूँ इक निर्वानी।।
चंचल मन नहीं पाये विश्वास। आवे जावे विच भरम की फाँस।।
होयें दयाल तब संकट जाये। अंतर में अंतरगत पाए।।
साचा साहब किस दर को जाऊँ। बिना तेरे कोई ना मेरा थाऊँ।।
निहथावाँ को देवें आधार। करूँ बंदना बारम्बार।।
तेरी महमा किस मुख से गाऊँ। तेरा ध्यान किस जुगत कमाऊँ।।
तेरी किरपा प्रभ करे निहाल। अपने भाने होवें किरपाल।।
त्याग वैराग नहीं रंचक विचार। सूझ बूझ नहीं चार आचार।।
माँगनवाला नहीं मुखड़ा मोर। अपनी किरपा कर पुरख हज़ूर।।
आद जुगादी तूँ पतत उद्धारी। माँगूँ नाम रतन सुखकारी।।
तुमसे बड़ा नहीं देखन आये। खोजत खोजत बहु जनम गँवाये।।
अबकी बार प्रभ करो निहाल। दीजो नाम प्रभ दीनदयाल।।

अबगत रसना नाम की, मन तन जाये समाये।(728)
'मंगत' की अरदास है, प्रभ जी होओ सहाये।।31

नित गाऊँ प्रभ तेरा नाम। नित ध्याऊँ तेरा अबगत धाम।।
नित माँगूँ तेरी भगत अपार। अनन प्रीत रहे चरन प्यार।।
नित माँगूँ तेरी अपार वडयाई। सिमर सिमर तेरे चरन समाई।।
नित माँगूँ तेरा सत परसंग। नित बिचरूँ तेरे प्रेम के रंग।।
नित माँगूँ ग़रीबी भेख। भाव भगत का पाऊँ लेख।।
नित माँगूँ सब जग की सेवा। होवो दयाल देवन के देवा।।
नित माँगूँ तेरा निर्मल देस। सत परतीत करूँ परवेश।।
नित माँगूँ सत ज्ञान वैराग। निर्मल चरन का मिले अनुराग।।
नित माँगूँ मन निर्मल रंग। इक चित्त ध्यान रमूँ तेरे संग।।
नित माँगूँ परमारथ सार। स्वारथ बुद्ध जाये हंकार।।
नित माँगूँ सत शरधा देव। निमख निमख में परसूँ सेव।।
नित माँगूँ मैं पर का हेत। वैर विकार का नहीं पाऊँ लेप।।
नित माँगूँ समता तत्त ज्ञान। सरब जियाँ में करुँ तेरी पहचान।।
नित माँगूँ पुरषारथ एक। पलक पलक कर लिखूँ सत लेख।।
नित माँगूँ सत साधू संग। दिवस रैन तेरा सुनूँ परसंग।।
नित माँगूँ सत जुगत आपार। सतगुर मेल से होवे उद्धार।।
नित माँगूँ निष्काम प्रीत। निर्मल ज्ञान के गाऊँ गीत।।
नित माँगूँ तेरा दर्शन आपार। अबगत जोत शबद निरंकार।।
नित माँगूँ सत सेवा लेख। मान गुमान का मिटे भुलेख।।

मैं नित माँगनहार हूँ, तू नित हो दातार।(729)
'मंगत' माँगे भिखया, सत शरधा चरन आपार।।32

तूँ साचा साहब नित राखनहार। करूँ बंदना प्रभ बारम्बार।।
अपनी किरपा नित करो स्वामी। भगती दान दीजो पारगरामी।।
नित ही गावाँ परम गुन तेरे। तुद सरनी पाऊँ सुख घनेरे।।
चंचल मन को दीजो विश्वास। मोह माया की हरो प्यास।।
तू पुरखोत्तम नित ही दातार। दीजो दान ग़रीबी सार।।
एक नाम की प्रीत चित्त आये। महमा तेरी मन माहीं समाये।।
हरो विकार मन औगनकारी। तूँ परमेश्वर सरब दातारी।।
अखण्ड अनादी प्रभ रूप तुम्हार। सरब स्वामी तूँ पुरख मुरार।।
अपनी महमा आप प्रभ जानी। दूजा कोई ना कर सके बखानी।।
अतुल शकत अत ही परकास। सरब जीवों में करें निवास।।
सबमें पसरें तू एक ही रंग। हस्ती कीटी आद भुजंग।।
तेरा खेल अबगत आपार। सरब सरूप तेरा निरंकार।।
साची प्रीत दीजो मोहे देव। पलक ना विसरे तेरी सत सेव।।
पूरन पुरख तूँ घाट ना पायें। अपने जन की आधार लखायें।।
तुध भरवास केवल चित्त रहाये। दूजा भरम माया दुःख जाये।।
तेरा सिमरन करूँ इक रंग। भरम विकार होवे चित्त भंग।।
साची सेव मन आये समाये। कर किरपा प्रभ केशवराये।।
धूड़ लखाऊँ तेरे जन चरना। दीजो दान ग़रीबी सरना।।
करूँ अरदास प्रभ तेरे द्वार। साची भगत दीजो सत सार।।

खिमा ग़रीबी बन्दगी, जो चित्त आये समाये।(743)
'मंगत' माया जाल से, तब जन निस्तर पाये।।33

दुबधा धारी ये मन दु:खदाई। दुबधा नासे प्रभ कीरत गाई।।
भाओ प्रीती पाई करतार। पल पल सिमरें सत सरजनहार।।
साजन सिमरे मन मंगल पाई। बिन भगवन्त नित आवे जाई।।
तूँ ठाकर सरब समराथा। अतुल शकत नाथन के नाथा।।
तूँ परमेश्वर सरब परकासी। कीरत गाऊँ सब बन्धन नासी।।
तूँ ही तूँ दाता सुख सार। माँगूँ निर्मल शबद विचार।।
तू कर्ता मेरा रखवारी। नित ही नित जाऊँ बलिहारी।।
अत प्रभता तेरी प्रभ जानी। तीन लोक में तूँ परवानी।।
अत परकाश तेरा परकाशी। रवी चन्दर नित चरन बिलासी।।
अत आनन्द तेरा सतरूप। बिषन विरंच धरें ध्यान सरूप।।
तूँ किरपाल जब किरपा कीनी। मूढ़मती की दुबधा छीनी।।
माँगूँ नित ये ही सार। साची कीरत दीजो करतार।।
मंगल होये मन शान्त समाई। घट घट देखूँ तेरी प्रभताई।।
पूरन सेव कराँ दिन राती। निश्चल ध्यान धरूँ परभाती।।
परगट चरन की सेव कमाऊँ। दीनदयाल दीजो सत थाओं।।
एह मन चंचल अत ही घनेरा। पूरन किरपा से हरो बखेड़ा।।
साची प्रीत से सरनी आया। लज्या राखें तूँ पूरन प्रभराया।।
इस मन को दीजो विश्वासा। साची प्रीत करे चरनी वासा।।
बारम्बार माँगूँ ये भीख। किरपासिन्ध दीजो ये दीख।।

प्रभ के चरन पुकारयो, सो वड है दातार।(979)
'मंगत' माँगे नाम रस, प्रभ पूरन किरपाधार।।34

एक साहब का रख विश्वासा। पूरन होवे जग में आसा।।
साची कीरत नित नित भाख। पार पुरख की रसना चाख।।
परले पार सो आप समाई। ऊँच से ऊँची साहब वडयाई।।
नित ही तिसकी सेव कमाओ। दुर्मत जाल से मुक्ता पाओ।।
प्रभ जी दाता परम दातारी। दीन दु:खी का संकट टारी।।
सदा दयाल सदा किरपाल। जो जो सिमरे होये निहाल।।
नित परकाशे पिंड आकार। साखी पुरष सो सरजनहार।।
नित प्रतिपाल करे सब जीयाँ। पूरन पुरष ठाकर सुख थीयाँ।।
नित ही तिसकी करो अरदास। मोह भरम काटे जम फाँस।।
नित ही तिसकी टहल कमाओ। पल पल आज्ञा मन माहीं ध्याओ।।
सो करतार सरब परकाशी। पूरन चित्त नित चरन उपासी।।
अन्तर आप बाहर भी सोई। सर्वज्ञ रूप सरब समोई।।
जल थल पवन पावक आकासा। सबको कीजे साहब परकासा।।
सब कुछ करके रहे न्यारा। सत ठाकर का अजब पसारा।।
गुनी मुनी तपीजन हारे। तेरी महमा का पायो ना पारे।।
वाह वाह खेल ये अजब रचाई। आपे ठाकर आपे वरताई।।
तेरी तुझको होवे डण्डौत। पूरन पुरख तेरी नित ओट।।
साची प्रीत दीजो सत सेव। पूरन पुरख तूँ देवन देव।।
सब परताप अपना दिखलाओ। बिछड़े जन को चरन मिलाओ।।

पूरन किरपाधार तूँ, साहब दीनदयाल।(980)
'मंगत' की बिपता हरो, पल में करो निहाल।।35

तूँ ठाकर सरब सुखरासी। नाद सरूप तूँ ही अबनासी।।
घट घट व्यापक अन्तरयामी। पूरन पूर तूँ ही बिसरामी।।
जगत है खेत तू रूप किसाना। लख चौरासी सब जन्त उपजाना।।
आप रखया करे प्रतिपाल। सरब स्वामी तूँ आप दयाल।।
अदभुत जंतर माया का धारी। जाननहार तूँ ही दातारी।।
माँगूँ नाम चरन की सेवा। होवो दयाल देवन के देवा।।
तूँ अबनाशी चराचर पूर। समरथ पुरष तू आप हज़ूर।।
अनमत जीव की देखें किरया। बख़्श देवें जो सरनी पड़या।।
तेरी महमा तूँ जाने आप। अपरम अपार तेरा परताप।।
तूँ सत ठाकर किरपाधारी। मूरख जन का संकट टारी।।
पूरन पुरख परमेश्वर मेरे। नित सरनागत हूँ चरनी तेरे।।
परम वडयाई अपनी प्रभ दीजो। भाओ भगत से मन को सीजो।।
तेरी ओट तेरा आधार। तूँ ही तूँ सरब दातार।।
अन्तर सिमरूँ बाहर ध्याऊँ। पूरन प्रीत जस तेरा गाऊँ।।
अन्धकार विनास चानन घर कीजो। मूढ़मती को रसना सत दीजो।।
अनखुट भण्डार का तूँ भण्डारी। दीजो दान ग़रीबी सारी।।
निमख निमख तेरी कीरत गाँवाँ। तन मन वार तेरे चरन ध्यावाँ।।
तूँ किरपासिन्ध होवें किरपाल। परगट होके करें निहाल।।
ठाकर साचा नित तोहे पुकारूँ। जल थल अन्दर तोहे इक निहारूँ।।

एको प्रीती चरन की, जिस जन अन्तर ध्याई।(981)
'मंगत' सो निस्तर भये, नाद पुरख घर पाई।।36

तूँ ही दाता सरब रखवारी। जगत खेल ये रची फुलवाड़ी।।
आपे सबकी बनत बनावें। आपे सकला खेल खिलावें।।
गिना ना जाये तेरी महमा का अक्षर। सरब भरपूर तूँ सरब का ठाकर।।
अनमत जीया तुद दर आया। राख लें साहब सुखराया।।
भगती दान माँगूँ नित नीत। सुकृत कीजो ये मूढ़ा चीत।।
तुध बिन दूजा नहीं चित्त आवे। अनन प्रीत मन माहीं समावे।।
पलक पलक जस तेरा गाऊँ। केवल चरन आधार लखाऊँ।।
आठ पहर सिमरूँ इक रंग। अधिक प्रेम पाऊँ सुख संग।।
कर किरपा पूरन प्रभ देवा। मूढ़मती करे निर्मल सेवा।।
दीन ग़रीबी मन रहे समाई। सरब जीवों में तूँ इक दरसाई।।
ये ही भीख दीजो प्रभ पूरे। छिन छिन रहे चित्त चरन हज़ूरे।।
निर्मल नाम का गाऊँ गीत। सत ठाकर दीजो परतीत।।
तेरा खेल तूँ ही नित खेलें। बिछड़े जन को प्रभ आपे मेलें।।
पूरन शकत दीजो इस चीत। निस दिन गावे तेरा प्रभ गीत।।
तूँ ही तू जग जीवन देखा। उतपत परलय सब तेरा लेखा।।
मन की भरमन करो प्रभ दूर। निस दिन गाऊँ तेरा नाम हज़ूर।।
नाम तेरे की रहे चित्त भूख। मोह विकार हरो सब दू:ख।।
तेरी महमा मन तन समाये। रोम रोम तेरा जस गाये।।
तेरा रूप बसे चित्त माहीं। कर किरपा तूँ पार गोसाईं।।

सरब शक्त दातार तूँ, दाता दीनदयाल।(1007)
'मंगत' माँगे नाम रस, प्रभ जी हो किरपाल।।37

तूँ ठाकर मैं तुमरा जीया। नित नित तेरे चरन रमीया।।
भाओ भगत मोहे दीजो स्वामी। हरो विकार प्रभ अन्तरयामी।।
तूँ भयो दाता हम भयो भिखारी। माँगूँ भीख सत सेव निर्धारी।।
तुच्छ बुद्धी को निर्मल कीजो। अपरम ज्ञान प्रभ अपना दीजो।।
सेव सेव चित्त करूँ निहाल। इक भरोसा रहे चित्त चरन दयाल।।
नित नित माँगूँ पदारथ नाम। अन्तरगत नित पाऊँ बिसराम।।
भया दीवाना तेरे प्रेम के रंग। दीनदयाल रहो अंग संग।।
ना कोई थाओं ना रास है कोई। निहथावाँ तेरे दर खलोई।।
बख़्श देवें तूँ सतगुर मेरे। जनम जनम के घने बखेड़े।।
किसको कहूँ करूँ पुकार। तुध बिन मेरा नहीं कोई रखवार।।
साची टेक माँगाँ नित हज़ूर। तूँ समरथ ठाकर भरपूर।।
मन की हिकमत सकल विनासे। दीन ग़रीबी तेरे चरन उपासे।।
आज्ञा तेरी मन तन समाये। बख़्शनहार तूँ ही प्रभराये।।
मेहर करो प्रभ कीजो दाया। चरन कँवल रहे हिरदे समाया।।
मिथ्याकार सब वासना जाये। रुच रुच जीया तेरे चरन समाये।।
बन्धन काट जन करो निहाल। पततपावन तू नित किरपाल।।
लाख चौरासी जन्त प्रगटाये। सरब प्रतिपाल बिशम्भर राये।।
करें अरदास देव मुनीशा। अपरम कौतक तेरा जगदीशा।।
अपनी चरनी मेल मिलाओ। टूटा निहों प्रभ तोड़ निभाओ।।

तेरे चरन प्रीती मन रसे, मिट जायें संशे सूल।(1008)
'मंगत' सुरती मगन होये, इक पलक ना पावे भूल।।38

पलक पलक प्रभ चरन चितार। मोह माया की उतरे खार।।
कारन करता सो ही जगदीशा। सिमरन कीजो सब मिटे कलेशा।।
पूरन दाता सो दातारी। सरनागत की तपन निवारी।।
जो तूँ अपना जीवन सुख चाहें। सत ठाकर की सरनी जाएँ।।
जाँ पर संकट आयो मीत। करे उद्धार प्रभ परम सुखरीत।।
अपने जन की रखया करे। दुःख रोग सन्ताप सब हरे।।
ध्रुव प्रहलाद की बिपता हरी। अनंक जियाँ के संकट टरी।।
सत प्रीती जिस प्रभ नाम ध्याया। खेम कुशल आनन्द घर पाया।।
जगत पदारथ सब दुःखदाई। देखन में जो सुख रूप दिखाई।।
मन नहीं तृपते भोगे बहु भोग। तृष्ना लागा अधिक चित्त रोग।।
सत परमेश्वर की जिस ओट विचारी। सो जन हरे वखेपत सारी।।
प्रभ दाता प्रभ सरब समरथ। प्रभ की प्रीत सब हरे कुपथ।।
निर्मल शोभा अन्तर विचार। सत दाते का हो भिखार।।
निर्मल जीवन जग में पाएँ। जनम जनम के ताप मिटाएँ।।
साची सिखया संतन फ़रमाई। सतनाम सिमर परम सुखदाई।।
निर्मल मनुआँ तब ही नर होए। दृढ़ विश्वास प्रभ नाम परोए।।
शान्त पावे तब औगुनकारी। जो चित्त आवे सत सेव आपारी।।
महमा गाओ रसना नित पीयो। प्रभ के नाम में नित ही जीयो।।
सो ही दयाल सब औगन हरी। निर्मल चित्त जो सरनी पड़ी।।

प्रभ दाता दातार है, तू नित हो भीखार।(1036)
'मंगत' भिखया नाम की, जीव का करे उद्धार।।39

मन बाँछे प्रभ कीरत तेरी। दात करो ये वस्त घनेरी।।
तेरी ओट रहे तेरा आधार। महमा तेरी चित्त आवे विचार।।
नाम तेरे की नित भूख रहाये। दरस तेरे में चित्त ललचाये।।
ध्यान तेरे में रहूँ लवलीन। सत कीरत करुँ अन्तर चीन।।
जब उचराँ तब तेरा नाओं। सत परसंग तेरा चित्त लाओं।।
तेरी महमा का सुनूँ विवेक। जल थल परसूँ तेरी शोभा एक।।
सब जीवों में तोहे पछानूँ। सेव करूँ हिरदे सुख मानूँ।।
सकली किरया देखूँ तेरे आधार। चराचर में सत तूँ भरतार।।
जुग जुग जाये पलक के रंग। आरूढ़ ध्यान माँगूँ सतसंग।।
मोह माया पर विजय लखाऊँ। घट घट तेरा दर्शन पाऊँ।।
मन सलाहे तेरी वडयाई। दात करो प्रभ पार ज्ञाई।।
अकथ कथा चित्त रहे समाई। सुरत निरत तेरी प्रीत कमाई।।
बाहरमुखता भरम विनासे। अन्तरमुख हो करूँ बिलासे।।
अनखुट ज्ञान अनुभव विचारूँ। निर्मल प्रीत शोभा चित्त धारूँ।।
जीवत में संग वास कराऊँ। अन्त समय तुध रूप समाऊँ।।
ऐसी दात करो दातार। माँगनहार खड़ा दरबार।।
पूरन सेवा सबने पाई। तुध दरबार जो माँगन आई।।
अबकी बारी तोड़ निभाओ। करूँ अरदास सुनो प्रभराओ।।
दया करो प्रभ अत किरपालू। साची भगती तेरे चरन दयालू।।

माँगूँ भगती दीखया, तुध दर भया भिखारी।(1040)
'मंगत' तेरी दात से, नित जाऊँ बलिहारी।।40

पूरन पुरख तूँ ही अबनासी। पल पल मन में करूँ उपासी।।
अपनी दात करो दातार। ये मन सिमरे तेरा नाम अपार।।
तूँ ही तूँ सब ताप मिटावें। सत भगवन्त सतनाम लखावें।।
जग जीवन में सार लखाऊँ। सुकृत काज जपूँ तेरा नाऊँ।।
अखण्ड परीती चरन चित्त ध्यान। महमा तेरी नित करूँ बखान।।
नित बलहार जाऊँ तेरे रंग। नित नित रमूँ तेरे प्रभ संग।।
तूँ परमेश्वर किरपाधारी। मनमुख जीव की हरो ख़वारी।।
बन्धन काट माया का जाल। परम शकत पाऊँ नाम कमाल।।
तेरी बन्दना मन चित्त में आये। दात करो प्रभ केशवराये।।
साकत जन की कर खबरगुज़ारी। डूबा जाये विच भरम अन्धकारी।।
हरो विकार इस मूरख जीया। पततपावन तूँ पुरख कन्हैया।।
तन मन अरपूँ तेरे सत चरना। दीनदयाल हूँ तेरी सरना।।
मूढ़मती के बन्धन काट। तुध दर माहीं कछु नहीं घाट।।
अनन प्रीती दीजो सत सेवा। पल पल सिमरूँ नाम सुखदेवा।।
आप त्याग तेरी कीरत गाऊँ। सरब माहीं तेरी जोत लखाऊँ।।
आप त्याग जपूँ सतनाम। साची सेव पाऊँ निष्काम।।
आप त्याग करूँ अरदास। दीनदयाल काटो भ्रम फाँस।।
आपामत दुर्मत ये जाये। निमख निमख तेरे चरन समाये।।
पूरन किरपा औगन सब हरो। सुकृत नाम हिरदे में धरो।।

नाम दीपक परगासयो, प्रभ जी अन्तर माहीं।(1053)
'मंगत' दुर्मत त्याग के, नित तेरे चरन समाईं।।41

आदी देव तूँ ही समराथा। पूरन पुरख नाथन के नाथा।।
नित करूँ अरदास स्वामी। बिपत हरो प्रभ पारगरामी।।
निश्चल कीजो ये चंचल जीया। पूरन पुरख तूँ सरब रमीया।।
तेरी कीरत पल पल धारूँ। नित भिखारी प्रभ तोहे पुकारूँ।।
दर कूकर की रज दीजो स्वामी। भगतवत्सल तूँ पारगरामी।।
अनेक जियाँ के संकट टारे। बिपत माहीं केते निस्तारे।।
मूढ़-जनाँ को सुकरत कीना। साची सेव चरन की दीना।।
तेरी दात का नहीं शुमार। पूरन होये जो आये द्वार।।
अनमत तेरी सरनी आया। राख लें प्रभ पूरन राया।।
तेरे दर की रजनी अपारी। औगन भरया मैं नित भिखारी।।
प्रभ जी होवो नित दयाल। औगनहार को करो निहाल।।
सत विश्वास पाऊँ प्रभ देवा। अटल ध्यान करूँ नित सेवा।।
तेरे प्रेम में मगन समाऊँ। दुस्तर जाल ना चित्त लख पाऊँ।।
तेरे चरन की रहे परीती। मन ना बाँछे करम पलीती।।
तेरे प्रेम की चढ़े खुमारी। भूख प्यास सब दोख निवारी।।
तेरे प्रेम में जाये दिन रैना। निर्मल प्रीत पाऊँ चित्त चैना।।
सकली कल्पना मन की नासे। अधिक प्रेम तेरा परगासे।।
खावन पीवन सकल ब्यौहार। चरन कँवल चित्त रहे विचार।।
मीन नीर ज्यों प्रीत कमाई। एह बिध मन तेरे चरन समाई।।

अनन भगती प्रभ चरन की, मन तन माईं समाये।(1054)
'मंगत' दुबधा सब मिटे, जन पूरन रूप हो जाये।।42

तूँ ठाकर सरब सुखरासी। दीनदयाल काटो भव फाँसी।।
नमों नमों तोरे चरन अपारी। पूरन पुरख तूँ किरपाधारी।।
सत सील संतोख मोहे दीजो। निर्मल कीरत प्रभ चरन की सीजो।।
सतसंगत सत सेव विचारूँ। दीनदयाल तेरे चरन पधारूँ।।
आनन्दकन्द मूरत बसे चित माहीं। एक पलक चित्त विसरे नाहीं।।
स्वारथ बुद्ध हरो बिख सार। पर का हेत चित्त करूँ विचार।।
बाहरमुख की भरमन नासो। अन्तरगत चित्त माहीं परगासो।।
सेव सेव नित प्रीत बढ़ाऊँ। तन मन वार के तोहे मनाऊँ।।
सच थाओं तेरा निश्चय में आवे। साची कीरत तेरी चित्त पावे।।
तेरी आज्ञा चित्त प्रीत कमाए। निर्मल ज्ञान दीजो प्रभराए।।
अन्तर परगट देखूँ तोहे। तूँ परतख देवें सुख मोहे।।
हम तुम बीच भेद ना रहाई। नीर तुरंग ज्यों नीर समाई।।
कीट रूप ज्यों भृंग पधारी। एह बिध प्रीत चरन चितारी।।
सब ही तेरा खेल मैं देखाँ। अत परताप तेरा मैं लेखाँ।।
करो बख़्शीश देवन के देवा। अनन प्रीत पाऊँ चित्त सेवा।।
तूँ परम दयाल जुग जुग सहाई। अपने जन की पैज बढ़ाई।।
तुध सरनागत जो जन आई। मनबाँछत सो ही फल पाई।।
पूर मनोरथ विगन निवारी। तूँ ठाकर नित किरपाधारी।।
अपने जन की करी वडयाई। भरम निवार निज चरन मिलाई।।

तुद तुल दाता ना कोये, जो मन की बिपत निवार।(1102)
'मंगत' तुम सरनागती, पाई परम सुख सार।।43

दीन अनाथ सरन तेरी आयो। दीनदयाल सुख सार लखायो।।
तेरे दर्शन की मैं अधिक प्यासी। हरो विखाद करुँ चरन निवासी।।
तेरी महमा का तूँ ही स्वामी। भगत वत्सल तूँ पारगरामी।।
रिखी रिखीशर नबी अवतार। कोटाँ कोट करें पुकार।।
साचा आप सच तेरा दरबार। तेरी दात तों जाऊँ बलहार।।
सन्मुख होके प्रभ दरस दिखाओ। दुर्मत भेद भरम उड़ाओ।।
पततपावन तूँ नाम धराई। अपने नाम की राख वडयाई।।
अनमत जीव पर होवो दयाल। पूरन पुरख तूँ सरब रछपाल।।
रंचक गुन अन्तर में नाहीं। क्योंकर रिझाऊँ तोहे पार गुसाईं।।
निहमानयाँ का मान तू राखें। सरन पड़े की बेनती भाखें।।
सच दरगाह ऊँची सरकार। करूँ अरदास तेरे दरबार।।
भरमत जीव की भरमन टारो। जनम मरन का ताप निवारो।।
अपने धाम में दीजो बिसरामी। भगत कमाऊँ निर्मल निष्कामी।।
पलक पलक में करूँ पुकार। प्रभ दाते तुम करो दातार।।
और कोई ना थाँ मुकामा। खोजत खोज फिरा निहथामा।।
पल पल करूँ प्रभ जी अरदास। सरनागत की हरो प्यास।।
साची कीरत दीजो सुखदाई। जुग जुग महमा रहे चित्त समाई।।
पूरन भाग मेरे हैं जागे। साचे साहब के चरनी लागे।।
करी अरदास चित्त प्रीत लगाए। विगन विनास घर मंगल पाए।।

पूरन प्रभ का मेल भयो, मिट गये सब संताप।(1103)
'मंगत' रसना नाम की, पल पल कीनी जाप।।44

मन मेरे की दुबधा काट। दीनदयाल पुरख सुखदात।।
ज्ञान ध्यान कछू नहीं पाया। जप तप योग नहीं हिरदे आया।।
दान पुन्न ना तीरथ नहाई। ना विद्या ना कीरत गाई।।
ना कोई जतन यथारथ कीना। ना कुछ सूझ बूझ को लीना।।
जाप ताप नहीं किरया जानी। तुद परताप नहीं कियो पछानी।।
ना सत सिखया हिरदे पाई। ना रसना तेरी पल गाई।।
ना प्रीत ना सेवा जानी। काल करम नहीं कियो पछानी।।
अपना जनम मरन नहीं जाता। अर्थ यथारथ नहीं पछाता।।
दीन ग़रीबी नहीं हिरदे आई। मान गुमान में औसर जाई।।
एक पलक नहीं कियो विचारा। कौन मेरा सत सरजनहारा।।
कह कारन इस जग में आया। अन्तकाल किस थाँ समाया।।
पशु समान सब औध गँवाई। अब होवत क्या मन पछताई।।
रंचक गुन नहीं हिरदे पायो। सत ठाकर कैसे हरखायो।।
दीनदयाल आपे किरपाल। अनमत कूकर को करे निहाल।।
अपनी किरपा करे किरपालू। अपनी दात प्रभ करे दयालू।।
तब कुछ जीवन काज हो जाई। प्रभ दाते की जाऊँ सरनाई।।
अपरम अपार तूँ सरब स्वामी। राख लें जन अन्ध निहथामी।।
भाओ भगत अपनी चित्त दीजो। मेहर करो रसना सत सीजो।।
अनन भगत माँगूँ सुखरीत। दात करो प्रभ परम पुनीत।।

सत ठाकर के चरन को, नमों नमों चित्त माहीं।(1201)
'मंगत' करे उद्धार प्रभ, पूरन पार गुसाईं।।45

सतपुरषों की धूड़ रमाऊँ। जिससे कीरत तेरी पाऊँ।।
मुनी सनकादक धरें ध्याना। नारद शारद करें बखाना।।
कपल कनाद व्यास विचारी। सिद्ध रिखीशर सत लेख को धारी।।
मुनी वशिष्ट भुसुंड ध्यायें। लोमस पल पल सेव कमायें।।
सत सरूप निरंजन आप। कोट मुनी नित करते जाप।।
सब पर किरपा तेरी देव। पूरन कीनी तिनकी सेव।।
होये दयाल प्रभ दरस दिखायो। मोह भरम का ताप मिटायो।।
नित ही नित चरन बलिहारी। तेरी महमा अपरम आपारी।।
सबको सुकृत भेद लखाया। अबनाशी तत्त परगट दिखलाया।।
अपने जन को कीरत दीनी। साची सेव तेरी चित्त चीनी।।
जुग जुग महमा करें विचार। तेरी कुदरत नित बलहार।।
रंचक भेद तेरा नहीं पाया। कह बिध साहब खेल रचाया।।
तूँ प्रभ दाता अधिक आपारी। इस कूकर को दे निस्तारी।।
चेतन पुरष अगम अनाद। तेरा खेल प्रभ अत बिसमाद।।
क्या गिनूँ तेरी वडयाई। कथ कथ थाके लेख अगाही।।
तेरी सिफ़त अधिक बखानी। जती तपी तत्तवेते ज्ञानी।।
तिनसे महमा नहीं तेरी बन आई। अनमत कूकर क्या करे वडयाई।।
पूरन पुरख सरब का स्वामी। खेलें खेल तूँ अन्तरयामी।।
अपने आप में परिपूर समाई। जो जो पूजे सो गत पाई।।

पूरन भाग तिस पुरख का, जिस शोभा प्रभ की गाई।(1289)
'मंगत' नित बलिहार जाऊँ, प्रभ तेरी अत वडयाई।।46

जैसी जिसने प्रीत कमाई। किरपा करके दीनी वडयाई।।
कोई गुरू कोई भयो आचारी। कोई पैग़म्बर कोई अवतारी।।
कोई सिद्ध नित मौन रहाई। कोई ज्ञानी तत्त भेद समझाई।।
कोई योग मारग को साधे। कोई भगती मन से आराधे।।
कोई मन में धरे विवेक। करें विचार एक अनेक।।
कोई जाये बीयाबान निवासी। करे तपस्या चरन उपासी।।
कोई चित्त से करे उपकार। सब में देखे रूप तुम्हार।।
कोई वेद ग्रन्थ विचारी। कीरत तेरी अन्तर धारी।।
कोई अन्तर नाम ध्याई। कोई बाहर साखी गाई।।
सबने जस तेरा प्रभ गाया। अपरम आपार परमेश्वर राया।।
सब जगत को तेरी ओट। राजे राने जपें नित भूप।।
बख़शनहार तूँ ही आपार। सरब जियाँ का करें उद्धार।।
नित ही तेरी सरनी आया। कर किरपा पूरन प्रभ राया।।
महमा तेरी अपरम आपार। तेरी कीरत तों बलहार।।
सबमें रहे तूँ ही भरपूर। राखनहार साहब हज़ूर।।
सबने कीरत तेरी गाई। सबने करी तेरी वडयाई।।
अन्त ना पारावार तुम्हार। सत सरूप तूँ सरजनहार।।
अपनी किरपा करो किरपाल। साची भगती करूँ नित भाल।।
बादमुबाद निकट नहीं आये। समता भाव की रसना खाये।।

एक साहब को सिमरते, देवी देव अनन्त।(1290)
'मंगत' महमा गाईये, तिस आद पुरख भगवन्त।।47

पूरन पुरख जाऊँ बलिहारी। किरपासिन्ध तूँ ही बनवारी।।
सरब जीयाँ का तूँ ही दाता। अनंत शकत तूँ ही समराथा।।
तेरी महमा अपरम आपार। तूँ ही सरब जियाँ आधार।।
तूँ ही पसरें सरब के माईं। सरब न्यारा तू हीं गुसाईं।।
देवी देव पूजें तुध एक। अबगत साहब तेरा है लेख।।
सरब जगत तेरा परताप। तेरी महमा हरे सन्ताप।।
तेरा सिमरन केवल मूल। तेरी शोभा पलक नहीं भूल।।
तूँ ही पूरन का पूर। नाद सरूप तूँ ही हज़ूर।।
तृन तृन तेरी शोभा गाये। तेरी महमा आपार अथाये।।
जुग जुग जोगी धरें ध्यान। जुग जुग ज्ञानी करें बखान।।
नहीं लखया जाई तेरा पासारा। अपरम आपार पुरख निरधारा।।
भाओ भगत कर सेव कमाऊँ। पल पल तेरा नाम ध्याऊँ।।
माँगूँ दात ये ही दातार। पलक ना विसरें तूँ सरजनहार।।
नित ही कीरत तेरी चित्त गाये। अन्तर प्रीत दीजो प्रभ राये।।
शुद्ध सरूप करो परगास। भरम अन्धकार का होये विनास।।
माया भरम जाये दु:ख सार। सिमरूँ नाम पाऊँ जयकार।।
तूँ दाता अनखुट भण्डारी। दीजो शोभा चरन आपारी।।
दूजा भाओ चित्त का बिसराये। एको रूप तेरा दरसाये।।
नीर तुरंग ज्यों मेल मिलाई। एह बिध पावाँ तेरी सरनाई।।

पारब्रह्म परमेश्वर, घट घट जाननहार।(1371)
'मंगत' माँगे रसना, सत सरूप आपार।।48

चेतावनी वाणी

जीवन में ही खोज लो, अपना निर्मल धाम।
बादमुबाद त्याग कर, सतसंग में लो बिसराम।।
दुस्तर माया जाल है, बड़े गुनी गए हार।
जिन जनम सोये कर खोयो, तिन का क्या शुमार।।
सत पुरषारथ राखयो, जब लग प्रान की धार।
जीवन में बहु सुख मिले, आगे सुख आपार।।
नित रमयो सतसंग में, और सतनाम प्यार।
अनक विगन सहजें गए, सुन सत ज्ञान विचार।।
जो बीजे सो काटना, एह निश्चय कर मीत।
बिख बीजे बिख पाईये, सुन साहब की रीत।।
ऐसा बीज ना बीजियो, जो काटन में दु:ख देत।
करम रेख अटल है, सुन साचा विवेक।।
गुनी मुनी नहीं छूटते, जो बीजा सो खाए।
ताँ सों नर विचार के, साचा करो उपाए।।
सुत दारा धन लच्छमी, और बड़ा इक़बाल।
अंतकाल ना सँग कोए, नैनों देख अहवाल।।
पाप पुन्न जो कुछ किए, सो जीव के साथ।
मिले सज़ा अनकूल तिन, राई वाध ना घाट।।
सोना मनों विसार के, उठ जीवन को सँभाल।
जो करना सो कर लियो, गरज रिह्या सिर काल।।
पीर पैग़म्बर औलिया, राजा राना मीर।
काल सभी को खा गया, देखत ना सरीर।।
ये समय की मौज है, उठके नाम चितार।
स्वाँस स्वाँस चल जात है, जाँ का मोल अपार।।

हाड़ माँस का पिंजरा, अन्तकाल होए राख।(44)
'मंगत' समाँ विचार के, नित मारग साचा भाख।।49

आपामती त्याग के, नित मारग ज्ञान विचार।
नित ही प्रभ के नाम की, निर्मल कीरत धार।।

जग रचना ये अचरज खेला, इस्थिर रहे ना कोई।
राजे राने गुनी सयाने, नित काल के चक्कर फिरोई।।

देह सुन्दर छिन राख भई, नहीं चली कोई तदबीर।
आस अंदेसा ना गया, नर रोवत जाए आख़ीर।।

होवें निमाने अन्त को, जिन सिर छतर झुलंत।
सब ही बाज़ी हार गये, बिन सिमरे भगवन्त।।

छाया सम प्रीती पाई, इस मिथ्या जग में आये।
संग सखा ना कोई भयो, जब झूला काल झुलाये।।

नौबत है दिन चार की, गुनी जन लियो बजाये।
इक दिन चलना होयेगा, साजन नाँगे पाये।।

छाड कपट के भेख को, नारायन धर चीत।
निर्मल संगत में रमो, गायो प्रभ के गीत।।

साचा सरजनहार सो, नित आनन्द सरूप।
अंतर चित्त में ध्याईये, छाड कल्पना कूप।।

दीन दु:खी की सेव में, दृढ़ कर राखो चीत।
आज्ञा माने साहब की, भव जल पावें जीत।।

हिरदे नाम बखानिये, सुनिये सतगुर बोल।(1668)
'मंगत' शबद समाईये, मिटे चौरासी ख़ोल।।50

दुस्तर रचना जगत की, कोई पारावार ना पाई।
अनंक जतन कर गुनीजन हारे, नहीं निरना सार लखाई।।

ओढ़क तत्त विचारया, शान्त रूप भगवन्त।
घट घट बासी आनन्दमूरत, नित नित नाम जपन्त।।

नाम बिना ना थाहे कोई, ना कोई पावें ठौर।
मन की भरमन जगत ये, नित राखे अत दौड़।।

जेती मन में कल्पना, एता जग बिस्तार।
मूढ़ अर्थ ना पा सके, नित बाज़ी जूए हार।।

मन मनोरथ नित नये, तृषना उठें तुरंग।
भरमे अनमत जीवड़ा, धर दुर्मत माया संग।।

क्रोध अगन परचंड होवे, जीव जले दिन रात।
माया मोह के भरम में, नित ही फिरे अनाथ।।

लाख करोड़ी संचत करी, मन नहीं आया धीर।
चार कुण्ट उठ धाँवदा, रहे आठ पहर दिलगीर।।

माया भरम अंधकार में, औध गई सब बीत।
रंचक मिली ना शान्ती, सब झूट भई परतीत।।

ना साजन की सीख सुनी, ना निज मन किया विचार।
जग सुपने में आए के, नहीं परसी सुख सार।।

मिथ्या मान ग़ुमान में, उठ चला निरासा अंध।(1669)
'मंगत' प्रभ के नाम बिन, नहीं चूके जम की फन्द।।51

निर्भय कभूँ ना नर होये, बिन आतम राम पहचान।
देह ममता के मद्ध में, फिरे चौरासी खान।।

करम का बन्धन अत पाये, नित भोगे बहु भोग।
बिना तत्त विचार के, नित ग्रसयो दीरघ रोग।।

बिन संगत सतपुरष की, नहीं तत्त सार लखाई।
माया की भरमन माहीं, सब जीवन दियो बिताई।।

अन्त को रोवत क्या बने, नहीं जीवत करी सम्भाल।
ना प्रभ दाता सेवया, ना सत घाली घाल।।

आस संदेसा ले चला, अन्त को जीव अन्जान।
दुःख सुख करनी का पाए, बहुरंग जून पछान।।

ये रचना संसार की, उठके गुनी विचार।
परमारथ की प्रीत में, तन मन दीजो वार।।

सत मारग पहचान के, नित ही खेलो दाओ।
परसें आनन्द ठौर को, अखण्ड शबद सुखराओ।।

मानुष देह की कीरती, जो चित्त नाम समाये।
सत स्वामी की सेव में, पल पल घड़ी विहाये।।

अपने घट में सोधिये, सरब जगत का ईश।
नित ही निर्मल ध्यान में, पाईये नाम संदेश।।

पूरन सेवा पाये के, हरजन भये निहाल।(1670)
'मंगत' मिली सत शान्ती, प्रभ पाया दीनदयाल।।52

सतनाम हिरदे जपो, सत सेवा चित्त धार।
पावें दीरघ शान्ती, जो मन से करे विचार।।

सरब रसों में रस भरे, सबमें करे पसार।
अजर पुरख परमात्मा, पल पल हिये चितार।।

बिपता तेरी सब मिटे, आनन्द जीवन पाये।
दीनदयाल प्रभ सिमर लो, जो पल पल होत सहाये।।

सब कुछ साहब दात है, धन माल इक़बाल।
सिमरो भाओ प्रीत से, सरब नाथ गोपाल।।

भवजल दुस्तर अपार है, बिन सिमरन दु:ख पाये।
अधिक सयानफ़ मन धरी, अंत निरासा जाये।।

सखा संग ना को होये, अंत चलन की बार।
एको जप नारायन को, जो देवे सुखसार।।

अन्तर तेरे वसदा, नित अमरत की खान।
तीन काल सुख देत है, नहीं मूढ़ा करे पछान।।

सत साधू के मेल से, अंतर की गत पायें।
गुपत रूप परमात्मा, तीन काल दरसायें।।

पाप करम सब दूर हो, मन आवे उपकार।
केवल प्रीती सतनाम की, मन में करो विचार।।

कलह कलेश सब मिटे, अमरधाम को जाये।
नित प्रीती सतसंग में, गोबिन्द के गुन गाये।।

करता हरता जान के, हर चरनी चित्त धार।(477)
पावें पद निर्वान को, 'मंगत' करी पुकार।।53

सोवत समाँ ना खो गुनी, उठके लेख विचार।
विच मुसाफ़त आये के, सत मारग लख सार।।

मिथ्या भरम ये जीव को, तीन काल भरमाये।
बिन सतसंग ना छूटिये, कोटक करें उपाये।।

मानुष जनम को पाया, उठ साचा अर्थ विचार।
छिनभंगुर सब जाल है, क्यों भरमें अंधियार।।

पारब्रह्म प्रभ सिमर लो, पावें इस्थित धाम।
दुर्लभ जीवन जगत में, हर भगती बिसराम।।

माया के अभिमान में, नित प्यासा जाये।
भरम की लागी दूषना, कोट जनम भरमाये।।

करम भोग की इच्छया, कभूँ ना पूरन होए।
दिवस रैन रुत मास में, परचंड कित गुन होए।।

आसा ले के जनमिया, आसा में औध गँवाए।
जरा जवानी बालपन में, नानाँ खेल खिलाए।।

करम रूप जंजाल ये, पल पल रूप वटाये।
छिन सुखिया छिन दुखिया, नहीं पलक शान्त चित्त आये।।

क्या राजा क्या भिखारी, क्या पण्डत गुनवंत।
ऐसे भरम ग़ुबार में, तीन काल भरमंत।।

सुख के जतन बहु करें, कोटक करें तदबीर।
बिन सिमरे प्रभ नाम के, रोवत जायें आख़ीर।।

सत सरूप की खोज कर, जो मन को देवे शान्त।(478)
'मंगत' करम की दूषना, ये दीरघ जीव भरान्त।।54

आलख शबद विचार कर, जो सरब जियाँ आधार।
साचे गुर की सीख से, उतरें भवनिध पार।।

सदा अजन्मा नित परिपूरन, सो ठाकर निरधार।
मनमुखता को छोड़ के, जप लो बारम्बार।।

साची सिखया जगत को, सत हुकम करतार।
जो चाहें सत शान्ती, सतनाम चित्त धार।।

औगनकारी मन ये, नित रहे तुम्हारे पास।
संकट से कैसे छुटें, नित धारे बिख की बास।।

छिन धावे आकाश में, छिन सोधे पाताल।
मूरख जीव नहीं सूझता, पल पल प्रीती पाल।।

बिख अगन को भोगता, जल जल होये अंगार।
सत सीतल होवे नहीं, जुग जुग भरमें सार।।

मत भूलो इस दूत से, जो तीन काल भरमाये।
शमशीर पकड़ विचार की, नित तिस घात लगाये।।

मनमानी सब छाड के, भावी प्रभ विचार।
छिन छिन सिमरो सतनाम को, शान्त पायें अपार।।

देव मुनी नित गाँवदे, पततपावन सतनाम।
मन की बिपता सब हरे, जीव देवे बिसराम।।

समाँ अमोलक जान तूँ, मानुष देह जो पाये।
सतनाम प्रभ सिमर लो, घालन ये सुखदाए।।

सत सरूप भगवन्त है, परम आनन्द की खान।(479)
'मंगत' पल पल सिमर लो, जग जीवन लाभ पहचान।।55

सतनाम साहब का गाओ, जग जीवन लाभ विचार।
अन्तरयामी सरब का ठाकर, हिरदे माहीं चितार।।

उट्ठत बैठत सिमर लो, हरजन सेती प्रीत।
दुर्मत जाल सकल भ्रम नासे, हर चरनी लागे चीत।।

इन्द्री विखे विखाद से, मनुआँ छूटन पाये।
अन्तरगत हरनाम में, नित ही सेव कमाये।।

मन अपने को ठाक के, पकड़ो धारा नाम।
निस दिन सिमर प्रीत से, पावें दृढ़ बिसराम।।

मोह माया गुबार में, क्यों नर पाये पसार।
बन्धन निस दिन है घना, बिन सिमरन दु:ख सार।।

मान गुमानी बहु गुनी, अन्तकाल पछताये।
छाड चला जब पिंजरा, काल गरासत पाये।।

सहायक कोई ना हुआ, जब जम दीनी पीड़।
देख देख पछतावता, नैनों विगसे नीर।।

धरी धराई छाड के, उठ चलया नाँगे पाये।
संग सखा परिवार ना, होवत कोई सहाये।।

कूड़ कपट की पोटली, भारी सिर असगाह।
मारग दुस्तर चलया, कौन दिखावे थाह।।

जैसी करनी कर लई, होत सहाई अन्त।
मूरख छूट ना पाईये, बिन सिमरे भगवन्त।।

पल घड़ी प्रभ याद कर, जो तीन काल सहाये।(484)
'मंगत' तिसे विसार के, निहथावाँ जग से जाये।।56

अजर अमर अबनाशी गोबिन्द, सिमरो मन में नीत।
झूट जगत की कामना, और झूट जगत की प्रीत।।

निर्मल सुरती राख के, सतनाम लयो गाये।
यहाँ सुखेला नर बसें, आगे सुख अधिकाये।।

नाम का सिमरन जगत में, सकल मिटावे ताप।
पारब्रह्म परगट होवे, जो अन्तर कीजे जाप।।

सत करम विचार करे, सरब जियाँ संग हेत।
पाप करम की मैल को, धोवे नित्यानीत।।

चार दिनाँ दा जीवनाँ, देखे इस संसार।
सबसे प्रीती नित कर, नहीं दुरबचन विचार।।

परभाती सन्ध्या काल में, सिमरे नाम अखण्ड।
दु:ख सुख भावी राम की, परस पावें आनन्द।।

छाया रूप इस जगत से, मन को बाँधे नीत।
अन्तरगत नित सिमरिये, साचा नाम पुनीत।।

संकट सकले नाश होवें, प्रभ भगत चित्त आये।
ज्ञान विज्ञान की रसना, नित मन को तृपताये।।

सत करम को साध के, बाज़ी लीनी जीत।
पाप कूप मन का तजे, हरजन सेती प्रीत।।

अपना सुख त्यागिया, पर को नित सुख देत।
सतनाम हिरदे जपें, ले सतगुर परतीत।।

मारग धरम पहचान के, जीवन भयो सुख रूप।(485)
'मंगत' धरम विचार से, मिले अबगत शबद अनूप।।57

निर्भय रूप नारायन का, संताँ किया विचार।
जो जो सिमरे प्रीत से, पावे मोख द्वार।।

मिथ्या माया की रचना, तीन काल भय माईं।
उतपत परलय नित होवे, जीव को धीरज नाईं।।

बिनसनहारी वस्त जो, तीन काल दु:ख रूप।
बिन सिमरन भगवन्त के, सब ही भय सरूप।।

आवन जावन चक्कर ये, काल रूप संसार।
निर्भय एक भगवंत है, जो जनम मरन से न्यार।।

जिन्हाँ सच पहचानया, निर्भय पायो धाम।
मिटी जीव की भरमना, नित आनन्द बिसराम।।

साची सीख विचार के, सतगुर चरन पधार।
सतनाम की गत लखें, उद्धरें भवनिध पार।।

मनमानी सब छाड के, मारग पायें विवेक।
पल पल नाम विचारिये, राखिये प्रभ की टेक।।

जीव पाये सत शांती, मिटे गवन संसार।(486)
'मंगत' साचे नाम को, पल पल हिये विचार।।58

ज्ञान ध्यान की सार है, सतपुरख अलेख।
नित ही तिसके चरन की, राखो मन में टेक।।

मानुष देह का धरम ये, मन में आवे राम।
तजे आठ पहर का भटकना, जीव पाए बिसराम।।

सुत दारा धन जोबन, और बड़ा इक़बाल।
समाँ पाए छाड चले, सकली सम्पत माल।।

जिनाँ हर जस गाया, साचे मन प्यार।
दुर्लभ ते जन जगत में, अन्त भये निस्तार।।

दिवस रैन नर जात है, औध घटे नित नीत।
इक दिन देखें नैन से, जब गिरे ये बालू की भीत।।

इक दिन साजन चलना, ये छाड बागीचा संसार।
आगे धाम की ख़बर कर, जाँ निस्चे जायें पधार।।

आदी सत अंत भी सत, एको सो प्रभ जान।
रूढ़ा शबद अगम का, परदे माहीं पछान।।

शबद सार जिस गाई, मिल सतगुर विख्यान।
सो ही नर निर्मल हुआ, पाए शबद की तान।।

हिल मिल अंतर खेलयो, साचा शबद आगाध।(708)
'मंगत' एको ध्यान में, लागी प्रेम समाध।।59

सिमरन साचे नाम का, पूरन निर्मल योग।
अंतर का पट तब खुले, जब सतगुर होये संजोग।।

फिरे चौरासी धाम में, बहुत दुखिया ये जन्त।
करम की फाँसी तब गई, जब सिमरा नाम भगवन्त।।

उटठ्त बैठत सिमर लो, साचा नाम अगाध।
सिमरन ही के ज्ञान से, मिट गये सकल उपाध।।

मनुआँ कठिन कराल था, सहजे पाई जीत।
एको नाम की सिमरनी, धारी अंतर नीत।।

इस सागर संसार में, जो आया दु:ख पाये।
बिना शबद परतीत के, नित निरासा जाये।।

सत रूप भगवान का, एको ही नित जान।
बाकी झूट पसार है, माया गुन निधान।।

सो ही निर्मल होया, सो ही भये परसन्न।
एको साचे नाम का, जिसने पाया धन्न।।

बारम्बार विचारया, अन्त सखा ना कोये।
ताँ सो समाँ विचार के, नित नाम की मनी परोये।।

पूरन सिमरन नाम से, पूरन मनुवाँ होए।(709)
'मंगत' पूरन गुर मिले, तब सतनाम परोए।।60

जतन करत से रतन मिले, भव दु:ख होवे नास।
काल करम संसा जाये, निश्चल बुद्ध परगास।।

मन बानी दमना करे, पीवे शबद अमोल।
सहज भाए मन वश भया, मिटा करम दा खोल।।

ग्रन्थ कतेब नर बहु पढ़े, मिटा नहीं मन दा वेग।
ज्यों आये त्यों चले, आस निरासे खेद।।

उठ कर जनम सुधार नर, सुन संतन दा बोल।
कूड़ माया सत आतमा, कर हिरदे विच तोल।।

सम्पत माया पाये के, नित रोये अनजान।
अमर पुरष विसराये के, भरमे वाँग स्वान।।

दुर्लभ देह मानुष दी, मिले आतम ज्ञान परगास।
ताँ सो सिमरो सत पद, जो करे भरम का नास।।

जीतो मन अपने को, सिमरो साचा नाम।(710)
'मंगत' खेल कठिन है, कोई सूरा परसे धाम।।61

सूरे सब ही बने, इस धरम खेत में आये।
पर गुरमुख उभरे विरला, जो कौड़ी मोल विकाये।।

मान मध और मसखरी, सबको गई है खाये।
दीन ग़रीबी बन्दगी, कोई जन विरला पाये।।

वस्तु तो सब घर माहीं, नित रही परकास।
बिन भेदी ना पाईये, निर्मल तत्त अवनास।।

जाँ कूड़ कपट वापार है, ताँ कैसे पाईये भेद।
जब शरधा होये अधिक मन, प्रभ आप हरे आये खेद।।

छाड विगन पाखण्ड को, लख लो साचा लेख।
मानुष देह दुर्लभ है, हरनाम को लीजो पेख।।

विषे भोग की अगनी में, जले चराचर भूत।
क्या गुनी क्या मुनी, क्या राओ क्या भूप।।

बिना सत विचार के, मन नहीं आवे धीर।
सम्पत पाये ब्रह्मलोक की, तो भी मन दिलगीर।।

रंग तमाशा जगत का, छिन में और का और।
सकले भरम तुरंग हैं, मन ने बाँधी डोर।।

माया चक्कर को देख के, सुखदेव का मन भरमाया।
और जीव की गत क्या, जो नित भरम लिपटाया।।

छूटन का उपाय सुन, मारग सहज सुखाल।
तन मन साखी एक प्रभ, नित लीजो चित्त भाल।।

तिसकी शक्त बिन मुरदार हैं, क्या बली बलधार।
सरजनहार सो सरज रहे, चराचर संसार।।

अन्तर तेरे वसदा, नित करे परकास।
करन करावनहार है, अबगत तत्त अबनास।।

सकले करम प्राकिरत के, प्रभ आज्ञा में त्याग।
आपामत नित खीन कर, इक नाम में रख अनुराग।।

खुले ग्रन्थी भरम की, घट में उमगे नाद।
डोलन से निश्चल भया, घर पाया बिस्माद।।

छिन छिन सिमरो नाम को, आलख पुरख आपार।
सब कुछ तिसका जान के, नित आज्ञा विचार।।

मिटे अगन संसार की, मन आवे संतोख।
वस्तु पाए अगोचरी, अबगत पुरख अनूप।।

मिल कर संगत गाईयो, परम तत्त निर्वान।(711)
'मंगत' हिरदे खोल के, कर लीजो पहचान।।62

सोना मनों विसार के, मारग धरम में जाग।
साहब दा फ़रमान सुन, ये लिख लेखा वडभाग।।

घर फूँका जिन अपना, तिन संग करे परीत।
आसा राखे जीवन की, तिन बुद्धी विपरीत।।

जैसा मित्तर खोजिये, ऐसा निहों निभाईये।
मारग प्रेम का कठिन है, सिर दीजे रसना पाईये।।

कथनी से कछु ना सरे, तन मन दीजो वार।(714)
'मंगत' जीवन जगत में, केवल दिन है चार।।63

पूरन पुरख परमेश्वर चित्त गाओ। सुफल कारज जग में अधिकाओ।।
तिसका सिमरन देवे परतीत। परसन्न चित्त पाये निर्मल रीत।।
मत भूलो जग देख के मेला। अन्त को चलना केवल अकेला।।
मत भूलो बहु सम्पत पाये। अन्त को खाली हाथ ले जाए।।
मत भूलो देह सुन्दर धारी। अन्तकाल होवे सब छारी।।
मत भूलो बहु धार चतुराई। काल बीर सिर ख़ाक मिलाई।।
मत भूलो बहु पाये परिवारी। अन्त सखा ना भयो सुखकारी।।
मत भूलो जोबन तन देखे। पलक पलक करे काल परीखे।।
मत भूलो बहु विद्या पाए। चले अनजाना अंत समाए।।
मत भूलो बहु देख तमाशे। ओड़क रहना पलक की रासे।।
सिमर गोपाल ये लाभ घनेरा। अजर अमर पद परसें सीरा।।
नित नित प्रीती चरने राखो। सतपुरषों की सिखया चाखो।।
प्रभ का सिमरन करे कल्याना। आध व्याध नासे दु:ख नाना।।
परम्परा से कथा चली आई। प्रभ की भगत जीवन सुखदाई।।
दृढ़ निश्चय से भज करतारा। भवसिन्धू से उतरें पारा।।
सतपुरषों संग प्रीत कमाओ। तिनकी सिखया सुख रूप लखाओ।।
बन्दीख़ाना ये जगत झुमेला। भज गोबिन्द पायें थाँ सुखेला।।
अन्तर तेरे सो रह्या समाई। सकली शकत तिसकी प्रभताई।।
घट घट की प्रभ जाननहारा। पल पल सिमर ठाकर सुखकारा।।

राम चरन हिरदे रखो, पल पल करो उपकार।(439)
'मंगत' मिले सत शान्ती, जो वनज अनूप ये धार।।64

सरजनहार सो देवन देवा। भाओ प्रीत से कर मन सेवा।।
तिसका सिमरन सुखसार विचार। भवनिध दुस्तर से पावें पार।।
जुग जुग हरजन करें दुहाई। साचा नाम सिमर सुखदाई।।
क्यों नर मन को नित भटकाये। रुच रुच दुरजन करम कमाये।।
दु:ख परापत क्यों नर रोयें। अपना बीजा आपे पायें।।
क्यों नर जीवों से वैर कमाई। दुष्ट करम ये परम दु:खदाई।।
क्यों नर मोह मन्दर में सोया। जनम अमोलक भरम में खोया।।
क्यों नर और के दोख विचारे। अपने पाप का नहीं भेद लखारे।।
क्यों नर धारें अधिक चतुराई। समाँ गँवाये अन्त पछताई।।
क्यों नर अपना नहीं जीवन विचारा। किस कारन आयो संसारा।।
क्यों नर सत सिखया नहीं मानी। पावें ना धीरज करें अभिमानी।।
क्यों नर स्वारथ में नित लागा। अगनी भोग में जलें अभागा।।
क्यों नर अपनी नहीं तजी कुटलाई। अपने आप में गयो ठगाई।।
क्यों नर अब तक सोता नहीं जागा। जम का मुदगर आये सिर पर बाजा।।
क्यों नर अन्त की नहीं दिशा विचारी। कौन सहायक संग सखा परिवारी।।
क्यों नर जीवन में नहीं धरम कमाया। चलती बार बहुता पछताया।।
क्यों नर अपनी नहीं सोच विचारी। और जियाँ संग बाद बधारी।।
क्यों नर मन का नहीं संसा जाता। पाप भोग में नित पछताता।।
क्यों नर अपना जीवन काढ़ी। अगनी भोग में होवें अँगारी।।
क्यों नर अपने संग वैर कमाई। दुष्ट करम धार संकट पाई।।
क्यों नर मारग नहीं मुकत पछाता। सतगुर मेल नहीं कियो मदमाता।।
क्यों नर पलक नहीं सार पछानी। आसार भरम में औध गँवानी।।
क्यों नर रोवें अन्त की बार। अपना किया नर आप विचार।।
संग सुहेला दे सके ना धीर। अब रोवत क्या बने आख़ीर।।

मनमानी अपनी करी, ना गुर सीख सुहाई।(568)
'मंगत' सखा ना को बने, जब सिर पर बिपता आई।।65

ऐ मन मेरे तू कर विचार। पल पल सिमर लो सरजनहार।।
ऐ मन मेरे तू मान त्याग। दीन ग़रीबी सेवा लाग।।
ऐ मन मेरे नित जाग सवेरा। राम विसार पायें दु:ख घनेरा।।
ऐ मन मेरे तूँ क्यों भरमाया। इस्थिर रहे ना जो जग आया।।
ऐ मन मेरे करनी सत धार। एक दिन चलना छोड़ संसार।।
ऐ मन मेरे तूँ कहर त्याग। खिमा दया चित्त धर अनुराग।।
ऐ मन मेरे सत साजन जान। कारीगर जो तीन जहान।।
ऐ मन मेरे तेरा कोई नाहे। क्यों भूला जग देख सराये।।
ऐ मन मेरे तू क्यों हरखाया। साचा ठाकर नहीं पतियाया।।
ऐ मन मेरे तेरी रचना झूट। काल बली लेवे छिन लूट।।
ऐ मन मेरे तू क्यों नित मानी। निहथावाँ उठ चलें अनजानी।।
ऐ मन मेरे क्यों भोग फँसाया। देह त्याग तूँ कहाँ समाया।।
झूट देही संग किया बसेरा। जग में भयो ना मेरा तेरा।।
सुपन समान सब खेल को पाई। अन्त की बारी सुपन हो जाई।।
अचरज लीला धारी करतार। अचरज माया कीनी विस्तार।।
साची ओट साहब की पेख। भरम ना भूलो रचना जग देख।।
सरब आधारी आप जगदीश। तिसकी सेव सब हरे कलेश।।
जुग जुग शोभा अपरम आपार। गावें पीर वली अवतार।।
तिसकी टेक नेहों तिस राख। तिसकी सेव रसना तिस चाख।।
तिसकी शकत में निश्चय धार। तिसका नाम जप बारम्बार।।
होवे खुलासी प्रभ रूप ध्याये। जाँ से उतपत ताँ लीन समाये।।
सुरत इकागर चेता प्रभ राख। झूट माया की रसना नहीं चाख।।
अगम अगोचर अपार बड़ाई। भज परमेश्वर आनन्द समाई।।
कीरत ध्याओ कीरत परगास। साची प्रीत प्रभ चरन निवास।।

औगन पल में बिनस गये, जब प्रीत पाई भगवन्त।(613)
'मंगत' मिली सत शान्ती, अचरज शकत अनन्त।।66

जग जीवन का करो विचार। सतपुरषों की सुनो पुकार।।
भोग विकार चित्त अगन बढ़ाये। भोगे भोग नहीं शान्त आये।।
चित्त की अगन ताप ये भारी। जरा मरन नित पाये ख़वारी।।
आवे जावे चंचल जीया। भरम ग़ुबार में नित लपटीया।।
करम विलक्खन करे दिन राती। अपने जीवन का बनयो घाती।।
उस घड़ी का नर करो विचार। जिस घड़ी होवे ये देह अँगार।।
उस घड़ी का नर लेख लखायो। बसे बीबान घर बाहर बिसरायो।।
उस घड़ी को ना मन से भुलाओ। जोबनवन्त जब देह तज जाओ।।
उस घड़ी का नर लेख विचारो। लोक सखा जब सकल तज डारो।।
उस पलक को क्यों नर भूले। जब उलट शरीर गरभ में झूले।।
मूढ़मती नित मन से त्याग। साचे ठाकर के चरनी लाग।।
तिसकी सेव करो दिन राती। मात गरभ में जो बनया साथी।।
तिसका सिमरन अत प्रीत से कीजो। जिसकी शकत से सब जग सीजो।।
अनाशक्त को जो शक्ती देवे। मूढ़मती को सत ज्ञान लखीजे।।
निहथावाँ जीव की रखया जो कीजे। सकली बिपता पल माहीं हरीजे।।
एक से रूप अनेक जो धारी। सरब शकत भज पद बनवारी।।
साचा ठाकर साचा स्वामी। सरब आधार सरब गत गामी।।
नित ही तिसका नाम ध्याओ। सुफल जीवन जग आवन पाओ।।
नाम रतन प्रभ केवल सार। आदी अन्त सुख देवे दातार।।
नित सिमरो नित रूप समाओ। आनन्द सरूप करतार गुन गाओ।।
बन्धान टूटे घर चानन होई। सत अस्थान में जाये बसोई।।
जाँ में गये नहीं गवन विचारी। परमानन्द सो धाम निर्धारी।।
जनम जनम की तृखा चित्त नासी। अजर अडोल पद परस अबनासी।।
गुन औगन दोऊ लीन समाये। निरगुन धार परापत पाये।।

करम गाँठी खुल गई, जब सत सिमरन चित्त पाये।(533)
'मंगत' जीव अभय भयो, निज रूप में लीन समाये।।67

वैराग्य वाणी

प्रभ का सिमरन सार है, संताँ करी पुकार।
एक घड़ी ना विसरे, सो आनन्द भण्डार।।

छाया बादल की ज्यों, ऐसे जग का खेल।
दुर्लभ नाम कमायो, कर साचे गुर संग मेल।।

एह जग भरम ग़ुबार है, केवल मन तुरंग।
सिमरो साचे नाम को, सब मनसा होवे भंग।।

लख चौरासी जन्त में, मानुष देह परवान।
सिमरन साचे नाम का, इसमें मिले निधान।।

पलक पलक औधी गई, ज्यों नदी का नीर।
बिन सिमरे हरि नाम के, आठ पहर दिलगीर।।

साचे सुख को खोजते, बीत गये वरख हज़ार।
मिली न पलक की शान्ती, जो भोगे भोग आपार।।

खाली हथ्थीं आया, अंत जाये खाली हाथ।
जो सम्पत सो छाडनी, रंचक चले ना साथ।।

जैसे नीर तुरंग का, छिन में रूप वटाये।
ऐसे जीवन जगत में, जान लियो गुनी राये।।

नदी किनारे तरवर, कब लग बाँधे धीर।
एक लहर की धार से, जाये बिखर शरीर।।

काठ अगनी में पड़ा, पल पल होये अंगार।(907)
'मंगत' जीवन जगत का, एह बिध कियो विचार।।68

जगत रूपी ये खेत है, काल रूपी किसान।
एक छिन में मेट दे, सूखा हरा निशान।।

आवन जावन पवन का, ज्यों बहता नदी का नीर।
ऐसे रचना जगत की, जान लयो मतधीर।।

पल पल जात विहाये, ज्यों रैन दिन पख मास।
आस अंदेसा ना गया, बीत गए सब सांस।।

सम्बल फूल का रंग ज्यों, सबका चित्त हरखाये।
ऐसे रचना जगत की, देखत में सुखदाये।।

मूल बिना ज्यों रुख, केला करे बिस्तार।
ये ही लीला जगत की, राखे ना कुछ सार।।

ये जग मन की भरमना, जैसा मन तया रूप।
जैसी धारे कामना, देखे सो ही सरूप।।

कूड़ी बाज़ी देख के, बड़े गुनी भरमाये।
बाज़ीगर जिस देखया, तिसका चित्त ठहराये।।

काल का बांधा आया, अन्त को पेखे काल।
बंदीखाना जगत ये, झूट माया जंजाल।।

झूट जगत में आये के, धरे झूट भरवास।
काल बेलनी बेलया, जैसे रूई कपास।।

विषे भोग संसार के, ज्यों विष बासक नाग।
एक पलक के मेल से, लियो नरक निवास।।

आसा रूपी अगन ये, छिन छिन करे अंगार।(908)
'मंगत' मन पछताया, जब जलन देखी संसार।।69

ना लेना ना देना, ना सुख मूल बियाज।
झूठी लागी कल्पना, देवे कलेजे दाग़।।

सुखिया कोई ना देखया, जो आया इस संसार।
जो देखा सो दुखिया, नित दु:ख का करे विचार।।

क्या धनी क्या दलिद्री, क्या भूप राज राजान।
जो देहधारी आया, सो परसे दु:ख की खान।।

छाया सेती प्रीत नर, कब लग देवे साथ।
उलट दिसा गयो चाँदना, भयो वंजोग अनाथ।।

राख अमानत बावरा, ले अपना हक़ जमाए।
छूटन की तदबीर ना, पावे घनी सज़ाए।।

अपना तो कुछ ना थिया, पर मन में लेवे बनाये।
फेर बिगाना हो गया, जब जम कियो न्याये।।

बंदीखाना जगत ये, बाँध्यो हिरस ज़ंजीर।
चार कुंट उठ धाया, सूझत ना तदबीर।।

मरने का भय राख के, करे हिकमत आपार।
वोह भी काल से ना बचे, जिनकी फौज जरार।।

रोगी सोगी सूरमें, सबको कीजे घात।
जो जन आया जगत में, होये काल का भात।।

वैद धनन्तर मर गया, और लुकमान हकीम।
हाजी ग़ाज़ी ना बचे, खा गया काल ग़नीम।।

ये संसार सराये, जीव मुसाफिर नीत।(909)
'मंगत' खोज सत शान्ती, औध जात है बीत।।70

पत्ता गिरे बरिच्छ से, घट से विगसे नीर।
ऐसे समाँ को पाये के, जीव ये तजे शरीर।।

नाओ जैसे नीर में, नित नित डाँवाँडोल।
ऐसे भरम गुबार में, जीव धरे चित्त खोल।।

जैसे रुत बसन्त की, सब बृच्छों पर आए।
डाली डाली झड़ पड़े, जब अजल ख़िजाँ उठ खाए।।

ऐसे जोबन जीव को, एक पलक में आए।
तिसको देख ना भूलयो, ये रंग नहीं रहना पाए।।

हाड मांस का पिंजरा, प्रान भरा विच तेल।
एक पलक की आन में, करे भसम संग मेल।।

छिन छिन औसर जात है, जैसे बहता नीर।
समाँ गया ना आएगा, करो विचार मतधीर।।

जो आया तिस जावना, ये खरा खराना खेल।
रहना किसे नहीं पावना, जो जुग चारे मेल।।

धरती गई नीर में, नीर को पावक खाये।
पवन गिरासे पावक, आकास में पवन समाये।।

तत्वों में सब तत्त मिले, रूप रंग मिट जाए।
ये ही कला सरीर की, छिन छिन रूप वटाये।।

बालापन को जोबन खाये, गई जरा जोबन को खा।(910)
काल जरा को खा गया, 'मंगत' जीव पछता।।71

काल करीड़ा नित करे, उठके गुनी विचार।
सूरवीर बलवान हो, सबका करे शिकार।।

भयकारी ये काल है, चराचर भूत कम्पाये।
तिसकी गरजत देख के, आसन विरंच डोलाये।।

पीर पैग़म्बर औलिया, सिद्ध तपी अवतार।
काल संदेसा सबको, लागा बड़ा आपार।।

ऐसे दु:ख संताप में, क्यों सोया मूढ़ गँवार।
काल चौसर नित खेलता, पल पल पासा डार।।

काचे कुम्भ में नीर ज्यों, कब लग रहत समाये।
ओह फूटा ओह बह गया, सरब खेल मिट जाये।।

काल रूपी बरिच्छ पर, आये बसेरा लीन।
छिन छिन पल वोह खा रहा, उठ मूढ़े तत्त को चीन।।

धन जोबन के मध में, मत होवो ग़लतान।
काल शिकारी ताकता, मारे खिचके बान।।

ना किसी की बनी रही, ना बनेगी मीत।
जो बनी सो बिगड़ी, मत राखो परतीत।।

ज्ञानी गुनी चतुर बुद्ध, एह तत्त करो विचार।
कहाँ से आया कहाँ जावना, कहाँ में पाये पसार।।

रंचक मात्तर सुख नहीं, इस कूड़ जगत भरवास।(911)
'मंगत' रचना स्वपन की, खेले काल तमाश।।72

काया रूपी आयरन, काल रूपी लुहार।
प्रान का हथौड़ा नित चले, गुनियों करो विचार।।

पूंजी जाँकी स्वास है, छिन छिन जात विहाये।
कूड़ा वनज कमाये के, गाँठी मूल गंवाये।।

छिन आवे छिन जात है, ज्यों अंजली का नीर।
जीवन जग दिन चार है, कोट करें तदबीर।।

एह तन विख की खान है, हीरा मनी गोपाल।
तन दीजे तब पाईये, नदरी नदर निहाल।।

बालू की ये भीत है, धूएँ का अम्बार।
छीजन में ना पलक लगे, कित गुन करें विचार।।

महल अटारी कोट गढ़, हिकमत हुकम कमाल।
खाली रहे सिंघासन, नहीं आये नज़र भूपाल।।

खोटा जीवन छाड कर, मारग खरा पहचान।
जाँ से मिले सुख शान्ती, मिट जाए झूट गुमान।।

जावन जावना सब कहें, पर पंध ना ठौर की जाँच।
कूड़े इस भरवास में, पायो किसे ना साँच।।

काँच वापारी जगत सब, करे मानक दा गुमान।
जब नज़र सराफ़ी में चढ़ा, तब लज्जित भयो अनजान।।

विख बीजे निस दिन गुनी, माँगे अमरत सार।(912)
'मंगत' सो ही पाईये, जो घालें करें विचार।।73

माटी का कलबूत ये, अंत माटी समात।
सरजनहार ना जानया, क्या बने पछतात।।

काया रूप है हाँडिया, विषय भोग का भात।
आठ पहर जलती रहे, अगन तृषना साथ।।

जैसे खाल लुहार की, फूंके बिना प्रान।
करनी बिन मानुष जो, विचरे पशु समान।।

हीरा नाम विसारया, काँच के सम्पे ढेर।
अंतकाल ये अन्धमती, फिरे चौरासी फेर।।

आसा जीवन की करे, देखे काल सरूप।
अमरत इच्छया मन करे, बीजे बिख का कूप।।

चार दिना दा जीवना, उठके मूढ़ विचार।
राज सिंघासन छाड के, करें भूमी पाये पसार।।

नील मनी ढलाईयो, कंचन गढ़ औसार।
खाली हथ्थीं चल गये, जिनके घने अम्बार।।

पोशाक पहने पीताम्बरी, अंग सुगन्ध लगाए।
काल शिकारी मारया, तब भसवी गयो समाये।।

सिर पर छतर सुहावना, चमके चूनी आपार।
सो सिर खाकू संग मिले, उठके दृष्ट निहार।।

पानी का ये बुदबुदा, छिन में बिनसे जात।(913)
'मंगत' बिन हरि सिमरने, सब ही कूड़ लखात।।74

वडे वडे भूमी के मालिक, और जिनके वड परिवार।
चले निथावें जगत से, खाली हाथ पसार।।

रोता आया जगत में, अन्धमत जीव अनजान।
अन्त को रोता जात है, ना कोई पूछ पछान।।

पर-हक को नित खावना, ज़ोर ज़ुलम कमाये।
राजे राने जगत के, बाँधे जमपुर जाये।।

झूट देही के भोग में, क्यों गुनियाँ ललचाये।
ना थिरता इस भोग की, ना देह थिरी रहाये।।

देह रूपी बीबान है, करम का तिसमें झाड़।
फल की आसा राख के, मोह्या जीव गँवार।।

जतन करे बहु भाँत के, तो भी शान्त ना होये।
जो घालें भूमी कोट गढ़, विजय की मनी परोये।।

कूड़े इस संग्राम में, सबने पाई घात।
काल दग़ा दे मारसी, कोई ना छूटन पात।।

जब लग सच परतीत नहीं, मन नहीं परसे ठौर।
घालन सभी दु:ख सार है, फिरे चौरासी घोर।।

चार दिनाँ दा जीवना, अंत मिले विच छार।
लाख करोड़ी सम्पत तजे, और राज दरबार।।

सुपना जैसे रात का, ऐसे जग दा खेल।(914)
'मंगत' घाले नाम जो, पाये परम सुख मेल।।75

उत्तम कीरत प्रभ की, तीन लोक परवान।
जो सिमरे मन प्रेम से, ताँ का हो कल्यान।।

नित अजन्मा अबनाशी, अखण्ड आनन्द भगवान।
एक पलक करे ध्यान जो, काल ना कीजे हान।।

सतगुर की परतीत रख, सिमरो शबद अगाध।
मन मन आवे शान्ती, मिट जाएँ सकल व्याध।।

जनम जनम का भरमता, पाई मानुष देह।
सिमरो दीनदयाल को, दुर्लभ उद्दम एह।।

सकल करम धरम पर, पावे नित जीत।
आलख पुरख के ध्यान में, लागी जाँ की प्रीत।।

निर्मल समाँ पहचान के, नित कीजो प्रभ की याद।
रिद्ध-सिद्ध चूमें चरन को, मिट जाएँ सकल उपाध।।

सिमरन ही तत्त सार है, प्रेम प्रीत की डोर।
नित सो सरजनहार है, पद पंकज चित्त जोड़।।

लोक कुटुम्ब न संग चले, ओढ़क मरती बार।
बिना भगत ना छूटिए, जाएँ बाँधे जम के द्वार।।

बाल जोबन का मान तज, काल दग़ा दे खाए।
पलक ना विसरो सतधाम को, सुनियो सच उपाए।।

नित रोए विच दुर्मत, करम का जाल कराल।
सम्पत में ही मर मिटे, नित घाले जम का जाल।।

जो सम्पे सो छाडना, एह निश्चय कर जान।
तीन लोक की सम्पदा, सब ही काल की खान।।

अपना तेरा कुछ नहीं, खोल नैन कवाड़।
जोबनवन्ता तन जले, अन्त को अगन मंजार।।

महल अटारी छाड के, भसवी लीना बास।
क्या राजा क्या राना, सब ही काल तमाश।।

जो जनमे सो थिर नहीं, छिन आवे छिन जाए।
इस्थिर भगत भगवान की, जोती जोत मिलाए।।

देखन आया जगत को, देख भया हैरान।
मेरो मेरी बहु घनी, सबका चलत निशान।।

अगन सरीखा जगत है, सब ही तापें जन्त।
गुरमुख विरले रस पिया, अमरत नाम भगवन्त।।

अमरत वेला जान के, सतनाम विचार।
दुर्लभ जीवन पाये के, अपना करो उद्धार।।

जग में साचा कुछ नहीं, केवल भरम बकार।
उठ सिमरो नाम आगाध को, सन्ताँ करी पुकार।।

जिन सिमरा सो तृपत भए, इस लूने खेत के बीच।
उट्ठत बैठत घालियो, ले अमरत शबद मन सींच।।

सत संगत मिल के गाईयो, अजर पुरष निर्वान।(54)
'मंगत' पलक ध्यान से, मिट गई चौरासी खान।।76

रल मिल संगत गाईयो, साचा नाम करतार।
ख़बर नहीं किस पलक में, ये तन होवे छार।।

सुन्दर जग को देख के, चित्त को मत ललचाए।
सिम्बल फूल समान है, भोगन से पछताए।।

चार दिन की चाँदनी, ओढ़क होए अन्धकार।
ख़िज़ाँ तो सिर पर है खड़ी, मत भूलो देख बहार।।

दीरघ ऊँचा होया, जैसे पेड़ ख़जूर।
करो पहचान उस वक़्त की, जब काल करे सिर चूर।।

धन जोबन को पाए के, गहरा करें अभिमान।
छिन में भई विनास सब, उड़ गई धूड़ समान।।

जिस दर बैठ बैजन्तरी, नित गाएँ छतीसों राग।
सो दर सूने हैं पड़े, बोलें वहाँ पर काग।।

अपनी अपनी गरज़ से, बहुते बन गए साथ।
चला अकेला अन्त को, खाली लेके हाथ।।

झूटा देह का पिंजरा, बहुता करें सँवार।
एक पलक की आन में, भूमी पाए पसार।।

साचा साहब विसारिया, जग का हूआ ढोर।
करे मज़दूरी निस दिन, बिना दाम के मूढ़।।

रोता आया जगत में, अन्त को रोता जाए।
मूरख समाँ गँवाया, कूड़े लालच पाए।।

पलक पलक दम जा रहा, तीन लोक जाँ मूल।
साच ना चित्त में पाया, औध गँवाई भूल।।

लोक कुटम्ब ना सँग चले, माल धन इक़बाल।
चले निमाना जगत से, जब आन पछाड़े काल।।

जीवन में कुछ कर लयो, होएँ मुसाफ़र अन्त।
दुर्लभ सेवा जगत की, और याद भगवन्त।।

बिख बीजे बिख खावना, सच बीजे सच हो।
खरा नियां दरगाहे में, तिल घाट वाध ना को।।

सुपना जैसे रात का, ऐसे जगत पहचान।
मेरी मेरी बहु धरी, अपना चलत निशान।।

इस सागर संसार में, दुर्लभ ये विचार।
नीवाँ होके चालना, सबसे रखें प्यार।।

जात जमाती बन्ध में, मत होवो मग़रूर।
आगे नबेड़ा अमल का, विच दरगाह मंज़ूर।।

निकले प्रान जब अन्त को, देह गई कुमलाए।
इक जलावें अगन में, इक भूमी दें दबाए।।

काचे घट में नीर जो, ठहरन कभू ना पाए।
ऐसे जीवन जगत में, पल छिन खेड खड़ाए।।

सत सरूप पहचान कर, करम विलक्खन त्याग।
ऐसा समाँ ना पाएँगा, उठ भरम की नींद से जाग।।

झूट भरम को छेद के, सत की राखो ओट।(127)
'मंगत' कहे समझाये के, ना पाएँ काल की चोट।।77

सत के कारन ज़हर प्याला, पिये गुनी सुकरात।
मीराँ साचा जीवन पा के, बिख अमरत सम खात।।

सत का जीवन ईसा लीना, सूली चढ़ सुख पाया।
और चढ़े मनसूर ज्ञानी, जिन साचा जीवन ध्याया।।

इब्राहीम अगन में बैठा, सत तत्त का भरवासी।
सत की खोज चढ़े कोह तूर, सुने शबद अबनासी।।

सत प्रतीत से पाया सत जीवन, मरन भय सब नासा।
एको देखा तीन जहानी, जिसका सकल तमाशा।।

जती सती त्याग बैरागी, और गुरू सिख भेखा।
सत कथा सब ही विचारें, पावें सत का लेखा।।

जिनाँ सत परापत होया, मरन किया क़बूल।
मर के जीवन जग को दिया, मिटाई भरम की भूल।।

दीन ग़रीबी सेवा साधन, अनन भगत चित्त धारी।
पीर वली कुतब और ग़ौस, सब सत के भए पुजारी।।

मानुष देह दुर्लभ जग माहीं, जो सत सरूप मिलाए।
बिना सत परतीत के, नित जीया दु:ख पाए।।

सत का भेद अपरम अपारा, पावे कोई ज्ञानी।
झूट विकार सकल चित्त त्यागे, एके सार पहचानी।।

बादमुबाद सकल बिख त्यागे, एक नाम चित्त गाए।
मन अपने का साधन कीजे, दुर्मत मैल हटाए।।

तन झूटा मन झूटा, ये माया का विकार।
सरजनहार सत रूप है, हिरदे करो विचार।।

हाड-माँस का पिंजरा, मल-मूत्तर की खान।
पवन करे परकास नित, छीजे आन की आन।।

नौ द्वारे का रस भोगी, नित दुखिया ये जन्त।
प्रान छीजे काया कुमलाए, पलक होवे भसमन्त।।

नैन नासका जिभ्या कान, नाक की धारी सुद्ध।
पलक पलक बल जात है, अन्त होए बेबुद्ध।।

माटी केरा पिंजरा, अन्त को माटी होए।
सरजनहार पहचान कर, जनम ना जुए खोए।।

ज़ोर ज़ुलम कमा गए, अन्त भए मुरदार।
कारूँ और सिकन्दर, कहाँ फ़रऔन सरकार।।

राज तेज की आस में, जीवन दियो गँवाए।
माटी का कलबूत ये, गयो माटी समाए।।

धरती के मालक बने, अन्त धरत गई खा।
महल अटारी कोट गढ़, छाड के धूड़ समा।।

चार दिनाँ का जीवना, आसा वरख हज़ार।
एक पलक नहीं शान्ती, नित भोगे भोग आपार।।

ना राजा ना राना, ना रहे मीर ग़ुलाम।
ख़िलज़ी ग़ौर और मुगल दा, देवे कौन पैग़ाम।।

झूटे इस भरवास में, उठके होश सँभाल।
करनी साची कर लियो, सिर पर गूँजे काल।।

साचा रब पहचान कर, पावें अजब सुराज।
जाए विखेपत जीव की, मिले राज अधिराज।।

शाहों का जो शाह है, सरब कला जिस हाथ।
सिमरें भाओ प्रेम से, सेवें नाथों का नाथ।।

ठाकर साचा जान कर, नित ही ध्याओ मीत।(204)
'मंगत' सिमरन सार है, बाकी कूड़ परीत।।78

अधिक तिसकी कान्ती, जिस मन धरम विचार।
सो ही ज्ञानी सो ही गुनी, सो ही जान अवतार।।

साचा धरम विचार से, चित्त आवे विश्वास।
कर्म अकर्म की सोझी मिले, निर्भय लेवे वास।।

इस सागर संसार में, सुनयो सार उपाए।
हिरदे धारो नाम को, और जीव दया कमाए।।

दुःखी दीन की सेव कर, प्रभ का हुकम पहचान।
जिसने सब कुछ दिया, तिसकी सिफ़्त बखान।।

माटी केरा पिंजरा, जो नित सरजनहार।
राखो तिसका प्रेम चित्त, पावें नित जयकार।।

पर-उपकारी जीवना, हर की राखें टेक।
तन मन होवे उज्जला, सुन साचा ये विवेक।।

पुन्न पाप दोनों तजो, हर की आज्ञा माहीं।
निज ठाकर साचा जान के, प्रेम प्रीत चित लाईं।।

जब लग सार ना ध्याईए, बिनसे नाईं विकार।
बाँधा करम की जेवड़ी, फिरे चौरासी सार।।

साचा नाम गोबिन्द का, नित ही धरो ध्यान।
समाँ फेर ना आएगा, काल करे नित हान।।

ना सखा ना संग कोए, अन्त को मरती बार।
साचे इक भगवान को, हिरदे माहीं विचार।।

बारम्बार विचारया, जग रहना नाईं मीत।
वैर बदी को त्याग के, सबसे रक्खो परीत।।

प्रेम साहब का रूप है, सकल मिटावे ताप।
मन मन आवे शान्ती, बढ़े अधिक परताप।।

एको प्रेम की धारना, सभी गुनियों का ज्ञान।
जिसके मन प्रेम नहीं, सो नर पशु समान।।

यज्ञ दान तपस्या, सबका एह फल जान।
मन में आवे दीनता, हरे भरम गुमान।।

जिसके मन में भय भया, सो ही पावे भाओ।
भाओ से भगती मिली, दुस्तर जग तर जाओ।।

सो ही पण्डत वेद का वक्ता, जिसका मन निर्मान।
राखे हिरदे प्रेम इक, सेवे सच भगवान।।

शत्रु को सुख देवना, मन का हरे विकार।
साचा प्रेम ताँ जानिए, जिसका ये विचार।।

मन वैरी को ठाकना, सत मारग धरम पहचान।
जीत पावें संसार से, लें साचा मोक्ष निर्वान।।

जतन जतन कर राखियो, साचा एक प्यार।(206)
'मंगत' मिटे सब दूषना, जब संगत साच विचार।।79

महाँ बलकारी महाँ तेजस्वी, सो ही जग में होए।
साची भगती प्रेम को, जो नित हिये परोए।।

कुल जाती का मान तज, साचा करम पहचान।
दुर्लभ जनम संसार में, मानुष का ये जान।।

सत सील और सादगी, हिरदे धर उपकार।
खाटो लाभ इस देह का, जो अन्त होवेगी छार।।

साचा सुख संसार में, सब जीवों की सेव।
तपन मिटे सब जीव की, हरखत भए गुरदेव।।

जप तप संजम साधना, तब ही पूरन होए।
दृष्टी आवे एक जब, मैल दुई की खोए।।

अखण्ड रूप नारायन, जल थल रह्या व्याप।
तब ही पावें भेद को, जब तजें भरम का ताप।।

काची देह का पिंजरा, होवे इक दिन राख।
करना है सो कर लयो, अन्त होवें अनाथ।।

धन जोबन के मान में, क्यों नर अन्धा होए।
तेरा कुछ ना जगत में, जाए खाली हाथ बसोए।।

पुत्तर धीया ना साक संग, ना नाती ना परिवार।
चले अकेला अन्त को, जब जमराज पुकार।।

रोता आया जगत में, अन्त को रोता जाए।
जो जन्मे सो थिर नहीं, सब काल चक्कर में आए।।

करनी साची कीजियो, जो अन्त होवे सुखरीत।
ऐसा बीज ना बीजियो, जो काटन में दु:ख देत।।

रंग तमाशे छाड के, मन में हो हुशियार।
साचा पन्थ अगम का, नित ही खोज विचार।।

बाल जवानी और जरा, गई सभी को खाए।
कूड़ा धर भरवास नर, अन्तकाल पछताए।।

छाड बखीली मन से, करता राम विचार।
तेज बल ना रहेगा, अन्त को मरती बार।।

जावन जावन सब करें, पर भेद नहीं कछु ठौर।
कहाँ से आया कहाँ जाए, संशा बड़ा अघोर।।

आद की कछु सुध नहीं, ना अन्त का किया विचार।
संशे में औधी गई, पाई ना कछु सार।।

मरना तो निश्चय होए, जो जीवे वरख हज़ार।
मरने से पहले मरे, ले तत्त ज्ञान विचार।।

साचे गुर का मेल कर, पावें सार विचार।
प्रीती उपजे नाम से, और भाओ भगत चित्त धार।।

सतधाम पद आनन्द को, नित ही जापो मीत।
सुफल जनम संसार में, जो बूझे ऐसी रीत।।

सत करनी सत रहनी, सत में जीवन त्याग।(207)
'मंगत' सूरा जगत में, कोई आया ले वडभाग।।80

साची भगत मुकत की दाती, हिरदे माईं विचार।
बिना भगत ना छूटिए, भवजल दुस्तर अपार।।

करम का संसा नित घना, करे जीवन को घात।
कोट जनम भरमत फिरे, पावत ना नर वाट।।

जतन करे बहु भाँत के, मन नहीं पावत शान्त।
संशे में ही चल बसे, बड़े गुनी गुनान्त।।

राजा दुखिया परजा दुखिया, दुखिया साध दरवेश।
देहधारी जो आया, तिनको घना कलेश।।

जनम मरन और इच्छया दोख, ये ही बड़ा सन्ताप।
सकल जगत जलता फिरे, अदभुत माया ताप।।

क्या धनी क्या दलिद्दरी, क्या राजा क्या रंक।
चारखानी के जीव को, लागा भय कलंक।।

सुख को खोजत खोजते, सकल औध वँजाए।
नाना सम्पत पाये के, तो भी तृखा अधिकाए।।

परवारी भी दुखिया, निरपरवारी दु:ख के माईं।
गुनी ज्ञानी चतरबुद्ध धारी, तीन काल दु:ख पाईं।।

जाँ से पूछूँ सुख की, पहले देवे रोए।
अचरज माया भगवान की, सभी जीव दु:ख जोए।।

क्या गृहस्थी क्या विरक्ती, सब घट लागी आग।
काल करम के जाल में, नित बाँधा अभाग।।

चौदह भवन की सम्पत, जो घर आवे मीत।
तृषना मिटे ना बावरी, जो नित दु:ख की रीत।।

भोगता भोग की आस में, रहे जीव दिन रात।
भोग भोग नहीं धीर है, उठ चला भरमात।।

अदभुत माया चक्कर में, मोहे दानव देव।
रचना ये बिस्माद है, पारावार नहीं भेद।।

आसा माईं जनमिया, आसा में मर जाए।
बाँधा आस की जेवड़ी, कोट जून भुगताए।।

पण्डत ज्ञानी क़ाज़ी आलम, जो देखन में आए।
मोह माया के चक्कर में, रैन दिन भरमाए।।

खट-रस व्यंजन नित करे, जीभा नहीं तृपताए।
छिनभंगुर ये भोग है, कैसे शान्त समाए।।

पाँच पचीस प्राकिरत का, अजब पसारा जाल।
जीवन की आसा माईं, दरशन पावे काल।।

इन्द्री विषय विकार में, नित प्यासा होए।
छिन छिन रंग वटाया, तृपत ना पाए कोए।।

बालक दुखिया अन्धबुद्ध धारी, और दुखिया जोबनवन्त।
जरा परापत दु:ख की खानी, काल गरासे अन्त।।

दृश्यमान संसार ये, सब ही रूप वटाए।
छिनभंगुर जो रूप है, कैसे सुख दिखलाए।।

करो विचार सुख सार की, मत भूलो मन के भाए।(208)
'मंगत' नौबत चलन की, पल पल बाज बजाए।।81

जो सुख इस्थिर ना रहे, सो तो दु:ख का रूप।
ऐसे घने कलेश में, कैसे पावें छूट।।

मन बैरी बिकराल है, लागा झूट के संग।
देख देख अन्धा हुआ, होवे अन्त असंग।।

काम क्रोध की अगन में, जलें चराचर भूत।
छूट ना पावे जीव ये, लाख वटावे रूप।।

जो वस्तु थिर ना रहे, कैसे देवे धीर।
मिथ्या भरम भरवास में, बाँधा अन्ध अन्धीर।।

साची भगत पहचान कर, जो नित सुख की खान।
सकल मिटावे भरम जो, मिलावे एक भगवान।।

सत वस्तु के संग से, नित ही सुख को पाए।
झूट विकार ये भरम जो, तीन काल दु:खदाए।।

सत सरूप भगवान का, केवल एके जान।
माया झूट पसार है, जो नित दु:ख की खान।।

असत वस्तु के प्रेम से, उपजे तृष्ना रोग।
तीन गुन माया परगट कीजे, मिथ्या करम संजोग।।

करमफल इच्छया धार के, परसे दु:ख द्वन्द।
छिन ठाँडा छिन ताता, ज्यों लोहार की साँड।।

ऐसे इच्छया करम की, अनेक रूप दिखलाए।
ये ही जरा और मरन है, चारखानी परबाहे।।

करम गती को भोगता, राजा राना रंक।
पुन करमी सुख पावता, पापी दु:ख असंख।।

ये रचना संसार की, मन में लयो विचार।
करम का संसा ना मिटे, अनक जनम को धार।।

मानुष देह दुर्लभ है, जो देवे मोख निधान।
साचे गुर के मेल से, होए जीव कल्यान।।

मिथ्या जग को देखिया, सत एक भगवान।
मन आया विश्वास में, परसी सुख की खान।।

छिन छिन सिमरो नाम प्रभ, परमानन्द सरूप।
मन में आवे चाँदना, जाए भरम का कूप।।

करमफल इच्छया त्याग कर, करम करो निर्धार।
ऐसी करनी जो करे, सो पावे निस्तार।।

कारन करता पेख के, दृढ़ कीजो विश्वास।
साची भगत पहचान के, पाओ सुख निर्वास।।

तीन काल समरूप है, घाट वाध नहीं पाए।
करम संदेसा ना धरे, ना जनम में आए।।

सरब जियाँ आधार है, आप रहे निरलेप।
वाँग आकाश के पसरिया, सुनयो सार विवेक।।

बादल छाया जगत ये, नानाँ रूप वटाए।
समाँ पाए सब मिट गए, केवल आकाश दिखाए।।

चिदाकाश परमात्मा, नित आनन्द सरूप।(209)
'मंगत' सिमरन तिसका, तीन काल सुखरूप।।82

भवजल दुस्तर आपार है, वारापार ना कोए।
बिना सत परतीत के, निसदिन दुखिया होए।।

पाँच तत्त का पिंजरा, पंछी करे बिलास।
सार किसे ना जानया, मन भरमे अन्ध भरवास।।

देह की आसा धार के, उपद्रव करे अपार।
ख़बर करो उस पलक की, जब ये होवे छार।।

देह के सुख के कारने, नित जियाँ उतारे खाल।
ये भी तो सँग ना चली, जब मारे काल कराल।।

अंग सुगन्ध लगाई, अकड़ अकड़ पग धार।
निकले प्रान जब देह से, मिल गई धूड़ी नाल।।

अन्धा हूआ जीव ये, सत सरूप विसराए।
करम करे बेलक्खने, पावे अन्त सज़ाए।।

जैसी करनी जो करे, फल देवे करतार।
छिन छिन देवें हिसाब तूँ, उस ऊँची सरकार।।

आया मानुष देह धर, विचरें पशु समान।
खान पान और सोवना, ये ही कार पहचान।।

देह तो भई मानुष की, करे करनी ढोर गँवार।
मूरख समाँ गँवाया, भरवासे कूड़े धार।।

आसा रूपी रोग है, सतगुर खोजो वैद।
औखद खाओ सतनाम की, जाए करम की कैद।।

काची देह मिथना करो, ले साची जुगत विचार।
अन्दर होवे चाँदना, जाए भरम अन्धकार।।

अबनाशी साहब आ मिले, जाए जीव की प्यास।
अखण्ड पावे शान्ती, निर्भय लीजे वास।।

देह रूपी मकान में, पावें लामकान।
मिट्टी अन्दर देखया, मालिक तीन जहान।।

मरने से पहले मरे, साचे प्रेम के रंग।
जुग जुग पावें जीवना, रहें साहब के संग।।

झूटी देह की कामना, दिल से करे त्याग।
सोता जनम अनेक का, उठ मन मूरख जाग।।

देह पिण्ड जिसने दिया, कर तिसकी पहचान।
साचा मारग घाल लो, सुन सतगुर विख्यान।।

अपना सुख त्याग कर, और जियाँ को सुख दे।
पर-उपकारी जीवना, जीवन चित्त में ले।।

एक साहब की टेक रख, मन में हुकम पहचान।
आज्ञा तिसकी मान के, अबगत पावें थान।।

पूँजी देह की स्वास है, छिन छिन रहो वँजाए।
सिमरो साचे नाम को, फिर समां ना पाए।।

जब लग सत ना सोधिए, पावे ना मन धीर।
जतन अकारथ सब जाए, अन्त होवे दिलगीर।।

साचा एको साहब है, हिरदे कर पहचान।
तिसकी शक्ती में चलें, लोकालोक जहान।।

सो अन्दर तेरे वस रह्या, खोज करो नित नीत।
दृढ़ निश्चय से सोधयो, तब होवे परतीत।।

जिस पाया सो घट माहीं, मानक अपरम अपार।
सुपना हूआ जगत ये, जब पाया दीदार।।

पूरन करम को पाया, मनसा पूरन होए।(212)
'मंगत' जिन रब जानिया, चरन तिनाँ दे धोए।।83

खोज खोज के पाया, प्रभ तेरा नाम आपार।
जो सिमरे छिन एक पल, तिस चरनी बलिहार।।

तुम बिन दूजा ना कोए, राखाँ किसकी टेक।
सरब कला समरथ तूँ, धारें रूप अनेक।।

सब जग तुमरा खेल है, तूँ बाज़ीगर अपार।
खेलें खेल बहु भाँत की, मोह्या कुल संसार।।

काल करम के जाल में, जकड़ा मन गँवार।
एक पलक की धीर ना, नानाँ करूँ विचार।।

आसा तृष्ना वेग में, नित रहे परबीन।
अनक जतन समझाया, सूझत ना बेदीन।।

अंधा गरब गुबार में, भूल गया सतधाम।
देख चक्कर संसार का, भरम का भया गुलाम।।

नित नमाना नित परदेसी, पल आवे पल जावे।
सत सरूप विसार के, नित मूढ़ा कूड़ कमावे।।

जगत बसन्त फूली फुलवाड़ी, दो दिन का समाचार।
मन ना सूझे अन्धला, बैठा पाओं पसार।।

झूठ काया मान धर, भोगे भोग अनन्त।
रनक मातर ना शान्ती, बिन सिमरे भगवन्त।।

जीवन का उपाय करे, मरना मूल विसार।
सकल अकारथ जात है, जब काल ने करी पुकार।।

नाती संगी बहु बने, अन्त छुड़ावन ताईं।
काया तजे प्रान जब, भयो सखा कोई नाईं।।

इन्द्री भोग की लालसा में, दीनो जनम विताए।
अरब खरब धन संचया, अन्त निरासा जाए।।

जो देखा सो दुखिया, किससे करूँ विचार।
तृष्ना लागी अगनी, रोए कुल संसार।।

पछताए राम भाई मुरछाये, रोए सीता संग राम वँजाए।
रोए रावन अन्त की बारी, जब उजड़ी लंका दृष्टी आए।।

दशरथ रोए दे पुत्र बनवास, रोए बाली कुकर्म विचार।
रोवन पाण्डो जब राज वँजाया, नगन द्रोपदी होई दरबार।।

छत्रपती दरयोधन रोए, जब लश्कर भया विनाश।
रोए करन महा बलकारी, जब भूमि कीनो रथ ग्रास।।

रोए सिकन्दर और कारूँ, रोए बली महमूद।
छाड़ चले जब गंज दफीने, और रोए नमरूद।।

रोए जोगी समाध को छोड़े, प्रभ का हुकम विसार।
रोए पण्डत वेद का वक्ता, पावत ना तत्त सार।।

बड़े बड़े अभिमानी रोएँ, अन्त भए निरमान।
गरब प्रहारी एक प्रभ, नित जो सुख की खान।।

जिनाँ हर जस गाया, तिन का रोवन दूर।
दु:ख सुख एक समान भयो, जल थल परस हज़ूर।।

माया कूड़ पसार है, जो सेवे सो रोए।(221)
'मंगत' हरखत साध जन, जो निर्भय धाम बसोए।।84

मुख से सिमरो नाम को, श्रवन करो तत्त ज्ञान।
हिरदे में माला फिरे, सतगुर शबद पहचान।।
बिनसनहारे जगत में, देख ना भूलयो मीत।
सब कुछ त्याग हरिचरन में, सुनयो सतगुर सीख।।
सखा संग ना को भयो, सुन ले मूढ़े चीत।
सतनाम जप उतरो, भवजल गहरी भीत।।
क्या जोबन क्या माल धन, क्या बड़ा परिवार।
क्या हकूमत देस की, सिर झूले छतर अपार।।
मटक मटक कर चालता, जोबनवन्त सरीर।
भया दीवाना बावरा, रोवत फिरे आख़ीर।।
सब कुछ सम्पत छाड के, चला अकेला अन्त।
मोहे बताओ मूरखा, कहाँ रही बनाई बन्त।।
इस सागर संसार में, कथन आया हरनाम।
वनज ये ही अनूप है, घालत हो बिसराम।।
स्वास स्वास हर सिमरिए, ये ही तेरी रास।
बिन सिमरे दम जो गया, सो दम जम घर वास।।
एह कथा विचार के, प्रभ नाम में रहो लवलीन।
काल करीड़ा करत है, एह तन कीजे छीन।।
तन धन सकला त्याग के, अन्त भयो नर राख।
उठ मूरख समाँ विचार के, हीरा हर को चाख।।
महल मंडप छाड के, ओढ़क जंगल बास।
चाम चरन्ते गीध नित, राख में उमगे घास।।
माटी से माटी मिला, ये तो असली बात।
माटी देख जो भूलया, सो बड़ा कमज़ात।।
तरवर रूपी जगत है, गन्ध रूप हैं साध।
जो परसे हरनाम को, ताँ का मत अगाध।।
भवसागर के तरन को, करम करे निष्काम।
आज्ञा प्रभ की में रमे, जापे निज प्रभ धाम।।

जीवन है दिन चार का, उठ सत सरूप विचार।(300)
'मंगत' बिन हरि भगत के, सब ही कूड़ पसार।।85

क्या भरवासा देह का, पल में होए वँजोग।
घड़ी सुलखनी जानिए, जो सत शबद संजोग।।

देख ये रचना जगत की, क्यों मूढ़ मन भरमाए।
ना थिरता इस जगत की, ना देह थिरी रहाए।।

जिस दर बाजत नौबताँ, गज झूलें बहु शान।
उज्जड़ खेड़े हो गए, सब चल गए बेनिशान।।

छिनभंगर ये पिंजरा, छिन में गरद समाए।
ताँ सों समाँ विचार के, करो भगत मन लाए।।

ज़ोर ज़ुलम दोनों तजो, आजिज़ हो दरबार।
सिमर नाम गोपाल का, सत सम्पत अपार।।

कहाँ सिकन्दर बिक्रमा, दुर्योधन मध मान।
कहाँ राम कहाँ रावना, नहीं देखत आए निशान।।

गुनी गए मुनी गए, साध तपोबल धारी।
सतसरूप केवल प्रभ एके, अगम शबद निरंकारी।।

वस्त अमोलक गुर दिखलाई, अगम धार अबनाशी।
मानुष जनम कदारथ होया, भरमन मिटी चौरासी।।

नित ही नित माँगो, सतनाम सत सेवा।
भाव भगत धर सिमर लो, पारगरामी देवा।।

इस मन को शान्त मिले, सतपद ले बिसराम।
अपने आप में आप समावे, लखे शबद का धाम।।

खेम कुशल पद जपो निरंजन, करें सन्त वेद पुकार।(310)
'मंगत' ये ही सत सम्पता, जग जीवन धन सार।।86

स्वास स्वास हरनाम जप, जीवन सुफला होए।
काम क्रोध मल सब हरो, नाम साबुन ले धोए।।
सब साधन की साधना, सब गुनियाँ दा ज्ञान।
प्रेम भाओ अन्तर जपे, जीव पाये बिसराम।।
स्वास सुरत से पीविए, साचो नाम अगाध।
उलट कँवल परगासया, मिटी तृष्ना व्याध।।
सतनाम जग में सार है, और सकल असार।
प्रेम भगत अन्तर जपे, परसे पद निरधार।।
लाख करोड़ी सम्पत, छिन आवे छिन जाए।
इस्थिर नाम गोबिन्द दा, जो सिमरे सुख पाए।।
चार वेद खट शास्त्र पढ़े, निध्यासन बिन भरमाए।
मिटी ना मन की कामना, बाद बदे दु:ख पाए।।
तीरथ नहावे ब्रत को साधे, ज्ञान बिना अन्धकार।
मन की कलपन तब मिटी, जब गुर शबद विचार।।
मानुष देह दुर्लभ भई, सतनाम को खाए।
तृखा मिटी संसार की, पारब्रह्म रस पाए।।
बारमबार विचारयो, साचो नाम अनमोल।
मिरतक से जीवन मिले, पूरे गुर के बोल।।
इस सागर संसार में, सभी जीव दु:ख पाए।
क्या राना क्या रंक, क्या धनी अधिकाए।।
सम्पत जेती कीजिए, अन्त चले सब छाड।
आस अँदेसे में गए, अनक जीव परमाद।।
परसो नित सतसंग को, सुनयो हर का नाम।
दुर्लभ समाँ विचार के, कर लीजो हथ दान।।
पिंजर भूम समावसी, सुन्दरवन्ता रूप।
राजसिंघासन छाड के, मिले गरद में भूप।।

ऐसो ही एह चक्कर है, आवे जावे नीत।(311)
'मंगत' सुफला जीवना, जब हरभगत परीत।।87

काया छीजत जात है, ज्यूँ बालू की भीत।
हर का नाम चितार मन, दुर्लभ जग में रीत।।

धन जोबन ना थिर रहे, ना थिर रहे परिवार।
ना थिर रहेगा तन ये, काचा चाम मंजार।।

धरतर जाए पवन जाए, जाए पावक और नीर।
राजा जाए राना जाए, जाए गुनी गहीर।।

इस्थिर साचा नाम है, एह नित करो विचार।
पलक पलक कर सिमरिए, दुर्लभ ऐसी कार।।

जो जनमें सो ही पछताए, राजा राना मीर।
वेद पढ़ता पण्डत रोवे, नहीं चित्त आवे धीर।।

अरब खरब का धनी रोए, और रोए बड़ा परवारी।
एक भगत बिन सब दु:ख पावें, देखो ज्ञान विचारी।।

बाल गया जोबन गया, जरा आई सिर धाए।
ओढ़क सभे छूट गए, तनुआँ ख़ाक समाए।।

क्या गत होई तेरी, जो बड़ा गुनी कहलाया।(312)
'मंगत' साचे नाम बिन, जीव अन्त पछताया।।88

सागर ये संसार है, रूप सराये मीत।
कोट जीव नित आवते, कोट जायें नित नीत।।

माया मोह अन्धकार में, सभी पसारे पाए।
सम्पत सकली जगत की, अन्त छाड सभी जाये।।

जुगा जुगंतर खेल है, मारग ये संसार।
स्थिर कोई ना रहे, बिना रूप करतार।।

आसा माहीं जग आये, चले निरासे अन्त।
प्रभ माया अपार है, नित दुखिये सब जन्त।।

और का मरना देख के, कर साजन सत विचार।
इक दिन ऐसे जायँगे, छोड़ कूड़ संसार।।

गुनी ज्ञानी औलिया, स्थिर रहे नहीं कोए।
करनी जिनकी सुफल है, जग नाम तिनां दा होये।।

पूरो पूर नित आवते, जायें पूरो पूर।
सत करनी बिन जो गये, सो जग आये कूड़।।

मान मध को त्याग के, सुन साहब फ़रमान।
विच मुसाफ़त आये के, मत होईयो ग़लतान।।

चलन की नौबत बाज रही, नित रहो हुशियार।
ऐसी सम्पत खाट लो, जो अन्तकाल होवे सुखकार।।

सत करनी की खोज कर, जो अन्तकाल सुखदाये।
बिन करनी ये जीवड़ा, पावे घनी सज़ाये।।

सरजनहार दयाल को, नित राखो हिरदे माईं।
सुन पूरे गुर की सिखया, तीन काल सुख पाईं।।

सब जीवों पर मेहर कर, कहर जुलम को त्याग।
सरजनहार सो देखता, पल पल लेवे हिसाब।।

दुखियों का दु:ख दूर कर, सतनाम चित्त धार।
सुफल होवे जग आवना, नीती ये विचार।।

रल मिल संगत रूप में, सत का करो विचार।
पावें सब कल्यान को, पाप कूप होये छार।।

मारग भगती सहज ये, भय करे सब दूर।
आज्ञा माने साहब की, पावे आनन्द सरूर।।

सब साजन मिल गाईयो, सत करतार भगवन्त।(521)
'मंगत' करनी सार ये, परम शान्त देवे अन्त।।89

जग बेला फुली फुलवाड़ी, रंग रंग भौंरे आये।
फिरी रुत ख़ज़ाँ की मीता, कोई नैन देखत नहीं पाये।।

ऐसा जीवन जगत का जानो, ज्यों नदी नाओ संजोग।
जिस बिध करनी जो करी, तिसका दु:ख सुख भोग।।

उठ जाग मुसाफर साँझ भई, नित अपने पन्ध को काट।
दिन वतीत तो हो रह्या, फिर सिर आई रात।।

सत साजन संग मेल करो, नित साची रास कमाओ।
दुर्लभ फेरा जग में पाया, नित लाभ जीवन का पाओ।।

जिस साजन ने बनत बनाई, नित तिस हुकम पछानी।(1566)
'मंगत' सो ही सुघड़ सयाना, सार जीवन तिस जानी।।90

कोट जीव नित आवें जावें, बिना भगत ना पावें ठौर।
तृष्ना अगन में नित ही जलें, नहीं सिमरें नाम हज़ूर।।

अपना भरम नित आप बन्धाई, अनमत जीव दु:ख पावे।
सत करतार ना हिरदे सिमरे, नित आवे नित जावे।।

साध-जनाँ की सीख नहीं लीनी, ना कुछ किया विचारा।
झूट वक्खर को संचत करके, उठ चलया वन्जारा।।

अपनी करनी भई दु:खदाई, अब रोवत क्या होई।
जो कुछ किया सो निस्चे भोगें, पावें कभूँ ना ढोई।।

ऐसे सबने उठके चलना, साजन नाँगे पाये।(1571)
'मंगत' नाम सिमर प्रभ दाता, जो तीन काल सहाये।।91

जग सुहाना देख के, बड़े गुनी जन भूले।
झूट देही की आसा धारी, नित मन मूरख फूले।।

छिन छिन तंदी स्वास की टूटे, नहीं जन भेद विचारे।
मिथ्या भोग की राख परीती, अपनी करे उजाड़े।।

अन्दर तो शत्रु घने, बाहर करे रखवारी।
कोट खज़ाने लश्कर धारे, नहीं अनमत सूझ विचारी।।

मीत बनाके घात लगावें, नहीं चले कोई चतराई।
ओड़क जब देखी उजाड़ी, तब बहुता पछताई।।

कोई जन गुनियाँ बाज़ी खेले, सब शत्रु करे रन घाता।(1572)
'मंगत' निज सरूप समावे, जुग जुग रहे रँगराता।।92

अकथ कथा पावे सार। अदभुत का पावे विचार।।
निराकार का दर्शन पाए। डोलन त्याग गुर चरन समाए।।
वडी वडियाई नहीं पारावार। अबनासी पाए गुर के दरबार।।
पूरी हिकमत पूरा हकीम। गुर उपदेस काटे भरम मुहीम।।
अमरत रूप आतम विचार। पावे शान्त मिटे बकार।।
रोते आए रोते जाएँ। राजे राने होए बे-थाएँ।।
कूड़ी दुनिया सम्बल का फूल। गुनी ज्ञानी गए सब भूल।।
अन्तर विख बाहरों रोशनाई। देख देख सब अचरज हो जाई।।
नित मिथ्या सत कर भासे। नित बिख अमरत सम चाखे।।
नित अंधकार अत घनेर। फिरें जन्त चौरासी फेर।।
सम्पत सकली अन्त को छोड़े। नज़री देख फिर बिख को जोड़े।।
बाल जोबन जरा तन खाए। मूरख देख जोबन ललचाए।।
महल अटारी हाथी घोड़। चले अकेला अन्त सब छोड़।।
नित बिकार में रहे परबीन। भोग विकार में विरती लीन।।
भोगे भोग नित अशान्त। माया जाल अचरज भरान्त।।
लाख करोड़ी मन नहीं धीर। दर दर माँगें रंक मिटे नहीं तकसीर।।
बहु परवारी नित ही नित रोए। निर परवारी जीवन दु:ख में खोए।।
बैठ सिंघासन राजा हैरान। कठन कराल है काल का बान।।
सब ही रोएँ दिन और रात। धनी दलिद्री क्या गुनी गुनात।।
अचरज लीला धारी करतार। चारखानी में रहे आप भरतार।।
जिसको सतगुर मेला होए। शरधा प्रेम से चरन को धोए।।
सतसरूप का लेवे ज्ञान। पूरे गुर ज्यों करें बखान।।

नित ही नित साधन करे, गुर का शबद अगाध।(81)
'मंगत' पावे परमगत, सुन गुर का सम्बाद।।93

रे मन जाग जप नाम सवेरा। दुर्लभ पाया जग में फेरा।।
ये ही घड़ी सुकृत कर जानो। दीनदयाल की सेव पहचानो।।
झूटा संसा है संसार। मिथ्या कल्पत लागा विकार।।
छिन भंगर सब भोग की किरया। भोग-भोग नहीं मन सुख धरया।।
जीवन में तो बहुत मौज करीनी। अन्त समे की नहीं ख़बर लीनी।।
नाना सम्पत जो अपनी कर जानी। एक पलक में हो जाए बेगानी।।
किसका साक संग पुत्त धीया। किसका माल धन मुलखीया।।
किसकी जोरू किसके भाई। किसका राज तेज वडियाई।।
सुन्दर रूप तन तेरो नाहीं। अन्त त्याग करे तिस ताईं।।
मिरतक देही चली शमशाने। सब ही आवें अन्त इस ठकाने।।
कोई अगन लगाके फूँके काया। कोई भूमी अन्दर देह गड़ाया।।
हिन्दू जलावे तुरकू गाड़े। देख लीला नर हो हुशयारे।।
सब पर खेल खेले सो ग़ाज़ी। छूट सके ना पंडत क़ाज़ी।।
पीर पैग़म्बर नबी दरवेशा। काल सभी का लेवे लेखा।।
राजा छोड़ सिंघासन चाले। रानी गई छोड़ सेज बछाले।।
परवारी चला छोड़ परवार। धनी चला छोड़ गंज अपार।।
सब ही चले सब ही जाएँ। इस्थिर रहें न दुनिया माएँ।।
आवे जावे ज्यों रहट की घड़या। खाली जावे आवे नर भरया।।
कूच कूच की नौबत बाजे। काल कराल नित सिर पर गाजे।।

मुट्ठी बाँधे जगत में आए, खाली चले आख़ीर।
तृन मात्तर ना संग चले, सभी भए दिलगीर।।

हर का सिमरन जिस रास मन लेई। चले ठकाने छाड के देही।।
झूटी दुनिया तज सिमरे प्रभ नाम। पूरन करम भयो जीव पायो बिसराम।।

सिमरन साचे नाम का, दुर्लभ कारज जान।
अन्त काल पछताए सब, जब छाडे कूड़ जहान।।

मन तूँ साचा हो रहो, सिमर के साचा नाम।(111)
'मंगत' विपता जग घनी, राम देवे बिसराम।।94

लोक कटुम्ब छाड के, आयो तुम्हारे द्वार।
सरन पड़े की लाज रख, तू साहब सरजनहार।।

बिपत घनी संसार में देखी। जनम मरन दु:ख अधिक वशेखी।।
सभे जीव रहें भयभीत। मेरो मेरी सब कूड़ परीत।।
बाला बूढ़ा और जोबनवन्त। सब ही देखे अधिक तिरखन्त।।
पण्डत ज्ञानी क़ाज़ी शेख़। काल पछाड़े सभी का भेख।।
नाचन कूदन खेल खिलाड़। समाँ गँवायो विच कूड़ विचार।।
हीरा जनम साहब ने दीना। बिना बन्दगी बन रह्यो कमीना।।
बन्दा होके ना बन्दगी कीनी। कूड़ी मौज में औध बतीनी।।
अन्तकाल होवे दु:ख भारी। काल मुगधर जब सिर पर मारी।।
यहाँ तो बैठे हो बन सरकार। आगे दरगाह में होवे धृगकार।।
यहाँ तो भोगे भोग मनमाने। आगे अगनी नर नरक पछाने।।
यहाँ तो बैठा हो वड परवारी। आगे लेखा केवल सिर भारी।।
यहाँ तो हुआ अरब खरब का वाली। अन्त को चला हाथ ले खाली।।
यहां तो हुकम सब पर फ़रमावे। अन्त को बाँधा विच दरगाहे जावे।।
यहां तो देखे ना कोई आप समान। अन्त को देखे जम अति बलवान।।
यहां तो हो बैठे जोबनवन्त। अन्त काल जम सहवे डन्त।।
मान गुमान छाडो गुनी मीत। सकली सोभा अन्त होवे बिपरीत।।
साध जनाँ का सुनयो फ़रमान। जिन्हाँ जीते तीन जहान।।
सबके ऊपर तिन का तेज। सबसे ऊँची लीनी तिन सेज।।
गवन विनास पायो सत ठौर। अमरत पीवें नित आनन्द अघोर।।
मन का संसा है संसार। सब ही मिथ्या बिना करतार।।

केवल राखो मन में तिस टेक। करो पछान तिसका सच लेख।।
हर की भगत कीरत मन राखो। दीन ग़रीबी का अमरत चाखो।।

बड़े बड़े मानी और, बड़े साहब तदबीर।(112)
'मंगत' चाला ना चले, जब काल गरास शरीर।।95

अपने मन को नित समझाई। सत ठाकर की प्रीत ध्याई।।
भवजल दुस्तर से उतरे पार। साचा नाम जिस कियो विचार।।
मूढ़पना छोड़ अभिमान। साची भगत हिरदे पहचान।।
असगाह सागर ये जगत पसार। कारन करता भज करतार।।
तेरा जीवन तब ही सुखदाई। सत परतीत प्रभ एक ध्याई।।
साची सीख सुनो चित लाये। बिन हरि सिमरन नित दुःख पाये।।
उस घड़ी की करो पहचान। जब ये काया जले अगन मचान।।
उस घड़ी का करो विचार। जब त्यागें देही घर बार।।
उस पलक का करो ध्यान। जब निवास करें शमशान।।
वकत आखीर मन माहीं विचार। जब नर छोड़े भरे अम्बार।।
अन्तकाल की करो तैयारी। कोई ना संगी उस घड़ी विचारी।।
जब देह छूटी क्या गत होई। करो विचार जीवन ना खोई।।
काल कराल जब आन पुकारे। कौन सहायक होवे सुखकारे।।
जमकाल जब शासना देवे। कौन छुड़ाये मुग़दर जब सहवे।।
अती भयानक गरभ की जूनी। उलटा लटके करम भगूनी।।
कोई ना साथी उस रोज़ का होई। जब जमराज सिर आन खलोई।।
सकली वस्त होई बेगानी। चला निरासा जग से प्रानी।।
नाती सुत दारा परिवार। महल मण्डप द्रब्य अपार।।
हुकम हुकाम तजी जागीर। विच मुसाफ़त भयो दिलग़ीर।।

सब जग माया चक्कर में, तीन काल भरमाये।(409)
'मंगत' उभरे सो गुनी, जो प्रभ चरन ध्याये।।96

मिथ्या जग से पाया छुटकारा। अन्तरगत सतनाम विचारा।।
साची ओट मन लीन समाई। सरब सनातन सतनाम ध्याई।।
जो देखा सो काल गरासी। करम विकार से फिरे चौरासी।।
चार दिनाँ जग जीना पाया। तिसको देख मन बहु पछताया।।
राजा राना गुनी गुनवंता। सब ही मोहे माया भगवंता।।
झूट वस्तु संग हेत लगाई। सरब त्याग अंत को जाई।।
सुख की रीत पाई नहीं सार। नाना भोग दु:ख लीने धार।।
झूट को देख नर फिर भरमाई। वाह वाह रचना माया रचनाई।।
मरन को देखे पर फिर भुलाया। मिथ्या भोग में नित गरसाया।।
कोटाँ कोट नित आवत जायें। पल पल घड़ी ये लेख लखायें।।
अपना मरन नहीं कियो पछाना। वाह भरमाया माया भगवाना।।
आवत जावत नित देखे अकेला। भरम का बाँधा फिर रचया मेला।।
कोई सखा ना होवत अंत सहाई। नौबत चलने की जब काल बजाई।।
कूड़ भरवास में जनम गँवाया। चलन की बारी नर बहु पछताया।।
तृन ना चलियो संग अंत की बारी। झूटे कोट और महल उसारी।।
द्रब खज़ाना सब भयो बेग़ाना। चला मुसाफ़िर जग से हो नमाना।।
कूड़े भरम में गया भरमाई। माया मोह्या नहीं सार को पाई।।
रंग तमाशे सब कूड़ रचाए। अंत की बारी देह छार समाये।।
भरम बकार जो नित धारी। सो ही करे नित जीव ख़वारी।।
ना मोह नासा ना मारग सूझा। सार विसार भाया चित्त दूजा।।
खल बुद्धी नित भरम भरमाई। झूट भरवास में जनम गँवाई।।
अपनी करनी पर नर पछतावें। जम दरबार जब बाँधा जावें।।
जीवन में लियो होश सँभाल। पल पल लेखा लेवे दलाल।।
साची कीरत सतनाम को चेत। दुर्लभ करनी हरे भरम विखेप।।

माया भरम विकार में, नित ही जीव भरमाये।(676)
'मंगत' भरमन तब मिटे, जब सतनाम चित्त गाये।।97

साची भगत आराध मन मेरे। हर के चरन में सुख घनेरे।।
जगत की आस तज हर ओट सँभाल। सरजनहार सो नित रछपाल।।
परम आनन्द नित परगासा। सिमर सिमर तू सो अबनाशा।।
कूड़ जीवन संसार में पाया। अंतकाल नर राख समाया।।
महल अटारी दरभ ख़ज़ाना। सबको छाड के चले अन्त निमाना।।
पुत्तर धीयाँ नाती परवार। चले ना कोऊ संग मरती बार।।
बाती तेल ज्यों जोती परगासे। तेल निखुटा जोती विनासे।।
छीजे प्रान काया कुमलाए। भयो निमाना जाए भस्म समाए।।
सोना रूपा बहु संचित कीना। भयो बिगाना जब काल ग्रस लीना।।
रे मन खोल तू अपने नैन। इस जग में कौन सखा कौन सैन।।
नदी नाओ ज्यों जीव पधारे। छिन में अपने अपने पंध सिधारे।।
चार दिनाँ जग जीवन मेला। अदभुत रचया प्रभ ने खेला।।
उठ रे मन होश सँभाल। बिन हरि सिमरन कूड़ जंजाल।।
झूटे लालच क्यों लिपटाया। सत सरूप को क्यों विसराया।।
जम काल लेवे देह गिरासे। छाड जगत चले अन्त उदासे।।
कहाँ से नर आया कहाँ तू जाये। विच मुसाफ़त क्यों भरमाये।।
एह जग रचना साहब फुलवाड़ी। देख ना भूलयो सुन बचन गुनकारी।।
क्या गुनी क्या ज्ञानी बल सूरा। काल करे सबका सिर चूरा।।
सत सागर का घूँट करे, पर्वत तली उठाए।
एक पलक की आन में, काल गयो तिन खाए।।
नाचन कूदन छाड मन मूढ़े। भगत पछान मिटें करम करूरे।।
अनंक पाप करें दिन राती। अपने आप का बनें क्यों घाती।।
निद्रा त्याग उठ जागन जाग। साचा लेखा नित लिख वडभाग।।
साचा प्रीतम दियो विसार। छिन छिन जलें अगन अंगयार।।
धन जोबन का करें गुमान। एक पलक में उड़ें धूड़ समान।।

मूरख मन विचार कर, नित आनन्द सरूप।(862)
'मंगत' बिन हरि भगत के, सब जग बिख का रूप।।98

बिख बीजे नर बिख ही खाए। बिख की आस में जनम गँवाए।।
अमरत नाम बिन रोए दिन राती। एक पलक नहीं चित्त शान्त समाती।।
कूड़ झंजट में नित गरसीना। काल का बाँधा नित भरमीना।।
अनंक विकार चित्त माहीं चितारे। खावे बिख पावे दु:ख अपारे।।
जितनी सम्पत उतना दु:ख भारी। नित ही दु:ख में फिरें परवारी।।
बड़े बड़े धन माल के वाली। अन्त चले नर ले हथ खाली।।
अपना सब कुछ नित बनावे। होवे बिगाना जब जम गरसावे।।
कौड़ी कौड़ी जोड़े धनवादी। छाड ख़ज़ाना चले अपराधी।।
दुष्ट करम कमाए दिन राती। बिना भगत मन पाप ही थापी।।
विषे भोग भोगे मनमाने। मरन विसार भयो ग़लताने।।
कूड़ देही का बहु साँग बनाए। निकले प्रान छिन राख समाए।।
तुच्छ जीवन का क्यों करें गुमाना। रहन ना पावे कोऊ राजा राना।।
कहाँ दुर्योधन छतर सिर धारी। सोलह जोजन जाँ की झलक झलकारी।।
कहाँ शीशपाल भीम बलवान। कहाँ अर्जुन कहाँ तिसके बान।।
कहाँ रावन जिस काल बँधायो। कहाँ राम जिस अवतार कहलायो।।
कहाँ धनंतर कहाँ अशवनी कुमारा। कहाँ कंस कहाँ जरासिंध दुलारा।।
कहाँ भीषम कहाँ द्रोन आचारी। कहाँ करन अती बलकारी।।
कहाँ विक्रम सिकन्दर दारा। कहाँ मुगल कहाँ ग़ौर बलधारा।।
कहाँ ज्ञानी ज्ञान तत्तवादी। कहाँ योगी जो लाएँ योग समाधी।।
जो आए सो गए समाए। चक्कर काल का अगम अथाए।।
समय पाए विरंच विनासे। समय पाए शिव को काल गिरासे।।
समय पाए विषनू देह त्यागे। छूट सके ना कोई काल के आगे।।
धरती जाए जाए पवन और नीरा। जाए अम्बर पावक खीरा।।
समय आए सब लीन समाए। साचा रूप रह्यो राम अगाये।।

सब जग काल सरूप है, छिन छिन रूप वटाए।(863)
'मंगत' साचा सो प्रभ मेरा, जो वाध घाट नहीं पाए।।99

अमरत अन्तर बाहर बिख खाई। मोह वस होके आवे जाई।।
कह कारन तूँ जीवन जीवे। सार असार का निरनय लीवे।।
कहाँ से आया कहाँ समाई। कौन मारग कौन लेख लखाई।।
देह पिण्ड तेरा किसने साजा। खोज करो जो तुध माहीं बिराजा।।
बोलनहार का करो विचार। दुर्मत माया का मिटे अन्धकार।।
साखी पुरख का लेख लखाओ। भरम गुबार का होवे अभाओ।।
निर्मल तत्त नित करो विचार। बन्धी छूट पावें सुख सार।।
देह के सुख में क्यों गरसाया। देह विनास सुख कहाँ समाया।।
देह की ममता क्यों नर धारी। छार समावे अन्त की बारी।।
अकड़ अकड़ पग भूमी धारें। मल मूत्तर की नहीं खान विचारें।।
जैसा आया तैसा जायें। संग सखा तेरा कोई जग नायें।।
अपनी देही तेरी ना होई। और मितर संग कौन चलोई।।
अन्धमत त्याग खोज विवेक। सरजनहार का नित लख लेख।।
अन्त की बारी नर पछताना। छाड जायें जब बाग़ सुहाना।।
साचा पुरख जीवत में पेख। सतपुरषों का सुन ये लेख।।
आतम शकत खोज विचार। परसे नाद परम सुख सार।।
सो ही तेरा जीवावनहारा। साखी पुरष सो ही भरतारा।।
नित ही तिसमें निश्चय राख। साधजनाँ की रसना चाख।।
झूट देही का मोह त्याग। आतम खोज पुरख वडभाग।।

देह की ममता ना मिटे, जो जुग चारे भोग।(1000)
'मंगत' मिथ्या भरम में, लागे दीरघ रोग।।100

कूड़ भरम में क्यों नर फूला। काल झुलावे सबको झूला।।
झूट देही ले जग में आया। सत आतम का भेद नहीं पाया।।
झूट देही सो झूट हो गई। मूढ़मती बिरथा दु:ख सही।।
झूट देही संग जो करी परीती। अन्त की बार भई दु:ख रीती।।
किस वस्तु का मान तूँ राखें। सरजनहार जो नहीं चित्त भाखें।।
हाड माँस नाड़ी का पिंजर। पाँच तत्त का धारा मन्दर।।
किस वस्तु का मान तूँ राखें। मिथ्या भोग में दु:ख को भाखें।।
समाँ पाये देह नष्ट हो जाये। तेरी हिकमत चले कछु नाये।।
रोता आया जाये पछताये। राजे राने गुनी गुनराये।।
अपना जीवन करो विचार। झूटी देह रहे दिन चार।।
सत तत्त आतम खोज आनन्द। काल करम से छूटे जिन्द।।
मन की तृखा सकल विनासी। जो चित्त ध्यावें शबद अबनाशी।।
अमोलक समाँ नहीं पलक गँवाओ। आतम खोज परम सुख पाओ।।
मान गुमान जो इच्छया धारी। अन्तकाल होवे देह छारी।।
कोई वस्तु इस्थिर नाहीं। किस वस्तु का मान लखाईं।।
धन परिवार ना इस्थिर रहाई। सुन्दर देह छिन राख समाई।।
तृष्ना रोग नहीं मिटने पाये। एह बिध कोट जनम भुगताये।।
बिना ज्ञान ना शान्त पायें। पूरो पूर नित आवें जायें।।
सत सरूप जिस सही पछाता। गवन त्याग शबद रँगराता।।

सत शबद जिस जानया, पल पल प्रीत कमाये।(1001)
'मंगत' सो निस्तर भये, भरम जाल असगाहे।।101

अनन परीती से प्रभ ध्याओ। दुर्लभ सार जगत में पाओ।।
प्रभ का सिमरन प्रभ की सेवा। सदा दयाल होयें देवन देवा।।
नित ही नित तूँ सरन पछान। मिथ्या मोह में क्यों ग़लतान।।
तेरा जग में कोई ना होई। अपने सुख में सभी फिरोई।।
बारी बारी चलें अकेले। मूढ़ मनाँ तूँ आया मेले।।
मेला देख ना प्रभ बिसराई। साध सीख सुनो चतराई।।
सरजनहार ठाकर नित चेत। गरस सके ना मोह वखेप।।
अपना साहब जो दिया विसार। पलक व्यापे अत मोह विकार।।
ताँ सो मन में धार चतराई। पलक ना विसरे ठाकर सुखदाई।।
अती भयंकर बाज़ी जग मीता। त्रास त्रास में गुनी गुनीता।।
शान्त सरूप पायें नहीं सार। नित आवें धर मोह अन्धकार।।
कूड़ी सम्पत करें सम्भाल। अन्त चलें सब छाड जंजाल।।
मूरख जीव नहीं तृपताई। अदभुत देखे जग रचनाई।।
इक आवे इक जावन जाई। झूट धीरज ये मन बन्धाई।।
अपने चलन की करो तैयारी। साची रास प्रभ नाम विचारी।।
बारम्बार सिमर सुख देवा। पारगरामी की धारो सेवा।।
प्रभ विसार माया लिपटाया। साखी छोड़ भरमे विच छाया।।
नैन खोल के होश सम्भाल। साचा मारग धरम का भाल।।
करनी निर्मल कीजो नित नीत। साध-जनाँ की सुन सत सीख।।

जगत सराये में आया, तूँ मुसाफिर मीत।(1261)
'मंगत' निर्मल ध्यान से, साची पालो प्रीत।।102

कौन तेरा तूँ किसका होई। आज्ञा प्रभ में चक्कर चलोई।।
आये अकेला जायें निहसंग। रचयो मेला झूट परसंग।।
साची शकती खोज निधान। अन्त ना पावें दु:ख नादान।।
निश्चय चलना इक दिन मीत। सत ठाकर के गाओ गीत।।
निश्चय त्यागें सब परिवार। महल अटारी घने अम्बार।।
ओढ़क देही छार समाई। मूरख जीव क्यों लिपटाई।।
साचा नाम खोजो सुखरासी। जो जग में होई बन्ध खुलासी।।
मूढ़मती तूँ मन की छोड़। झूट सयानफ़ चित की तोड़।।
अपना अगला राह सँवार। अन्त की बारी होये सुखसार।।
सरब मिथ्या जगत पसारा। त्रैगुन माया का चक्कर अपारा।।
भरम में बान्धा जीव भरमाई। कूड़ भरोसे परम दु:ख पाई।।
अनक सयानफ़ धारी नीत। कूड़ की पाली निर्मल प्रीत।।
रोवत आयें रोवत जायें। कूड़ जगत में नहीं सुख पायें।।
साची सीख सुनो बुद्धिमाना। बिन प्रभ सेव नहीं पायें ठिकाना।।
और की छोड़ तूँ अपनी विचार। साची करनी हिरदे धार।।
सत सरूप नारायन चेत। अन्तरगत लख तूँ सत लेख।।
भरम ग़ुबार की आँधी जाई। स्थित पावें जप नाम अगाई।।
नाम रतन नित हिरदे जाप। संकट मिटे पावें परताप।।
ऊँच ज्ञाई नाम भगवन्त। पल पल माहीं हिरदे जपन्त।।

झूट भरोसा त्याग कर, सत मारग को भाल।(1262)
'मंगत' पल पल सिमर लो, प्रभ साचा दीनदयाल।।103

अगन सरूप ये जग का खेला। जल जल पड़े ये जीव दुखेला।।
वारापार ना भेद लखाई। माया भरम में खप खप जाई।।
बिना जतन नहीं मिले छुटकारी। राजे राने पावें ख़वारी।।
काल सरूप ये जग की रचना। छिन छिन नासे केवल ये सुपना।।
अपना साखी रूप विचार। मृग तृषना मिटे अन्धकार।।
सत ठाकर की प्रीत विचार। सतपुरषों की ये सिखया सार।।
जगत का खेल ये भरम फुलवाड़ी। सिमरो गोबिन्द उतरें भव पारी।।
ना कोई साक सुहेला नाती। अन्तकाल ना भयो कोई साथी।।
अत परिवार सम्पत धारी। महल कोट औसारे भारी।।
सब कुछ छाड चले निरासा। मूढ़मनाँ क्यों धरें भरवासा।।
अन्तरमुख होकर विचार। खाली आया जावें खाली सार।।
रंचक साथ ना जाई मीत। जुगाजुगन्तर ये जग की रीत।।
दाने बीने बड़े सयाने। माया चक्कर में भये हैराने।।
जीवत में मरने को पाई। वाह वाह खेल ये जग रचाई।।
भोगे भोग नहीं तृप्ती पाये। सदा अधीर ये मनुआँ समाये।।
वस्त परापत हरखत पाई। भई वंजोग दु:ख पाई अधिकाई।।
भाई मित्तर बहु संग बनाये। ओड़क चलया नाँगे पाये।।
माया मोह में जनम गँवाई। बाज़ी जूए में गयो ठगाई।।
ओड़क देही भूम समाये। मूरख जीया क्यों भरमाये।।

सरब जतन संसार में, मन को करें अधीर।(1295)
'मंगत' प्रभ की भगत से, मिटे सकल तकसीर।।104

अत संकट संसार का खेला। प्रभ माया का अचरज मेला।।
इक आवे इक जावे नीत। रूप सराये जग की रीत।।
इक जाये रोता इक मान लखाई। अन्धमत मूढ़ नहीं सार ध्याई।।
कहाँ से आया कहाँ अन्त को जाना। इस मारग का कौन ठिकाना।।
देह के मध में रहे ग़लतान। करनी साच नहीं करी पछान।।
झूट भरवासे धीर बंधाया। ओड़क जग से निरासा जाया।।
अपनी देही नहीं साथ निभाई। कौन सखा होवे सुखदाई।।
जैसी करनी सो पाई रास। बहु पछताये कूड़े भरवास।।
अब कुछ बनत बने ना मीत। कियो विचार सब दु:ख की रीत।।
जीवत में कुछ सार नहीं ध्याई। अब रोवत कछु हाथ न आई।।
जो कुछ किया सो करो सम्भाल। आगे लेखा लेवे दलाल।।
सब पर खेल खेलेगा काल। नैनाँ खोल तू देख अहवाल।।
अपना जीवन करो विचार। ओड़क रास जो हो सुख सार।।
मानुष जीवन दुर्लभ मीत। साचा सुख तूँ खोज पुनीत।।
माया भरम में ना भरमाओ। सतपुरषों की सीख लखाओ।।
दुर्मत रोग लागा वड भारी। सतगुर वैद खोजो सुखकारी।।
दुर्मत रोग का उपाय दिखलाये। साची औखद पान कराये।।
रोग विनास बुद्ध निर्मल होवे। साचे सुख की तब सार परोवे।।
जनम मरन का भय विनासी। दुर्मत नास पायो अबनाशी।।

साचा धाम विचारयो, जाँ जनम मरन नहीं लेश।(1348)
'मंगत' सुख आपार सो, कोई गुनी करे परवेश।।105

आरती एवं समता मंगल

आरती

तूँ पारब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल।
नित पाऊँ शरनागती, सत चरन कँवल दयाल।।

तूँ नित पतत उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान सन्देश।।

नित ही तेरे चरन की, मन में रहे परीत।
तूँ दाता दातार है, पुरखोत्तम सुखरीत।।

पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश।
सबको सरजनहार तूँ, आद पुरख अबनाश।।

घट घट व्यापक तूँ परमेश्वर, सरब जियाँ आधार।
अनमत कूकर को राख लें, किरपानिद्ध करतार।।

काल करम जाये दूषना, खल बुद्धी हरो अज्ञान।
सत शरधा पाऊँ चरन की, अखण्ड प्रेम चित्त ध्यान।।

दीनानाथ दयाल तूँ, पल पल होत सहाये।
कीरत साचे नाम की, मन तन आये समाये।।

अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विश्वास।
शरनागत हूँ मन्दमती, घट अन्तर करो परकाश।।

अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरख भगवान।।

तूँ साचा साहब सरब परकाशी, शबद रूप अखण्ड।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पायें आनन्द।।

होवें दयाल तूँ सत परमेश्वर, देवें धीर आपार।
निमख निमख सिमरन करूँ, चित्त चरन रहे आधार।।

काया अन्तर परतख होवें, नाद रूप बिसमाद।
पल पल कीजूँ आरती, तन मन तजूँ व्याध।।
जग आवन सुफला होवे, तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।
अन्तरगत करूँ आरती, भव दुस्तर तर जाऊँ।।
अन्धमत मूढ़ा नितप्रति, तेरे चरनी करे पुकार।(1408)
'मंगत' माँगे दीनता, सत धरम सुख सार।।106

समता मंगल

समता धरम हिरदे रसे, बिख ममता होवे नाश।
सत सरूप परमात्मा, जल थल पाऊँ परकाश।।
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जै जैकार।।
सत करम सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।(1409)
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार।।107

चेतावनी

(1) ये समता प्रकाश बाणी मूल-वॉक शुद्ध सरूप लिखित है। किसी को अक्षर, चौपाई व श्लोक भंग करने की कोई समरथ नहीं है।

(2) किसी किस्म की भी पूजा, भेंट, शृंगार और नुमायश ग्रन्थ की मना है। सिर्फ श्रद्धा भाव से बाणी का श्रवण, मनन और निध्यासन करना ही कल्याणकारी है।

(3) *जब कभी ज़रूरत पड़े तो भिन्न-भिन्न भागों में भी बाणी की छपवाई कराने की आज्ञा है।

(4) ये समता शास्त्र निश्चयात्मक भाओ को प्रकाशने वाला है और सत पुरषार्थ जीवन उन्नति के देने वाला है।

सत भाओ से प्रबोधित करना परम सुफलता है।
सरब साक्षी सरूप परमेश्वर की आज्ञा सम्पूर्ण हुई।

ह0 मंगतराम (उर्दू में)
समां एकान्त निवास, सिद्ध खड्ड-मसूरी
ज़िला देहरादून।
बैसाख संक्रांत संवत २००५ बिक्रमी

*(जैसा कि इस संकलन में किया गया हैं)

शब्दार्थ

अ

अबगत - गति रहित
अनूप - अनोखा, बे मिसाल
अतुल - जिसकी तुलना न हो सके, अप्रमाण
अरदास - प्रार्थना
अकथ - अवर्णनीय
अकरम - निष्काम कर्म
अज - अजर, बिना परिवर्तन वाला
अखेवा - अविनाशी, अवर्णनीय
अलोप - अदृश्य, छिपा हुआ
अलेप - जो लिप्त न हो
अगाध - असीम
अपरम - जिसका पारावार नहीं
अभेद - जिसका भेद न पाया जा सके
अनामी - जो नाम के बन्धन में न आए
अजर - एक रस रहने वाला, जिसको जरा अवस्था प्राप्त नहीं होती
अबनास - जिसका नाश न हो, अविनाशी
अछेद - जिसको कोई जीत न सके
अगोचर - इन्द्रियों के अनुभव में न आने वाला
अमीरस - जिस रस को पीकर अमर हो जाए
अगाहे - अथाह
अलबेला - मनमौजी (अनोखा), मूर्ख जैसा
अनहद - सीमा रहित
अचिन्त - जो चिन्तन में न आ सके
अद्वैत - द्वैत रहित, केवल वही, एक के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं अतुल
अच-पच - अकल्पनीय
अहवाल - हालत
अनाद - पाँच तत्व तथा पच्चीस गुणों के
अनील बन्धन से दूर अर्थात ईश्वर
अनाद - आदि अंत रहित
अधम - नीच
अरश - अर्श, आकाश
अबदी - सदा रहने वाली
अजूनी - योनि रहित, अजन्मा
अगनहोत्तर - हवन
अमोलक - बहुमूल्य
अभेवा - अभय
अकलीम - मुल्क
अनीता - अधर्मी
अच्छर - अक्षर, अविनाशी
अनन - अनन्य, जिसमें अन्य न हो
अखय - अक्षय, जिसका नाश न हो
अत - अति
अम्बर - आकाश
अनमत - अंधमति, मूढ़
अगन - आग
अनक - अनेक
अचरज - आश्चर्य
अलपना - अलेप, जो लिप्त न हो
अगम-निगम - शास्त्र, वेद
अजलाश - समूह
अस्थावर - वनस्पति, अचल
असरार - भेद
अनखुट - बहुत अधिक, न समाप्त होने वाला
अनवर्चित - अवर्णनीय
अन्देसा - डर, भय
अनासुरत - असोच
अथाई - अथाह

अलूम - विद्याएं
अफयून - अफीम
अस्तर - औजार, हथियार
अशनाई - मित्र
अरूप - जिसका रूप नहीं
अक्रह - अकर्ता
अकानत - एकान्त
आपारी - जिसका पारावार नहीं, जिसकी सीमा नहीं
आदेश - प्रणाम
आध-ब्याधी - रोग-सोग
आलख - अदृष्य
आन - अभिमान
आराध - पूज
आपामत - अहंकार
आखिए - कहिए
आपा - अहंकार
आजजी - नम्रता दीनता
आध - रोग
आब - पानी
आतिश - आग
आफताब - सूर्य
आद - आरम्भ, युगों से पहले
आजार - दु:ख
आपद - आपत्ति
आठ अट्ठारा- आठ-पाँच भूत,मन बुद्धि, अहंकार। अट्ठारा-पाँच कर्म इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ, पाँच तन्मात्राएं, मन, बुद्धि, अहंकार।
आंकुश - अंकुश, हाथी के सिर पर मारने पाला शस्त्र
आरजा - प्रार्थना
आपत - आपत्ति
आबेहयात - अमृत
आखूआँ - अखण्ड
आपाध - दु:ख
आगाज - प्रारंभ
ओट - सहारा, आश्रय
ओढ़क - अंत, आखिर
औसारा - बनाया
औखद - औषधि
औघट - कठिन
औखी - मुश्किल
औगन - अवगुण
औसर - आयु
अंजन - प्रकृति, माया
अंगूरी - अंकुरित
अंडज - अंडों से पैदा होने वाला जीव
अंजली - चुल्ली (हाथ में जितना पानी आता है)

इ

इकबाल - प्रधानता, बड़ाई
इलहाम - आकाश वाणी, ईश्वरीय वाणी
इकान्त - एकान्त, सुनसान जगह
इलाही - भगवान, परमात्मा
इजराईल - यमराज के दूत यमदूत
इलम - इल्म, विद्या
इरध-उरध - नीचे-ऊपर
इत-उत - इधर-उधर
इसरार - भेद
इक - एक
21600 मनियाँ- 24 घंटो में स्वासों की गिनती

उ

उपमा - उदाहरण, प्रमाण
उजागर - जाहिर, प्रगट
उद्यम - मेहनत, हिम्मत
उपरस - इन्द्रियों के रस से बेलगाव
उषण - गर्म
उम्मत - सम्प्रदाय, इस्लामी समाज

उपाध - प्रकृति का कोप
उनमुन - संकल्प विकल्प रहित अवस्था
उमगे - उठे, उगना
उसारे - बनाए
उध्यान - उद्यान, बगीचा
उपरामी - अशान्त
उलहासे - प्रकाशवान है
उगाड़ी - ताला खोलना
अदभुज - पेड़ पौधे (जमीन से पैदा होने वाले)
उस्तत - स्तुति

क

कराल - भयकारी
कन्द - मीठी
कथना - कहानी, कहना
करूर - कराल, पाप कर्म
करतार - ईश्वर
कला - हुनर
कलपत - कल्पना
कजा - मौत
कलमा - वचन
कफार - प्रायश्चित
कलपना - मन का फुरना
कलबिख - विषैली कल्पना
कमजात - नीच
कदारथ - कृतार्थ, निहाल
कल्लर - जो लाभकारी न हो, जो भूमि उपजाऊ न हो
कलबूत - पुतला
कन्त - पति
कतेब - धार्मिक पुस्तकें
काल-कलौ - काल-चक्र
करड़ा - मलीनता, कठिन
करारी - अशान्ति
कलोल - खेलना, खिलाना
कारज - कार्य
काची - कच्ची
कादिर - ईश्वर, प्रकृति का मालिक
कार - कार्य, करनी
काढ़े - उतारें
काफर - काफिर, नास्तिक
कासा - प्याला
कामन सयानी - बुद्धिमान पत्नी
किरपा - कृपा
किरपाल - कृपालु
किरया - कर्म, क्रिया
किलारा - कमल का विकसित होना
कित - किधर, कहीं
किंगरी - बीन, सितार, नाद की ध्वनि
कीरत - कीर्तन
कुटलाई - कठोरता
कुलेल - चलना (रुचि के साथ)
कुपथ - बदपरहेजी, कुमार्ग
कुतेब - धार्मिक किताबें
कुलवन्त - कुलीन
कुफर - झूट, कमीना
कुसत्त - असत, पाप
कुठाला - मुश्किल, कठिन
कुंट - दिशाएं
कुच - स्तन (दूध पिलाने का)
कुलीन - बाहरी पवित्रता, शिष्ट
कुफल - ताला
कूप - कुआं, ढेर
कूड़ - झूट
कूकड़ी - मुर्गी
कोह - पहाड़
कौतक - खेल
केरा - का
केते - कितने, बहुत
कैहर - जुल्म

ख

खल बुद्धि	-	दुष्ट बुद्धि, मलीन बुद्धि
खप-खप	-	पच-पच, भटक-भटक कर
खलकत	-	संसारी जीव
ख्वाहिश	-	इच्छा
खट्‌टे	-	कमाई करे
खट-दर्शन	-	छै शास्त्र
खडाए	-	खेल खिलाना
खण्डा	-	तलवार
खसलत	-	आदत, स्वभाव
खुमर	-	खुमारी
खलकामी	-	बुरी कामना वाला
खवार	-	परेशान होना, भटकना
खबर गुजारी	-	खबर लेना, खोजना
खलोई	-	खड़ी हो गयी
खट	-	छै
खय	-	क्षय, नाश
खलक	-	खलकत, जीव-जन्तु
खालक	-	ईश्वर
खारी	-	कर्मों की दूषना या मैल
खादिम	-	सेवक
खाट	-	कमाई कर लो
खाण्डे	-	तलवार
खामी	-	कमी
खातून	-	औरत, नारी
खिवनी	-	क्षमा भाव
खिमा	-	क्षमा
खिजाँ	-	पतझड़
खुलासी	-	छुटकारा
खुवारी	-	परेशानी
खुदिया	-	भूख
खुँब	-	वस्त्र साफ करने की विधि, सफेद
खेद	-	दु:ख
खेड़, खेड़े	-	खेल, खेलना
खेही	-	राख
खेवट	-	नाव चलाने वाला
खोडस	-	षोडस, सोलह (16)

ग

गत	-	गति, हालात
गरसावे	-	ग्रसित, फंसा हुआ
गम	-	गमता, पता, पहुँच, दु:ख
गफलत	-	लापरवाही
गवन	-	जन्म-मरण
गनीम	-	दुश्मन, शत्रु
गहीरा	-	अधिक गुणों वाला
गजब	-	गुस्सा, क्रोध, अजीव
गण्डे	-	जोड़ना
गरामी	-	जो सृष्टि से परे है
गरूर	-	घमण्ड
गमता	-	पहुँच
गरब	-	अभिमान, अहंकार
गरभ	-	गर्भ
गरद	-	धूल
गत मित	-	मितभेद
गलतान	-	निमग्न
गदा	-	भिखारी
गादी	-	गद्‌दी
गालो	-	गला देना (सत्कर्म में लीन करो)
गाम	-	ठिकाना
गादीपत	-	गद्‌दी का मालिक
गाधी	-	गद्‌दी
गाफिल	-	भूला हुआ
गुमान	-	घमंड, अहंकार
गुबार	-	गर्द, धूल
गुरबत	-	निर्मानता
गूड़ा	-	घना, गाढ़ा
गेड़	-	चक्र
गैब	-	जो देखा न जाए
गोहर	-	मोती (सच्चा)

गंज - खज़ाना

ध

धनेरी - गाढ़ी, घनी
(पुरख) धनैया- परमात्मा
धड़ीने - धड़ दिया, बनाए
धाती - मारने वाला (धातक)
धँड़ियार - गद्दी दार गुरु
धाल - कमाई सत् की

च

चराचर - स्थावर जंगम, चर अचर
चार पदारथ - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
चरंजीव - अमर
चकरवर्त - सब दुनिया का राज्य
चारखानी - अण्डज, जेरज (पिण्डज), उद्भिज, स्वेदज
चार कुण्ट - चारों दिशाएं
चाख - चखना
चारबानी - परा, पश्यन्ति, मध्यमा, बैखरी
चार, अठारह- चार वेद, अठाहर
नौ - पुराण, नौ स्मृतियाँ
चार चौदां - चार अवस्थाएं-जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरिया।
चौदह - पाँच ज्ञान इन्द्रिया, पाँच कर्म इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि चित्त, अहंकार
चितार - याद कर
चीने - जानना, पहचानना
चीता - शेर की जाति
चुनारा - उत्पन्न करना
चूके - समाप्त हो जाए
चोग - प्रेम की धारणा
चोवे - टपकना
चौदस चन्दर- चौहदवीं का चाँद
चौदां लोक - पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ, पाँच कर्म इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार।
चौगान - खेल (पोलो), नाम का सिमरण
चौंप - लगन
चंगेरी - अच्छी

छ

छतर - राजा के सिर पर तानने वाली छतरी
छर - क्षर, नाशवान
छरे-छरावे - नाश होने वाला
छार - राख, नाश
छाड - छोड़ना
छीना - मिट जाना, नाश हो जाना
छीर - दूध
छिन-छिन - क्षण-क्षण

ज

जरा - बुढ़ापा
जकात - दान
जलाल - प्रकाश
जबत - काबू कर लेना
जन्नत - स्वर्ग
जनत - जन्त, जीव, स्वर्ग
जस - यश
जहूरा - जाहिर होना
जती - यती, सन्यासी
जतन - यत्न
जन्त - जीव
जामी - चोला, जन्म
जाता - जान लिया
जावेद - हमेशा (जीवन दे रहा)
जानाई - ज्ञान
जामनी - जमानत
जात - जाति

जिकर - कहना
जीया - जीव
जुगत - युक्ति
जून - योनी
जोजन - योजन (दूरी की इकाई)
जोवे - पाए (ढूँढ कर)
जोत - ज्योति
जोवन - यौवन
जोए - पैदा करता
जंत - जीव जन्तु
जंगम - चलने वाले

झ

झागी - (दु:ख) सहन करना पड़ता है
झूरा - दु:ख, संताप

ट

टहल - सेवा अर्थात् स्मरण ध्यान
टाटी - परदा
टाटरी - परदा
टेक - आश्रय, सहारा

ठ

ठाके - रोके
ठाम - ठिकाना
ठौर - ठिकाना

ड

डहकाए - भटकाए
डीठ - दर्शन

ढ

ढहकाई - भटकना
ढोई - ठिकाना

त

तकसीर - गुनाह, पाप कर्म
तजो - छाड़ो
तरासा, तिरास- डर
तकबीर - मन्त्र, कलमा
तदबीर - उपाय, तरकीब
तसब्वर - ध्यान, ख्याल
तसबी - माला
तमा - लालच, लोभ
तरीकत - तरीका, युक्ति
तबक - मुसलमानी शरह अनुसार सात जमीन और सात आसमान के स्तर
तरबेनी - त्रिबेणी, त्रिकुटी
तरवर - वृक्ष
तरावत - प्रेम अश्रु
तहकीक - खोज
तसबीह - माला
तग, तज्ञ - फाँस
तरक - छोड़ना
तास्सुब - द्वेष
तारीकी - अँधेरा
ताता - गर्म
तिरखाया - प्यासा तृष्णा से
तिमर - अंधेरा
तिरिया - स्त्री, नारी
तिरास - भय
तीन काल - भूत, वर्तमान, भविष्य
तीन ताप - आधि, व्याधि, उपाधि
तीन भवन - पृथ्वी, आकाश, पाताल
तीखन बाट - कठिन रास्ता
तीन अवस्था - जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति
तुद माई - तेरे अन्दर
तुट्ठा - दर्शन पाया
तुल - समान, बराबर

तूर - शब्द की ध्वनि
तेग - तलबार
तोड़ - आखीर, अंत
तोबा - प्रायश्चित
तोसा - सफर का सामान, संतोष
तौक - हार, गले का जेबर
तौरेत - यहूदियों की धार्मिक पुस्तक
तंदी - स्वास की धारा

थ

थाप - लगा, आवाज़
थाओ, थाई - स्थान
थोयो - है
थोथा - खोखला, व्यर्थ

द

दरसाऊँ - देखूँ
दरवेश - फकीर
दम्भ - पाखण्ड
दगबाज - धोखेबाज
दलिद्दर - आलस्य, मलीनता
दात - देन
दारा - स्त्री
दामन - पल्ला
दा - का
दायम - हमेशा
दारूद - समाप्ति
दारू - इलाज
दिवस - दिन
दिलगीर - चिंतित
दीदार - दर्शन
दीख - दात, देन
दुस्तर - जो तरने में कठिन हो
दुरमत - मलीन बुद्धि
दु:खभन्जन - दु:ख नाशक
दुर्गम - कठिन
दुर्लभ - विरला
दुबधा - संदेह
दुर्भिख - अकाल
दुतिया - दुई (द्वन्द्व)
दूषना - मलीनता
दूजा - दूसरा
देवल - देवता (देह रूपी मंदिर)
दोज़ख - नर्क
दोख - दोष
द्रब - धन

ध

धरनी - धरती
धन्दुकार - अज्ञानता, अंधकार
धृगकार - धिक्कार
धाए, धावे - दौड़ना
धावन - दौड़ना
धीरा - धैर्य
धीया - बेटी
धूड़ी - चरण रज
धैन - (सुख) देने वाला
धंदा - कर्म

न

नफस - मनोकामना
नबेड़ा - निपटारा
नया - न्याय
नभचर - उड़ने वाले पक्षी
नरद - शतरंज की गोटी
न्यूँ - अनन्य प्रेम, प्रीती
नरखे - देखे
नलनी सूआ - जैसे तोते को नली का भ्रम होता है
नदरी नदर - कृपा दृष्टि
नाद - आत्म ध्वनि
नासूत - जागृत अवस्था
नाथा - मालिक, स्वामी

नाठे - भाग जाना
निरंजन - निर्विकार, माया से रहित
निधान - खजाना, भण्डार
निहाल - प्रसन्नचित्त
निरधार - जो किसी पर आश्रित न हो
निराकार - आकार रहित
निवाऊँ - झुकाना
निस्तारी - छुटकारा
निमख-निमख- प्रत्येक क्षण
निर्वाच - जो वाणी में न आ सके
निवारी - दूर करना
निरवाना - बन्धन मुक्त
निदान - इलाज
निरंकन - जो अनुमान में आ सके
(गरीब) निवाजा- दयालु
निरत - स्वासों की गति, कुण्डलिनी
निरालम - बिना किसी सहारे
निरविरत - वृत्ति रहित
निध्यास - व्यवहार के योग्य, अमल करना
निमाना - दीन-हीन, मान रहित
निदा - (आत्मिक) ध्वनि
निजात - छुटकारा
नित - हर समय
निरनय - फैसला
निबनी - बनावटी नम्रता एवं क्षमा
निहथावाँ - जिसका ठिकाना न हो
निव - नीचे झुक कर
निरोल - निर्मल, केवल
निरमायल - निर्मान
निरपख - पक्षपात रहित
निषंक - निस्संदेह, निर्भय
निरमाया - परम पवित्र
निरतन - बिना शरीर (पुरुष)
नियाँ - न्याय
निखुटा - समाप्ति पर
नीवत - नीची (जगह)
नेहचल - स्थिर
नेह - प्रेम
नेहसंग - असंग, संग रहित
नौ निध - नौ प्रकार के भण्डार
निसबासुर - रात-दिन

प

पसारा - विस्तार, फैलाव
पतितपावन - पतितों को पवित्र करने वाला, ईश्वर
परसूँ - पहुँचना, प्राप्त करना
पराजय - आधीन, हार
प्रभता - सर्व श्रेष्ठता, महानता
परवान - सम्पन्न
पछाता - पहचाना
परतीत - विश्वास
परमान - प्रभुत्व, महानता
पच्चीस प्राकृत- पाँच तत्वों (भूत) की पाँच-पाँच प्रकृतियाँ या गुण।
- पवन-दौड़ना, धावना, अकड़ना, सुकड़ना, फैलना
- अग्नि-भूख, प्यास, निद्रा, आलस्य, कान्ति
- जल-खून, वीर्य, थूक, पेशाव, पसीना
- धरती-चाम, मज्जा, नाड़ी, हड्डी, बाल।
- आकाश-शोक, मोह, भय, लज्जा, कीर्ति।

पख - पक्षपात, पक्ष (15 दिन)
परखीना - परखना
पखवाद - पक्षपात
परमाद - आलस्य
परविरत - प्रवृत्ति
परसन - पहुँचना, प्राप्त करना, प्रसन्न

परनाम	-	नमस्कार
परीत	-	अति प्रेम
परगास	-	उजाला, प्रकाश
परसंग	-	प्रसंग, विषय
परहरे	-	दूर करना
परीत्याग	-	त्यागना
परवीन	-	प्रवीण, कुशल
परचे	-	परिचित होना
पखारे	-	पवित्र करना, सूक्ष्म बनाना
परवेसे	-	प्रवेश करना
पतयावे	-	सन्तुष्ट
पन्ध	-	मार्ग
(उदरमाहिं) परीखे	-	पेट में डालना
प्रतिपाला	-	पालनहार
परानी	-	प्राणी, जीव
पलीती	-	अपवित्रता
(हाट) पटन	-	योग की ऊँची अवस्था
परतीजे	-	तृप्ति
पत	-	आत्म सम्मान
पखावज	-	बैजंतर (संगितमई आवाज, यन्त्र)
प्रबोध	-	ज्ञान प्राप्ति
पच-पच	-	भटक-भटक कर
पड़दा	-	पर्दा
परेट	-	परेड
परेरे	-	बहुत दूर
पटम्बर	-	रेशमी कपड़ा
पसरवन	-	प्रसार, फैलाव
पाँच भूत	-	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश
पाँच दोख	-	पाँच दोष (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार)
पारगरामी	-	सर्व व्यापक
पारावार	-	अंत
पावक	-	अग्नि
पासे	-	साथ रहना पाँच पनिहार
	-	पाँच तत्व
पाक	-	पवित्र
पाँच पचीस	-	पाँच तत्व तथा पच्चीस प्रकृतियाँ
पिंगू	-	लंगड़ा
पिण्डज	-	जेरज अर्थात् जेर (गर्भ) से उत्पन्न होने वाले
पुनीत	-	पवित्र
पुरख	-	पुरुष
पुरियाँ	-	नगर
पुगात	-	पूरा करना
पेख	-	देख
पैराएँ	-	चोगा (पहनने वाला)
पेज	-	पाँच

फ

फरमान	-	आदेश
फरश	-	पृथ्वी
फनाह	-	नाशवान, नश्वर
फजल	-	कृपा
फरमूद	-	फरमान, हुक्म
फानी	-	नाशवान
फाही	-	फाँसी

ब

बखशीश	-	उपहार
बन्दगी	-	पूजा
बखान	-	व्याख्यान
बरोले	-	मथना
बराजा	-	बिराजमान होना
बदी	-	बुराई, दुष्टता
बखशनहार	-	माफ करने वाला
बकतर	-	ज्ञान ध्यान का वेष-भूषा
बखशंद	-	क्षमा करने वाला
बल	-	बलिहार जाना

बलोड़ - मथना
बगल - बगुला
बखीली - कंजूसी
बड़वानल - भारी जलन
बटमारी - रास्ते के लुटेरे (राहजन)
बाँछूँ - माँगूँ
बाट - रास्ता
बाल - बचपन
बानी - सदुपदेश
बाद - वाद-विवाद
बासन - शरीर
बासर - दिन
बाझ - बिना
बिसमाद - आश्चर्य-जनक
बिसरामी - विश्राम
बिलास - रमण
बिनसे - नाश होना
बिधाता - विधान बनाने वाला, ईश्वर
बिमल - मल रहित
बिकराल - भयानक
बिख - विष
बिन्दे - अनुभव करना
बिगोचा - असमर्थ
बिन्द - केन्द्र
बिन्ध - वीर्य
बिलम - देरी
बिजिया - नशीली वस्तु
बीजाई - नाम रूपी बीज बोना
बुरज - निशान
बूझ - जानना
बेदीन - ईमान रहित, अधर्मी
बेखुद - बेहोश
बेकालिब - अशरीरी
बेधे - प्राप्त करना
बेहरमती - बेइज्जती
बेपीर - निगुरा
बेथाई - बे ठिकाना
बेहयाई - बेशर्मी
बेगैरत - बेशर्म, निर्लज्ज
बौहड़ - बार-बार
बंकनी - सुषम्ना नाड़ी

भ

भव - संसार
भरमाया - भटका हुआ
भरतारा - पालन पोषण करने वाला
भरवास - भरोसा
भवचर - पृथ्वी पर रहने वाले जीव
भरता - पति-परमात्मा
भगूनी - कर्म फल भोगना
भवेत - हो जाता है
भाल - खोजना, देखना
भाख - जानना
भावी - प्रारब्ध, पूर्व कर्म फल
भाये - अच्छा लगना
भिख्यारी - भीख माँगने वाला
भाने - प्रभु इच्छा
भीत - दीवार
भुलेखा - भ्रमित होना
भूखन - भूषण, जेवर
भूपाल - राजा
भेख - भेष

म

मनूर - प्रकाशवान
महरम - सच्चा मित्र
मच्चल - आकाश
मसीत - मस्जिद
मरदन - मलना
मत कित - कदाचित, संयोग वश
मस - प्रेम रूपी मस्ती
मन्दरोई - मंत्र जानने वाला
मसान - शमशान

मगरूर - घमण्डी, अहंकारी
मनबांछित - मनचाहा
मखमूर - लवनीन होना
21600 मनियाँ-24 घंटों में स्वासों की गिनती
महताब - सूर्य
मलकूत - स्वप्न अवस्था
मसैहरी - मच्छरदानी, प्रभु प्रेम में विकारों से बचने का उपाय
मजाहब - मजहब का बहुवचन, मतान्तर
मण्डन - समर्थन करना
मज्जन - स्नान
मातरा - विवरण
मानी - सर्वशक्तिमान
मारफत - आध्यात्मिक, द्वारा
मानक - मणी
(गत) मित - अस्तित्व
मिथ्या - झूठा
मीर - राजा
मीरास - कमाई पूँजी
मित्त - मित्र
मुकत - मुक्त, बन्धन रहित
मुदगर - यम का दण्ड
मुआ - मरा हुआ
मुसाफ़त - सफर
मुकाए - चुकाए
मुकंदा - आनंदस्वरूप
मुगध - मुग्ध
मुनीश - ऋषि-मुनी
मुकाम - जगह, ठिकाना
मुहिम - अभियान, कठिन कार्य
मुरीद - चेला
मुरशिद - गुरु
मुश्क - कस्तूरी, सुगंधि
मुशक्कत - मेहनत, परिश्रम
मूढ़ी - बार-बार जन्म न पाए
मूल - जड़
मेहर - दया
मोमिन - परहेज़गार, साधक

य

यगाना - अपना
युगत - युक्ति
यखनी - यक्षणी (डायन, चुड़ैल)

र

रखयक - रक्षक
रवाल - (हुक्म) चलाने वाला
रत्ते - रमे हुए
रसना - आनंद
रछपाल - रक्षा करने वाला
रजाई - आज्ञा
रब - ईश्वर, परमेश्वर
रयाजत - अभ्यास, भक्ति
रबाब - सितार, बैजन्तर
रमज - भेद
रफीक - दोस्त, मित्र
रहमत - कृपा
रमीत - धारण करना
रनक - बहुत थोड़ी
(प्रभ) राया - परमेश्वर
रास - पूँजी
राता - लीन
राज़क - रिज़क (रोजी) देने वाला
राँछे - समझे, जाने
रिखी - ऋषि
रिज़क - रोज़ी
रीत - रीति-रिवाज
रीता - सुख दु:ख देने वाला
रीजावे - (दर्शन से) तृप्त कर देवे
रुत - मौसम
रूबानी - खुदाई, ईश्वरीय
रैन - रात

ल

लखना - देखना, लिखना
लवलीना - गर्क होना, प्रेम में लीन होना
लश्कर - फौज
लटापट - अगाध (प्रेम)
लहिए - कीजिए
लाह - लाभ
लावजूद - जिसका वजूद न हो, बिना शरीर वाला
लाहुत - तुरिया अवस्था
लावन - पहनावा
लामकान - मकान रहित
लिब - चित्त से लवनीन होना
लुगधिया - मोहित हो गया
लूझे - जलना
लूने (खेत) - बंजर खेत (संसार)
लेप - लगाव
लोह - तख्ती
लोचे - ढूँढ़ता है
लोए - (सब शरीरों में) एक का प्रकाश
लोड़े - खोजना

व

वडियाई - महानता
वनज - व्यापार
वक्खर - कर्म फल
वरतीजे - बाँटना, वरताना
वत्सल - कृपा करने वाला
वरंच - ब्रह्म
वरन - वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)
वरखे - वर्षा होना
वशेखी - विशेषी
वचित्तर - विचित्र
वन्त - बनाई हुई रचना
वसूरे - झंझट, बखेड़े
वहदत परस्ती- प्रभु परायणता
वरख - वर्ष
वासना - इच्छा
वारापार - असीमित, बेअंत
(घाट) वाध - (घटना) बढ़ना
वापारी - ब्यापारी
वाट - मार्ग
वाली - मालिक
वाचे - वर्णन करना
विखेप - (मन की) चलायमानता
विरध - बार-बार जो नाम जपा जाता है
वितरया - विधि
वियाप - समाया हुआ, व्याप
विरत - वृत्ति (मनोभाव)
वियाधी - शारीरिक रोग (ताप)
विगुन, विगन- दोष
विनास - नाश होना
विसराई - भूली हुई
विसमाद - आश्चर्यजनक
विखाद - विषाद, दुःख
विटाए - परिवर्तन होना
विखे - विषे
विहाए - बीतना
विच - बीच
विसाल - मेल-जोल
विखमी सन्ध - कुण्डलनी
विखया - विषयों की अग्नि
विख - जहर, विष
विछोड़ा - वियोग
विहार - व्योहार
विमल - निर्मल
विखयों - विषयों
विख्यान - व्याख्यान
विखमी - कठिन

विगासे - बहाना (जल का)
वाँग - तरह
वजोग - वियोग
वँजाए - व्यापारी
वेख - देख कर

श

शरह, शरीयत- विधि विधान
शगूनी - शगुन
शमशीर - तलवार
शाहाना - शाही, राजसी
शिखरत - ऊँची से ऊँची
शिंग - शेर

स

सरजनहार - सृष्टि रचयिता, ईश्वर
सकल - सब
सयानफ - चतुराई
सनमुख - सामने, मनमानी करने वाला
सन्ताप - दुःख
समत बुद्धि - समता बुद्धि
सलाहिए - प्रशंसा कीजिए
सम्मत - सद्बुद्धि, अच्छी मति
सखग्य - सर्वज्ञान सम्पन्न
सम्पे - इकट्ठे किए
समेर - पर्वत का नाम (सुमेर), पृथ्वी
सनैया, सनेहया-नाम के साथ प्रेम रखने वाला
सरजीत - अध्यात्म मार्ग में मन को जगाती है (प्रभु की याद)
सजदा - डंडवत प्रणाम
सतंजा - वुजू (नमाज से पहले हाथ वगैरह साफ करने की क्रिया)
सगूनी - शगुन
सवान - स्वान, कुत्ता
सरजे - रचे
सरूर - प्रेम खुमारी
सलीम - कुल होश बुद्धि
सरनी - शरण
सरिश्ट - सृष्टि
सवामी - स्वामी
समरथ्थ - समर्थ, सर्वशक्तिमान
सदाकत - सच्चाई
सरिया - पूरा होना
सरभंग - परमात्मा की प्रशंसा
सद वरखा - सौ वर्ष का
सलल-सल्लल- पानी संग पानी
स्वपज - अति नीच
सबूरी - दृढ़ निश्चय से
सयाना - चतुर, बुद्धिमान
साख - भाव
साक - संबंधी
साहिब - ईश्वर
साट - ध्वनि
सादिक - सच्चा, सत् विश्वासी
सारंग - सर्व रंग ईश्वरीय (वाणी)
सालिक - जिज्ञासु
साखी - साक्षी
साँधा - सन्धि करना
साकत - देह अध्यासी (शारीरिक सुख दुःख में लिप्त)
सिमर - याद करना
सिदक - सच्चाई
सिफत - विशेष गुण
सिख - शिष्य
सिदक सबूरी- सच्चाई, दृढ़ ईश्वर विश्वास
सिमरती - सिमरन, यादाश्त
सील - मधुर स्वभाव
सीस - सिर
सीर - सींचना
सुखथाई - सुख देने वाला
सुकृत - श्रेष्ठ, उत्तम

सुरती - ध्यान (सूक्ष्म), बुद्धि
सुख धाम, - कपाली के अन्दर का स्थान
सुजान - बुद्धिमान
सुत - पुत्र
सुलखनी - अच्छे लक्षण वाली
सुरजन - दैविक गुणों वाला
सुखमन - सुषम्ना नाड़ी
सुन्नत - भाव (त्याग का)
सुथराई - सफाई
सुभाए - समाए, स्वभाव
सुखाल - आसान
सुखोपत - सुषुप्ति अवस्था (गहरी नींद)
सेती - साथ
सेली - बालों की रस्सी
सेमी - शांति
सेतज - पसीने से पैदा होने वाले जीव
सोझी - जानकारी
सोग - शोक, गर्मी
सोहबत - संगत
सोधिया - साधना करके पा लिया
सोहला - ईश्वरीय गुणगान
सोलह कला -

1. एकीकरण-जीवन शक्ति के साथ
2. श्रद्धा-गुरु और शास्त्र में विश्वास
3. प्रसन्न चित्त
4. गतिशीलता (आलस्य और प्रमाद का न होना)
5. ज्ञान प्रकाश (आत्म ज्ञान)
6. नम्रता (बड़ों का आदर)
7. सहनशीलता (पीड़ा को सहन करना)
8. इन्द्रियों का दमन
9. सत् विचार
10. मन पर संयम
11. धर्म का साक्षात स्वरूप
12. तप
13. वीर्य रक्षा
14. सत् पुरुषार्थ
15. लोक सेवा
16. यश

सौरी - अनुभव करना
संचारे - सींचे
संदेशा - संदेश
संसा - संशय
संजोग - संयोग, मेल, भेंट
संथा - सबक
संगड़ी - गूढ़ी
संकटमोचन - संकट से छुड़ाने वाला

ह

हरख - खुशी
हस्ती - हाथी, वजूद
हलाक - मार डालना
हबास - कामनाएं
हकानी - ईश्वरीय
हयाती - सच्चा जीवन
हदीसा - इस्लाम की धार्मिक पुस्तक (हदीस)
हण्डयाई - पहनना
हातिम - हातिमताई (दानी पुरुष)
हाटपटन - दसवें द्वार के अन्दर का स्थान
हिरदे - हृदय
हिकमत - तरकीव
हिरस - लालच, लोभ
हिरख - खुश होना
हीये - हृदय में

हूत	-	परमात्मा
हेत	-	हित
हंग	-	मैं-पना, अहंकार
हंता, हंकार	-	अहंकार

त्र

त्रन, तृन	-	तिनका
त्रैगुन	-	सत, रज, तम
तृश्ना	-	भोगों की प्यास
त्रास	-	डर, भय
त्राहेमान	-	डर मानना